

पल्लवी प्रकाशन

अन्तर्ध्वनि

चयन एवम् सम्पादन



डॉ. उमेश मण्डल

अन्तर्ध्वनि

(जगदीश प्रसाद मण्डलक 15 गोट बीछल कथा)

अन्तर्ध्वनि

सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ANTARDHWANI (अन्तर्ध्वनि)
Fifteen Selected stories of Jagdish Prasad Mandal edited (and with a foreword) by Dr. Umesh Mandal

ISBN : 978-93-93135-37-7
दाम : 230/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2023

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन : डॉ. उमेश मण्डल
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

मनुक्ख आ समाज

मनुक्ख सामाजिक प्राणी छी। समाजमे किछु-ने-किछु होइते रहैत अछि तँए जँ ई कही जे अनेक घटना मनुक्खक बीच आकि मनुक्खक अगल-बगलमे घटित होइत रहैत अछि तँ ओ बेसी नहि होएत, भलहिं हमरालोकनिक नजैर ओइपर जेबो करैए आ नहियोँ जाइए। अपना सभ ईहो जनै छी जे मनुक्खक जीवनमे जेतेक समस्या अछि, जेतेक की जे ई जीवने, खासकऽ बहुजनक जीवन, समस्येसँ घेरल-बेढ़ल अछि। शास्त्र-पुराणसँ लऽ कऽ जेतेक पोथी-पतरा देखै छिऐ ओ समस्येक परिचय ओ निवारणार्थ अछि। अर्थात् बहुतो विसंगति ओ समस्या समाजक बीच अछिए।

समाजमे दू तरहक समस्या अछि, एक अछि प्रकृति प्रदत्त, जेना-भुमकम, बाढ़ि, रौदी आदि-आदि। दोसर अछि मानव निर्मित, जेना- लूट-पाट, चोरी-डकैती, मार-काट, शोषण-दोहन, ठकैती, फुसिऐती, सूदिखोरी, महाजनी, दहेज, कालाबाजारी आदि-आदि..। सभ समस्याकेँ जँ गौर करिकऽ देखब तँ मात्र दू-चारि प्रतिशत समस्या प्राकृतिक देखाएत बाँकी पनचानबे-छिआनबे प्रतिशत मानवे द्वारा मानवक सोझमे आनल समस्याकेँ देखब। खाएर जे देखब आकि देखाएत ओ अपन-अपन नजैरिक काज भेल। समय अपना गतिए सदैव अपन यात्रा-पथपर चलयमान अछि, जेकरा हम-अहाँ नीक जकाँ बुझै छी, तहिना हमरा-अहाँक चारू भाग अनेको क्रिया-कलाप, अनेको घटना होइत रहैए। मुदा ओकरा सहजहि हम-अहाँ नहियोँ देखि/बुझि पबै छी आ बुझितो छीहे।

जहिया देश आजाद भेल तइ दिनक समय आ आइक समयमे बहुत

बदलाउ आएल अछि। से दुनू दिशामे, माने नीक-बेजाए दुनू दिस बदलाउ आएल अछि। नीकसँ नीक सेहो भेल अछि आ नीकसँ अधलो भेले अछि। तहिना अधला बदैल कऽ नीको नहि भेल अछि आ आरो अधला सेहो नहि भेल अछि, ईहो केना मानब। ओइ समयमे माने चारिम-पाँचिम दसकमे संयुक्त परिवारक जे बेवस्था छल, परिवारक प्रति लोकक मनमे जेहेन विश्वास छल तइ-हिसाबे आइ बहुत कमि गेल अछि। स्वभाविक अछि जखन परिवारक प्रति विश्वास कमत तँ ओकर असर समाजोपर पड़बे करत। परिवारे ने समाजक अंग छी। आजुक एहेन परिस्थिति बनि गेल अछि जइमे ने बेटा बाप-माएकेँ मनसँ देखै छैथ आ ने माए-बाप बेटा-पुतोहुकेँ देखैले तैयार छैथ। देखब आसान सेहो नहि रहि गेल अछि। माए-बाप केतौ आ बेटा-पुतोहु केतौ रहि रहला अछि। खाएर.. जे जेतए रहै छैथ, ऐठाम हमरा अपन काजक गप करबाक-कहबाक अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म 1947 इस्वीमे 5 जुलाई-के मधुबनी जिलाक झंझारपुर अनुमण्डलक बेरमा गाममे भेलैन। भारतमे स्वतंत्रताक झण्डा फहराइक समय आबि गेल छल, अंगरेज अपन डेली-खोंगी बान्हि ऐठामसँ विदा होइपर रहए। “मिथिलांचलक बीच झंझारपुर इलाका ओ क्षेत्र छी, जइमे मिथिलाक इतिहास-दर्शन, अखनो झलैक रहल अछि। अखनो पाथरमे फूल, माटि-पानिमे सुगन्ध जीवित अछि। क्षेत्रक गाम-समाजमे दर्जनो जाति, दर्जनो सम्प्रदाय अदौसँ अखन धरि मिलि-जुलि एकठाम बास करैत एला अछि। भूमियोक शक्ति ओहने उर्वर अछि, देशक एक नम्बर श्रेणीक सघन आबादीबला क्षेत्र अछि।..मिथिलांचलक बीच झंझारपुर इलाकाक अप्पन प्रतिष्ठा रहल अछि। जहिना शिक्षाक क्षेत्रमे तहिना आर्थिक क्षेत्रमे सेहो। देशक पैमानामे इलाका पछुआएल नै छल, अगुआएल छल। एक-सँ-एक महान पुरुष पैदा लऽ चुकल छैथ। ई आजादीक लड़ाइमे खून बहौनिहार क्षेत्र छी। झंझारपुर अंगरेजक मुख्य अड्डामे छल। दमन नीति केतौ चलल तँ अहू क्षेत्रमे चलल।”[1]

---

[1] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 08*

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक जीवन जीबाक कला

पहिल भाग

समाज आ समाज लेल राजनीति-

1950 इस्वीमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिता–दल्लू मण्डल–क निधन भऽ गेलैन। ओ कहै छैथ- “पिताक मृत्युक किछुओ नै यादि अछि, सिरिफ गाछीमे जरैत अछिया टा...। जखन तीन बर्खक रही। दू भाँइक भैयारीमे छह बर्खक भैया रहैथ। पिताजी करीब एक मास बीमार रहला। इलाजोक नीक बेवस्था नहि, ताबत दरभंगा अस्पताल नै बनल छेलइ। झाड़-फूकसँ लऽ कऽ जड़ी-बुटीक इलाज समाजमे चलै छल।”[2]

जगदीश प्रसाद मण्डलजी तहिया तीनिये बर्खक रहैथ जहिया हुनक पिताक मृत्यु भेलैन। मुदा लालन-पालनसँ लऽ कऽ पढ़ाइ-लिखाइमे कोनो कमी नहि भेलैन। तेकर कारण मात्र परिवारेटा नहि सामाजिक वातावरण सेहो अछि। मण्डलजी कहै छैथ- “एक तँ अपनो परिवारमे समांग, दोसर गामक कोनो जाति एहेन नहि, जइ जातिसँ पारिवारिक सम्बन्ध नइ छल। तैसंग जातियोक नमहर टोल। गामक चारूकातक गाममे कुटुमैती सेहो छल आ अखनो अछि। ओहो सभ अपनामे समय निर्धारित कऽ अबैत-जाइत रहै छला। कान्ही सेहो नीक बनौलैन। एक-सँ-एक खिस्सकर आ एक-सँ-एक गप केनिहार। तँए दिन-रातिमे कोनो अन्तर नहि। अभाव परिवारमे नहियेँ छल तँए अनुकूल परिस्थिति बनल छल।”[3]

हिन्दी एवं राजनीति शास्त्र विषयसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी

---

[2] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 09-10*

[3] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 10*

एम.ए.क अहर्ता प्राप्त केलाह। ओइ समय परिवारमे दू भाँइ पिसियौत रहै छेलैन। शिक्षा ग्रहण केलाक बाद जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यकेँ अपनौलैन। ओइ समय समाजक हालत बहुत रद्दी छल। खासकऽ जइ गाम-समाजमे मण्डलजीक जन्म भेल छैन। विकासक खिलाफ समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती बेवहार एक-एक बेकतीकेँ जकैड़कऽ पकड़ने छल। स्थिति-परिस्थितिकेँ देखैत जगदीश प्रसाद मण्डलजी समाज सेवामे लागि गेला। "जेतए परिवारमे साधारण शिक्षाक आगमन भेल छेलैन। तैठाम एम.ए. तक पढ़लैन। परिवारे नहि, गामेमे पहिल एम.ए. भेला। ओना, पैछला पीढ़ीमे संस्कृतक माध्यमसँ एक-पर-एक विद्वान बेरमामे भेला मुदा जेनरलमे जगदीश प्रसाद मण्डलेटा रहैथ।"[4]

एम.ए. पास मण्डलजी समाजक प्रति अपन दायित्वकेँ बुझि डेग आगू बढ़ौलैन तँ हिनका सामाजिक विकासमे बहुत-किछु वाधक बुझि पड़लैन। बुझियो केना ने पड़ितैन। आइ ने सामाजिक समस्या गौण पड़ि रहल अछि। मुदा ओइ समय से नहि छल। "बीसम शताब्दीक पाँचम दशक, देशकेँ ऐ रूपेँ आन्दोलित कऽ देलक जे जन-गण अपन घर-परिवारसँ आगू बढ़ि देश लेल अपनाकेँ अर्पित कऽ देलक। जहिना दशकक पूर्वार्द्ध आन्दोलन केलक तहिना एकसंग अनेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओना, आइ धरिक देशक इतिहासमे एकसंग एते खुशी कहियो नै भेल छल जेते भेल। जेना-जेना आजादीक झण्डा फहरबैक दिन लगिचाइत गेल तेना-तेना खुशीमे बढ़ोतरी होइत गेल। अदहा दशक जहिना जगैमे लागल तहिना रंग-रंगक सपना देखैमे सेहो अदहा दशक खुशीसँ बितल। ..समाजक बीच तँ नहि, मुदा देशक राजनीतिकेँ आर्थिक मुद्दा स्पष्ट विभाजित कऽ देने छल। कियो देशक पूर्ण आजादी देखै छला तँ कियो एकरा नेंगरा आजादी बुझै छला। ओना, देशक भीतर रौदी, भुमकम, जाति-साम्प्रदायिक उन्माद एते जोर पकैड़ लेने छल जे भीतर-बाहरक लड़ाइमे राजनीतिक दल ओझराएल रहए।"[5]

---

[4] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 125*

[5] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 08-09*

बेरमा गाममे सेहो जमीन्दार आ आमजनक बीच विरोधक अनेको मुद्दा उठिकऽ ठाढ़ भेल। सामन्ती बेवहारक खिलाफ पुरजोर लड़ाइ उठल। जगदीश प्रसाद मण्डलजी सेहो समाजक प्रति अपन दायित्व-कर्ममे संलग्न भऽ गेला। लगातार 35 वर्ष धरि केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे हिनकर समय बितलैन। जेकरा हम ओहुना बाजि-बुझि सकै छी जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय समाज-सेवामे लगेलैन। किएक तँ ओ जेतेक मोकदमा लड़ला, जेतेक बेर जेल गेला से सभटा सामाजिक मुद्दासँ जुड़ल मोकदमादि छल, बेकतीगत नहि। आ से दत्तचित भऽ कऽ लागल रहला, अर्थात् रूचिपूर्वक। मुदा...।

मुदा ई जे वातावरणोक तँ अपन प्रभाव होइत अछि। तेतबे नहि, जहिना वातावरणक प्रभाव मनुक्खपर पड़ैत अछि तहिना मनुक्खोक प्रभाव की वातावरणपर नहि पड़ैत अछि। पड़बे टा नहि करैत अछि वातावरणक निर्माताक रूपमे सेहो प्रकृतिसँ बीस मनुक्खे अछि।

“1960 इस्वीक पछाइत मधुबनी जिला कम्युनिस्ट पार्टीक मुख्य आन्दोलन ‘कोसी नहर’, ‘नूनथर’, ‘शीशा पानी’ आ ‘बराह क्षेत्रक डैम’पर केन्द्रित भऽ गेल। ओना, आनो मुद्दा रहबे करइ। बटाइदारी जमीनक लड़ाइ जोर पकड़नहि रहए। नहरक पानि आ पनिबिजली जेना कम्युनिस्टे पार्टीक होइ तहिना लोकक धारणा बनि गेल छेलइ। जेकर समाधान भेने मिथिलांचलक उद्धार होइत। खेतीसँ उद्योग धरि बढ़ि जाइत, से नै भेल। जेते विरोधी (कम्युनिस्ट विरोधी) तागत छल रंग-रंगक आन्दोलन, षड्यंत्र कऽ योजनाकेँ अखन धरि सफल नै हुअ देलक। पार्टियोक राजनीतिमे ठहराव आबि गेल। एतबे नहि, जेकरा सभकेँ बटाइ-जमीन भेल ओहो सभ ओकरा (ओइ खेतकेँ) भरना लगा पंजाब-दिल्ली जाए लगल। परिणाम ओहन आबए लगलैन जे की केलाह तँ किछु नहि। सिरिफ जिलेक राजनीति नहि। गामोमे सएह भेलैन।”[6]

“जगदीश प्रसाद मण्डलजीक मनमे उठलैन जे हजारो बर्खक गाछ किछु-ने-किछु अपनामे नवीनता अनिते रहैए। चाहे नव टुसा हउ आकि नव

[6] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 130*

मुड़ी आकि नव पात आकि नव कलश। विचार तँ उठलैन मुदा मनमे दुनू केस तँ रहबे करैन। जाइ-अबैक परेशानी नहि, केसक सजाए केर परेशानी। दुनू सेशन केस। दू-दिना-चारि-दिना तँ छी नहि जे बुझथिन पहुनाइ करए जहल गेल छला। सालक-साल दस साल, बारह साल। दुनू मिला बीस सालसँ बेसी। तैबीच की कएल जाए।"[7] जाधैर केससँ छुटकारा नै पाबि लेता ताधैर दोसर दिस बढ़ब नीक नै बुझैथ।

"केसक छुटकाराक पछाइत करबे की करितैथ। गुजर लेल खेती करिते छला। नोकरी दिस कहियो मनसँ तकबे ने केलाह, वेपार कएले ने हेतैन। मुदा जिनगियो तँ छोट नहियेँ अछि। कठही साइकिल (काठक पाइडिल लगौल साइकिल) तँ जिनगी छी नहि जे थालो-कादो आकि रस्ताक कटारियोमे कन्हापर उठा लेता आ टपि जेता। जिनगीक गाड़ी छी। एक पटरीपर सँ दोसर पटरीपर आनब। एकर अर्थ ई नहि जे जैठाम पाहि कटैक जोगार छै तैठाम गाड़ीकेँ लऽ जा कऽ दोसर पटरीपर चढ़ा दियौ। दोसर पटरीपर आनैक अर्थ ई जे छोटी लाइन (मीटर गेज लाइन) सँ बड़ी लाइनपर चढ़ेबाक अछि। ओकर आँट-पेट छोट छै मुदा किछु पार्ट- धुरी-चक्का बदलने तँ डिब्बा आ आनो-आनो वस्तु उपयोगी बनि जाइ छइ। प्रश्न एतबे नै अछि, ऐसँ आगूओ अछि। ओ ई अछि जे अदौसँ अबैत ई जिनगीक गाड़ी छी। जेतेक रंगक पटरी तेतेक रंगक पटरीक गति। तैठाम गाड़ीकेँ दोसर पटरीपर लऽ जाएब, असान नहि।"[8]

दोसर भाग

समाज आ समाज लेल साहित्य-

साहित्यो जगतक जे दशा-दिशा अछि ओ छपित नहियेँ अछि। तहूमे लाठी सबहक हाथ पड़ल अछि। कोनो वस्तु मंगलापर नै दऽ छिपा लेब, लाथ कहबैत अछि। मैथिली साहित्य जगत समाजसँ एते दूर हटि गेल

---

[7] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 130*

[8] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 131*

अछि जे जोड़ब असान नै अछि। ओना, ई सिरिफ मैथिलीए-मे नहि, आनो-आन साहित्यमे भरपूर अछिए। जेना- कबीर दासक चर्चा मैथिली साहित्यमे कम अछि मुदा कबीर दासक जे जिनगीक (जीवन पद्धति) इतिहास प्रस्तुत कएल गेल अछि ओ विवेकपूर्ण जकाँ नै अछि। विवेकपूर्ण नै हेबाक कारणे कबीर दर्शन समाजसँ हटि गेल अछि। जेहो सभ दर्शनक प्रचार-प्रसार कऽ रहल छैथ, ओहो सभ या तँ अपनो गुमराहे छैथ, नहि तँ लाथी छैथ, जे गुमराह केने छैथ।

तहिना तुलसी दास 'गोस्वामी' कहबै छैथ, मुदा केतेक गाए पोसने छला? जरूरत अछि युगानुसार साहित्यक निर्माण करब। ..तहिना जाधैर मैथिलियो साहित्य समाजक वस्तु (समाजक साहित्य) नै बनत ताधैर के केकरा की कहै छिऐ से भाँज थोड़े लगत। तँए शुभेक्षु साहित्यकारक दायित्व बनैए जे एक आँखि समाजपर रखि दोसर आँखि जखन कागत-कलमपर रखता तखन मैथिली साहित्ये नहि मिथिलाक कल्याण हएत। राज्यक अर्थ जौं राजधानीक एकटा कार्यालयसँ लइ छी तँए मिथिलाक समाज छुटि जाइए। मिथिलाक सामाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त तखने सर्वांगीन विकास हएत।"[9]

"जगदीश प्रसाद मण्डल लेल 1999 ई. अबैत-अबैत आशा-निराशाक बीच संक्रमणक स्थिति बनए लगलैन। 1998 ई.मे दफा 307क केसमे सजाए भऽ गेल रहैन। हाइ कोर्टमे अपील होइमे 20-25 दिन लागि गेलैन। तइ समयमे रामपट्टी जेलमे रहैथ। मने-मन आश्चर्य होनि जे बिना किछु केनौं जहलमे छैथ। तहियो आ अखनो मन नै मानि रहल छेलैन जे कोनो गलती हुनकासँ भेल हुअए। खाएर, अपील भेल, जमानत भेलैन। दिनांक 5-5-2005 इस्वी-केँ ओहो समाप्त भऽ गेलैन।"[10]

जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ नव काल्हि देखैक इच्छा शुरूहेसँ रहलैन। से ओहिना नहि, केलाक (क्रिया) पछाति आरो मजगूत भेलैन। ओना,

[9] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 131*

[10] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 128*

हिनकर अपन जीवनक अधिकांश समय, 2000 इस्वी धरि, केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत भेलैन।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल 2000 इस्वीक पछाइत लेखन क्षेत्रमे एला। दू-तीन वर्ष अभ्यासोमे लागल हेतैन। प्राय: 2003 इस्वीक पछाइत हुनक लेखनी चलए लगलैन। जे कि आइ धरि निरन्तर चलि रहलैन अछि। केहेन निरन्तरता से हुनक रचना-संसारकेँ देखि बुझल जा सकैए। 2021 इस्वीमे हुनका 'पंगु' उपन्यास लेल साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार देल गेलैन अछि। जखन कि हुनक शताधिक पोथी प्रकाशित भऽ चुकल छेलैन। हम ई नहि कहै छी जे साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल साएसँ अधिक पोथी केर रचना करए पड़ैत अछि। जँ से रहैत तखन 24 भाषामे जे एक-एक रचनाकारकेँ देल जाइए, सबहक संग ओहिना होइत। वर्ष 2021क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेलैन जँ ओइ सूचीकेँ देखब ओहनो रचनाकारकेँ देखबे करबैन जनिक मात्र पाँच गोट पोथी प्रकाशित छैन। गणनाक हिसाबे बहुसंख्य रचनाकारक कृति एक-आध-दू दर्जनक मध्य छैन। असमियामे श्रीमती अनुराधा शर्मा पुजारीक 26 गोट पोथी छैन, नेपालीमे श्री छविलाल उपाध्यायक 30 गोट कृति छैन, कन्नड़मे श्री डि.एस. नागभूषणक 40, मलयालममे श्री जॉर्ज केर 49 कृति प्रकाशित छैन आ मैथिलीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक शताधिक पोथी प्रकाशित छैन।

सबहक रचना-संसारकेँ जँ निरन्तरताक खियालसँ देखब तँ श्री मण्डलजीक लेखनीक निरन्तरता सभसँ फराक ओ श्रेष्ठ बुझना जाएत। हिनक पहिल रचना औपन्यासिक कृति 'मौलाइल गाछक फूल' छिऐन जे 2004 ईस्वीमे लिखला। 2008 इस्वी धरिक अवधिमे पाँच गोट उपन्यास, एक नाटक तथा किछु कथादि लिखि चुकल छला। मुदा कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे एक्को गोट रचना प्रकाशित नहि भेल रहैन। तथापि हिनक कलम, लिखबाक क्रम जारी रहलैन- प्रस्तुत अछि ऐ प्रसंगमे हुनकहि लिखल बात- "मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा,

नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैंटक लावा' कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी।"[11] 8 नवम्बर 2008 इस्वीमे 'सगर राति दीप जरय'क 64म कथागोष्ठी डॉ. अशोक अविचलक संयोजकत्वमे हुनक गाम- रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे आयोजित भेल छल जइमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी उपस्थित भऽ अपन पहिल रचना 'भैंटक लावा' कथा केर पाठ केलैन। साहित्य क्षेत्रमे मण्डलजीक ओ पहिल मञ्च छेलैन। ओना, साहित्य लेखन क्षेत्रमे अबैसँ पूर्व माने 2000 इस्वीसँ मण्डलजीक क्रिया-कलाप एक समर्पित समाजसेवीक रहल छैन। तँए ओ केतेको बेर राजनीतिक मञ्चपर बाजि चुकल छला। पहिने बेरमा पंचायत आ रहुआ संग्राम, दुनू मधेपुर ब्लौकक अन्तर्गत पड़ै छल। जे कि जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कर्म क्षेत्र रहल छैन। तँए, रहुआ गाममे सेहो मञ्च साझा कऽ चुकल छला।

2008 इस्वीसँ पूर्व जगदीश प्रसाद मण्डलजीक एक्को गोट रचना सार्वजनिक नहि भेल छेलैन। कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित नहि भेल छेलैन। पहिल रचना 'घर बाहर- पटना'सँ प्रकाशित भेलैन। जइ कथाक पाठ रहुआ संग्राममे केने छला, खूब प्रशंसा भेल छेलैन। ऐ प्रसंगमे मण्डलजीक वानगी निम्नांकित अछि-

"डॉ. रामानन्द झा 'रमण'जी ओ कथा मांगि लेलैन। किछुए मासक उपरान्त 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलैन। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा भेटल। डायरी-कलम भेटल। गमछा-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक मुर्ति सेहो भेटल।"[12]

घर-बाहरमे एक आर रचना (कथा) प्रकाशित भेलैन। पछाइत 'मिथिला दर्शन- कोलकाता'मे 'चुनवाली' नामक कथा प्रकाशित भेलैन। चुनवाली, भैंटक लावा आ बिसाँढ़, कथा प्रकाशित होइते 'विदेह'क सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजीसँ सम्पर्क भेलैन। तेकर बाद मण्डलजीक रचना सभ पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित हुअ लगलैन।

---

[11] *मौलाइल गाछक फूल, उपन्यास, जगदीश प्रसाद मण्डल, आमुख पृ.- 09*

[12] *मौलाइल गाछक फूल, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 10*

ऐ तरहेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आगमन मैथिली साहित्यक दुनियाँमे होइ छैन। बिनु पाइक अर्थात् बिनु खर्चेक पोथी प्रकाशन मैथिली साहित्यमे नव उदाहरण छल। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 27 गोट पोथी एकसंग श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेलैन। वर्तमानमे ओही तरहेँ पोथीसभक प्रकाशन पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ भऽ रहलैन अछि।

गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक सभ विधामे, हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन।

गाम-समाज आ समाजक लोकसँ जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ अटूट सिनेह रहलैन अछि। विदेह ई पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर कहै छैथ- "समाजक सभ वर्ग हिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रूपमे नहि, वरन अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर एबाक समान अछि। हिनकर कथ्यमे केतौ अभाव-भाषण नै भेटत, सभ वर्गक लोकक जीवन शैलीक प्रति जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे रखै छैथ से अद्भुत। हिनकर कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरूद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमा मण्डित भेटैत अछि। आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर बेकतीगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ। यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिके क्षेत्रटा मे नहि वरन आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत।"

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिली साहित्यक प्राय: सभ विधामे रचना केनिहार ओहन रचनाकार छैथ जनिक लेखन अनवरत ओ अवाध गतिये चलि रहल छैन। जहिना पद्य विधामे गीत, कविता तहिना गद्यमे एकांकी, नाटक, कथा, उपन्यास, कथामे बीहैन, लघु आ दीर्घ- तीनू, तैसंग प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचनामे सेहो हिनक लेखनी चलैत रहलैन अछि। कथा आ उपन्यासमे तँ नियमित चलि रहलैन हेन। मण्डलजीक नियमितता, माने नित्य-नियमित साहित्य लेखन, एहेन छैन जे साहित्य-रचनाकारक बीच कएगोट मान्यतासभ पर बरबरि प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत रहल अछि।

मण्डलजी 2000 इस्वीक पछाइतसँ साहित्य लेखन आरम्भ केलाह। तइसँ पूर्व किसानी जीवनक बीच रहि समाज सेवामे संलग्न छला, ओ कहै छैथ- "जहिया एम.ए.क विद्यार्थी रही तहिए नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक बिसवास भऽ गेल। पैंतीस साल धरि समाज सेवा केलाक पछाइत अपन हहरैत शरीर देखि किछु लिखै-पढ़ैक विचार जगल।"[13]

2013 इस्वीक अन्तिम मास वा कहि तँ 2014 इस्वीसँ अद्यपर्यन्त, मण्डलजी जे कोनो रचना केलैन आकि कऽ रहला अछि, तइ सभ रचनाक संग रचना-तिथि सेहो सार्वजनिक करैत रहला। रचना करबाक सन्दर्भमे एक मान्यता अछि जे कोनहुँ रचनाक बिम्ब रचनाकारक मनमे कखनो-कखनो आ कहियो-कहियो अबैत छैक। माने अनायास अबै छइ। अत: ओ नियमित ओ निर्धारित समयक कार्य नहि थिक। मुदा मण्डलजी द्वारा नियमित लेखनसँ ई मान्यता कमजोर बुझना जाइत अछि। नियमित लेखनसँ सद्य: ओहन मान्यतापर प्रश्नचिह्न लगैत अछि। हँ, एहेन मान्यता बेकतीगत भऽ सकैत अछि जे 'विषय-बिम्ब कखनो-कखनो आ कहियो काल अबैत छैक'।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक निरन्तर लेखनसँ आरो-आर मान्यता सभ स्वत: निरस्त भेल जा रहल अछि। मनुक्खक जीवनमे होइत

---

[13] *मौलाइल गाछक फूल, उपन्यास, जगदीश प्रसाद मण्डल, आमुख पृ.- 09*

निरन्तर-परिवर्तनकेँ अनुभवी जकाँ मण्डलजी अपना रचनामे रेखाङ्कित करै छैथ। 'जेतए न जाए रवि ओतए जाए कवि' हम एतबए सुनैत रही, मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल कहै छैथ- 'जेतए नइ जाए रवि ओतए जाए कवि आ जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी'।

मण्डलजीक रचनामे सदैव नीक-बेजाकेँ बिलगेबाक सुन्दर प्रयास देखबामे अबैत अछि। हिनक प्रत्येक रचनामे खास गुण छैन जे पाठक सहजतासँ बन्हा जाइ छैथ। बेकतीगत जीवनक बीच नीक-बेजाक दर्शन करबैत सहजतासँ पाठककेँ ओइठाम लऽ कऽ चलि जाइ छैथ जैठाम मनुक्ख रहैत तँ अछि सदिखन मुदा अनभिज्ञ जकाँ। अपन लगक चीजकेँ नहि देखि पबैत अछि। समाजक बीच एहेन बहुत बेवहार अछि जे रूढ़ रहितो नीक जकाँ चलि रहल अछि। जेकर परिचय ओ दर्शन अपन रचनामे मण्डलजी नीक जकाँ करबैत रहल छैथ। मण्डलजी कोनो चीजक दशा-दिशाक परिचयक संग ओकर कारण तथा समय-सापेक्ष निदान-परिष्कार सेहो करेबाक कोशिशमे लागल रहै छैथ। ई हिनक खास गुण छिऐन। कोनहुँ मनुक्खक परिचय ओकर लगन, धैर्य, साहस तथा विश्वाससँ होइत अछि। विश्वास एहेन चीज छी, जेकर वास्तविक रूप कोनो बेकतीक कार्यक नियमिततामे देखार होइत अछि, नियमितताक अपन छवि होइ छइ। तइ नजैरिये जँ देखब तँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अप्पन छवि छैन। जे हिनक परिचय भेल। ई अपन सतत क्रियाशीलता ओ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ

द्वारा- ‘वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’ सम्मान- 2016’, रचना धर्मिताक क्षेत्रमे अमूल्य योगदान हेतु ज्योत्स्ना-मण्डल द्वारा- ‘कौमुदी सम्मान- 2017’, मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा ‘स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान- 2018’, चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध ‘यात्री चेतना पुरस्कार- 2020’, मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा ‘राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020’, भारत सरकार द्वारा ‘साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021’, साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मञ्च द्वारा ‘अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022’, मिथिलांचल विकास परिषद्, लहेरियासराय, दरभंगा द्वारा ‘यात्री सम्मान- 2022’ तथा साहित्य, संस्कृति, सामाजिक आ मिथिलांचलक सर्वांगीण विकासक क्षेत्रमे उल्लेखनीय योगदान हेतु ‘शिखर सम्मान- 2022’

ऐ तरहेँ श्री मण्डलजीक रचना संसारपर सेहो दृष्टिपात कएल जाए जे प्रकाशित छैन-

1. गामक जिनगी : (कथा संग्रह- 2009), 2. मौलाइल गाछक फूल : (उपन्यास- 2009), 3. उत्थान-पतन : (उपन्यास- 2009), 4. जिनगीक जीत : (उपन्यास- 2009), 5. मिथिलाक बेटी : (नाटक- 2009)

6. तरेगन : (प्रेरक कथा संकलन- 2010), 7. जीवन-मरण : (उपन्यास- 2010), 8. जीवन संघर्ष : (उपन्यास- 2010)

9. बजन्ता-बुझन्ता : (बीहैन कथा संग्रह- 2013), 10. शंभुदास : (दीर्घ कथा संग्रह- 2013), 11. उलबा चाउर : (कथा संग्रह- 2013), 12. अर्द्धांगिनी : (कथा संग्रह- 2013), 13. सतभैंया पोखैर : (कथा संग्रह- 2013), 14. भकमोड़ : (कथा संग्रह- 2013), 15. नै धाड़ैए : (उपन्यास- 2013), 16. बड़की बहिन : (उपन्यास- 2013), 17. इन्द्रधनुषी अकास : (काव्य संग्रह- 2013), 18. तीन जेठ एगारहम माघ :

(गीत संग्रह- 2013), 19. राति-दिन : (काव्य संग्रह- 2013), 20. सरिता : (काव्य संग्रह- 2013), 21. गीतांजलि : (काव्य संग्रह- 2013), 22. सुखाएल पोखरिक जाइठ : (काव्य संग्रह- 2013), 23. कम्प्रोमाइज : (नाटक- 2013), 24. झमेलिया बिआह : (नाटक- 2013), 25. रत्नाकर डकैत : (नाटक- 2013), 26. स्वयंवर : (नाटक- 2013), 27. पंचवटी : (एकांकी संचयन, 2013)

28. गढ़ैनगर हाथ (बीहैन कथा संग्रह- 2014), 29. गामक शकल-सूरत : (कथा संग्रह- 2014), 30. लजबिजी : (कथा संग्रह- 2014), 31. समरथाइक भूत : (कथा संग्रह- 2014), 32. अप्पन-बीरान : (कथा संग्रह- 2014), 33. बाल गोपाल : (कथा संग्रह- 2014), 34. रटनी खढ़ : (दीर्घ कथा संग्रह- 2014), 35. पतझाड़ : (कथा संग्रह- 2014), 36. गढ़ैनगर हाथ : (कथा संग्रह- 2014), 37. अपन मन अपन धन : (कथा संग्रह- 2015)

38. उकड़ू समय : (कथा संग्रह- 2015), 39. मधुमाछी : (कथा संग्रह- 2015), 40. पसेनाक धरम : (कथा संग्रह- 2015), 41. गुड़ा-खुद्दीक रोटी : (कथा संग्रह- 2015), 42. फलहार : (कथा संग्रह- 2015), 43. खसैत गाछ : (कथा संग्रह- 2015), 44. ठूठ गाछ : (उपन्यास- 2015), 45. कल्याणी : (एकांकी, 2015), 46. सतमाए : (एकांकी, 2015), 47. समझौता : (एकांकी, 2015), 48. तामक तमघैल : (एकांकी, 2015), 49. बीरांगना : (एकांकी, 2015)

50. एगच्छा आमक गाछ : (कथा संग्रह- 2016), 51. शुभचिन्तक : (कथा संग्रह- 2016), 52. गाछपर सँ खसला : (कथा संग्रह- 2016), 53. डभियाएल गाम : (कथा संग्रह- 2016), 54. गुलेती दास : (कथा संग्रह- 2016), 55. मुड़ियाएल घर : (कथा संग्रह- 2016)

56. बीरांगना : (कथा संग्रह- 2017), 57. स्मृति शेष : (कथा संग्रह- 2017), 58. बेटीक पैरुख : (कथा संग्रह- 2017), 59. क्रान्तियोग : (कथा संग्रह- 2017), 60. त्रिकालदर्शी : (कथा संग्रह-

2017), 61. पैंतीस साल पछुआ गेलौं : (कथा संग्रह- 2017), 62. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं : (उपन्यास- 2017)

63. दोहरी हाक : (कथा संग्रह- 2018), 64. सुभिमानी जिनगी : (कथा संग्रह- 2018), 65. देखल दिन : (कथा संग्रह- 2018), 66. गपक पियाहुल लोक : (कथा संग्रह- 2018), 67. दिवालीक दीप : (कथा संग्रह- 2018), 68. अप्पन गाम : (कथा संग्रह- 2018), 69. लहसन : (उपन्यास- 2018), 70. पंगु : (उपन्यास- 2018), 71. आमक गाछी : (उपन्यास- 2018), 72. सतबेध : (गीत संग्रह 2018)

73. खिलतोड़ भूमि : (कथा संग्रह- 2019), 74. चितवनक शिकार : (कथा संग्रह- 2019), 75. चौरस खेतक चौरस उपज : (कथा संग्रह- 2019), 76. समयसँ पहिने चेत किसान : (कथा संग्रह- 2019), 77. भौक : (कथा संग्रह- 2019), 78. गामक आशा टुटि गेल : (कथा संग्रह- 2019), 79. पसेनाक मोल : (कथा संग्रह- 2019), 80. चुनौती : (पद्य संग्रह- 2019), 81. रहसा चौरी : (गीत संग्रह 2019)

82. कृषियोग : (कथा संग्रह- 2020), 83. हारल चेहरा जीतल रूप : (कथा संग्रह- 2020), 84. रहै जोकर परिवार : (कथा संग्रह- 2020), 85. कामधेनु : (गीत संग्रह- 2020), 86. मन मथन : (गीत संग्रह- 2020), 87. अकास गंगा : (गीत संग्रह- 2020), 88. सुचिता : (उपन्यास- 2020), 89. कर्ताक रंग कर्मक संग : (कथा संग्रह- 2020), 90. गामक सूरत बदैल गेल : (कथा संग्रह- 2020), 91. अन्तिम परीक्षा : (कथा संग्रह- 2020), 92. घरक खर्च : (कथा संग्रह- 2020)

93. मोड़पर : (उपन्यास- 2021), 94. संकल्प : (उपन्यास- 2021), 95. अन्तिम क्षण : (उपन्यास- 2021), 96. नीक ठकान ठकेलौं : (कथा संग्रह- 2021), 97. कुण्ठा : (उपन्यास- 2021), 98. पयस्विनी : (निबन्ध-प्रबन्ध, 2021), 99. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (कथा संग्रह- 2021), 100. संचरण : (कथा संग्रह- 2022), 101. भरि मन काज : (कथा संग्रह- 2022), 102. आएल आशा चलि गेल : (कथा संग्रह-

2022), 103. जीवन दान : (कथा संग्रह- 2022), 104. अप्पन साती : (कथा संग्रह- 2022), 105. साहित्यकारक विवेक : (कथा संग्रह- 2022), 106. नब बनक नब फल : (कथा संग्रह- 2022), 107. सुनयना बेटी : (उपन्यास- 2023), 108. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल : (कथा संग्रह- 2023)

आब आउ 'अन्तर्ध्वनि' पर-

प्रस्तुत पोथी श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कथा-संसारसँ पनरह गोट कथाक संचयन छी। मण्डलजीक विशाल कथाकोषकेँ पढ़ब आ तखन हुनका चिन्हब-जानब थोड़ेक भीहगड़ अछिए तँए हम आदरणीय पाठक वृन्द लेल माने अपने सभ लेल, मण्डलजीक पनरह गोट ओहन कथा जमा केलौं अछि जेकरा पढ़ि हुनक नजैरकेँ बहुत हदतक परेख पाबी। ओ पनरहो कथा सभक शीर्षक अछि- 1. काजक मेहपन, 2. स्वरोजगार, 3. कनियाँ-पुतरा, 4. वारन्ट, 5. दुष्टपन, 6. केकरो कियो ने, 7. हुसि गेलौं, 8. केलवारी, 9. सिकिया नेता, 10. अगुताइ भेल, 11. अर्जुन रोग, 12. भौक, 13. सिरमा, 14. बुलन्दी, 15. अन्तिम आशा

'काजक मेहपन'

ई कथा 2019 इस्वीमे प्रकाशित- 'समयसँ पहिने चेत किसान' पोथीमे 8म स्थानपर अछि। मण्डलजी ऐ कथाकेँ लेखन तिथि अछि- 27-05-2019

विक्रम बाबा मौसमी फलक किसान छैथ। रंग-बिरंगक फल-फलहरी उपजबै छैथ। अपन अधिकतर समय फसिलकेँ देखै-सुनै आ गुणैमे बितबै छैथ। मेहीपनसँ फसलक तकतान कए ओकर भविष्य ओ वर्तमानक निर्णय करै छैथ। मुदा घरक कनियाँ-बहुरिया लेल ओ ओतेक महत्वपूर्ण नहि छैथ, माने हिनक कार्य ओतेक महत्व नहि रखै छैन। ओना,

जँ गौर करि कऽ देखब तँ ईहो साफ देखबामे एबे करत जे किसानकेँ लोक छोट नजैरिये देखैए। माने वातावरणे ओहन बनि रहल अछि वा बनि गेल अछि। खाएर..।

विक्रम बाबाक स्पष्ट सोच छैन। दुनियाँकेँ जानब अधला विचार नहि, मुदा ईहो तँ प्रश्न अछिए जे एते विशाल दुनियाँ आ ओइ दुनियाँक विशालतम जीवनक बीच जखन छी तखन जेते सम्भव हएत तेतबेक ने अपन सीमा बनाएब। जँ से नहि करब तँ जहिना रामकेँ लंका जाइकाल पुल बनबैक खगता भेलैन जेकरा बनबैले नल-नील सन कारीगर भेटलैन, जिनका–माने नल-नीलकेँ–पानिमे पाथर अलगबैक लूरि तँ छल मुदा टुकड़ा-टुकड़ी पाथर एकबट्ट केना बनत से लूरिये ने रहइ, तहिना ने अपनो हएत..! विक्रम बाबा अपन बरसाती मौसमक फलबगानमे फलक गाछकेँ निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि मेहपनिया नजैरसँ देखि रहल छला। मेहपन कहियौ कि मेहपनिया, माने भेल ओकर मेही-सँ-मेही रूपमे मेहिया कऽ ओकर बारीकपनकेँ बुझब।

जहिना मनुक्खक जिनगीमे अतीत-वर्त्तमान आ भविस चक्कर लगबैत चलैए आ ओही बीच बच्चाकेँ देखि अपन बालपनो आ वृद्धकेँ देखि अपन वृद्धपनो लोक बुझै-गमैए तहिना विक्रम बाबा, गरमी मासक मौसमी फलक वर्त्तमानकेँ देखि रहल छला आ जाड़क मौसमक फलक भविस दिस सेहो तकै छला। 'अनजान सुनजान महा कल्याण', जहिना कहल जाइए तहिना मौसमो आ मौसमक फलो-फूल आ अनो-पानिक लीला अछिए। जहिना कोनो अने वा फले-फूल अपनाकेँ समेट अपन उदय-प्रलय मौसमे अनुकूल निमाहैत चलैए तहिना ने...।

मुदा घरक स्त्रीगण विक्रम बाबाकेँ मतिभ्रम मानै छथिन। ऐ सभसँ विक्रम बाबाकेँ एकोरत्ती क्षोभ नहि छैन, ओ निर्विकार भावसँ अपन कर्ममे निरन्तर लागल रहै छैथ।

'स्वरोजगार'

कथामे रविशंकर स्नातक अन्तिम बर्खक विद्यार्थी अछि जे अपन परीक्षा छोड़ि घर चलि अबैत अछि। किए चलि अबैत अछि? यएह ऐ

कथाक विषय छी। कथाकार बेस सचेत भऽ कऽ ऐ कथाकेँ गढ़लैन अछि। रविशंकरक अलाबे ऐ कथामे 'भागेसर', 'राधा' आ 'चेतानन्द' सेहो पात्रक रूपमे आएल छैथ।

प्रजातांत्रिक शासन पद्धतिक अनुकूल शासन व्यवस्था नहि भेने जे सार्वजनिक संस्थासभमे विकृतिपन आबि जाइए जइसँ ओकर कार्यप्रणाली प्रभावित हुअ लगैए। भेल तहिना छल। रविशंकर जइ युनिवर्सिटीमे पढ़ै छल ओकरहु कार्यप्रणालीमे जे विकृतता आबि गेल, ओइ विकृतिसँ क्षुब्ध भऽ स्नातक अन्तिम बर्खमे रहितो रविशंकर अपन परीक्षा छोड़ि दैत अछि आ घर एबाक लेल चलि दैत अछि। मनमे अनेको प्रश्न उठि जाइ छइ। जइमे महत्वपूर्ण प्रश्न अछि भक्ति कालक विकास प्रक्रियासँ सम्बन्धित। अर्थात् भक्तिकालक (साहित्यक भक्तिकाल)क विकास प्रक्रियाक अनुसार रीतिकाल अर्थात् श्रृंगारकाल आरो नीक हेबाक चाही छल से नहि भऽ ठीक विपरीत दिशामे परिवर्तित भऽ गेल।

प्रस्तुत अछि रविशंकरक मनोविश्लेषण, कथाकारक शब्दमे यथावत-

"विश्वविद्यालय स्तरक कार्यक्रम भेल, बेकती-विशेषक नै छल, तखन किए ने बुझलौं? ..ने प्रश्नक जड़ि भेटै आ ने विचार आगू बढ़इ। मुदा तैयो बाढ़िक पलाड़ी जकाँ बहबे करइ। मन बहकलै, इन्दिरा अवासक जेकरे पक्का घर रहै छै हथियाक झटकीमे खसल घरक अनुदानो तेकरे भेटै छइ। सएह ने तँ भेल। की अहिना भोजे-भातक शिक्षण संस्थान बनल रहत? धू:! अनेरे मनकेँ बौअबै छी। ठीके लोक बताह कहैए! एहने-एहने बतहपनी सोचने ने लोक बताह होइए! अनेरे हमरे किए एते सोग अछि। 'जानए जअ आ जानए जत्ता।' लसिगर होइ आकि खढ़हर से ओ जानए। हमहीं की बजितौं जे अनेरे माथ धुनै छी। बड़ बजितौं तँ यएह ने बजितौं जे साहित्य जगतमे मध्यकालीन युग स्वर्णिम रहल। भक्तिमय साहित्यक सृजन एते कहियो ने भेल, मुदा भक्ति साहित्यक पछाइत वैराग्य अबैत आकि श्रृंगार? एबाक चाहै छल 'वैराग्य' से नइ आबि 'श्रृंगार' आबि गेल!

समैयो मुगले शासनक छल। विश्वविद्यालय सर्वोच्च शिक्षण संस्थान छी। जे मिथिलांचल ऋृषि-मुनिक बास स्थल अदौसँ रहल आकि ओतबे गनल-गूथल छैथ जेतेकेँ दोरिका छाप भेट गेलैन! विश्वविद्यालयक दायित्व बनैत अछि जे जिनकर रचना दिवारमे सड़ि गेलैन, पानिक चुबाटमे गलि गेलैन ओहनो-ओहनो रचनाकारक खोज हुअए।"[14]

'कनियाँ-पुतरा'

'कनियाँ-पुतरा' कथा 2013 इस्वीमे लिखल गेल अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अपन ऐ कथाकेँ 'भकमोड़' पोथीमे सातम स्थानपर संग्रहित केने छैथ। 'भकमोड़'क पहिल संस्करण 2013 ई.मे श्रुति प्रकाशन, नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल अछि।

'कनियाँ-पुतरा' कथाक माध्यमसँ कथाकार मुहेँ-मुँह बजैबला ओहन बातकेँ रेखाङ्कित केलैन अछि जेकरा बजैत-बजैत लोक धीरे-धीरे सही मानए लगैत अछि। आ पछाति मानि चलैनमे सेहो आनि लैत अछि। भलेँ ओ व्यवहारिक रूपमे गलतीए किए ने अछि। मुदा ओही चलैनकेँ जखन व्यवहारिक तौरपर लोक परीक्षण करैए तखन ओकर सत्यता स्वत: लोकक बीच आबिये जाइए। ओहने परम्परासँ अबैत विचारकेँ कथाकार प्रस्तुत कथामे रेखाङ्कित केलैन अछि।

अपना ऐठामक लोकक बीच एहेन चलैन आबि रहल अछि, माने मान्यता अछि जे जौंआँ सन्तानमे जँ बेटा-बेटी दुनू संगे हुअए तँ पहिने बेटाक जन्म होइए पछाइत बेटीक। मुदा प्रस्तुत कथामे घटना ई अछि जे पहिने बेटीक जन्म भेल पछाइत बेटाक भेल।

'वारन्ट'

वारन्ट कथामे दू गोट पात्र अछि- पहिल, हरिहर काका आ दोसर, कलक्टर साहैब। कथाक भाव-भूमि अनुपम अछि। मनुक्खक क्रियागत

[14] *भकमोड़, जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या- 62-63*

जीवन आ वैचारिक जीवन ऐ कथाक मूल भूमि छी। मनुक्खक जीवनमे बदलाव अबैत रहैत अछि। बदलावक प्रक्रिया सदैत चलायमान अछिए। जखन कोनहुँ मनुक्खक जीवनमे काजक रूप बदलैत अछि तँ ओकर वैचारिक रूप सेहो बदलैत अछि। गाममे जखन वैज्ञानिक दृष्टिसँ खेती-पथारी नहि होइ छल, परम्परागत ढर्रानुसार खेती-पथारीक काज चलै छल, तखन ओही ढर्रानुकूल किसानक विचारो आ काजो छेलैन। मुदा जखन वैज्ञानिक ढर्रा पकैड़ खेती-पथारीक काज शुरू भेल तखन तही अनुसार किसानक विचारमे सेहो परिवर्तन हुअ लगलैन। प्रस्तुत कथामे अही चीजकेँ अर्थात् मनुक्खक क्रियागत जीवनक प्रभावसँ वैचारिक परिवर्तनकेँ चिह्नित कएल गेल अछि।

‘दुष्टपन’

प्रस्तुत कथाक माध्यमसँ कथाकार समाजक ओइ मनोवृत्तिकेँ गहराइसँ पकैड़ कऽ अपन विचार प्रतिपादित केलैन अछि जइमे दुष्टपनक क्रिया-कलापसँ इष्टपन प्रभावित होइत रहल अछि। आइये नहि, आदिये-कालसँ समाजमे एक दिस जहिना इष्टपनक विचारधारा रहल अछि तहिना दोसर दिस दुष्टपनक विचारधारा सेहो रहल अछि। दुष्टपनक जगह इष्टपन केना स्थापित होएत, तइ दिशामे कथाकार जगदीश प्रसाद मण्डलजी गम्भीर चिन्तन-मननक संग महत्वपूर्ण परिवर्तनक विचार व्यक्त केलैन अछि। ओ कहै छैथ जे जाबत धरि मनुक्खक संस्कारमे परतंत्र पकड़ने रहत ताबत धरि स्वतंत्र विचार दबल रहत जइसँ स्वतंत्र रूपेँ कियो अपन जीवन-यापन नहियेँ कऽ पाओत।

‘केकरो कियो ने’

प्रस्तुत कथाक माध्यमसँ कथाकार पुरुष-नारी अर्थात् पति-पत्नीक बीचक सम्बन्धकेँ रेखाङ्कित केलैन अछि। रेखाङ्कित ई केलैन अछि जे दुनूक अप्पन सम्बन्ध रहितहु आ तैसंग परिवारो आ समाजोक बीच एक-

दोसराक बीच सम्बन्ध रहलाक बादो क्रियागत दूरी सेहो छैन्हे।

कथामे एक पात्र कथाकार अपनहि छैथ। आ से मुख्य पात्रक रूपमे छथै। मुकदमामे फँसल छैथ। पत्नी दबाव दइ छैन जे गामक जखन सात गोरे केसमे फँसल छैथ तखन अहींकेँ किए एतेक बेगरता अछि।

मुदा ओ मने-मन सोचै छैथ जे मुकदमाक तारीखपर जँ नहि जाएब तखन तँ अनुपस्थिति दर्ज होएत जइसँ वारन्ट हएत, जब्ती-कुर्की हएत.! अन्तमे जहल तँ हमरा जाए पड़त, पत्नीकेँ थोड़े जाए पड़तैन। अर्द्धांगिनी रहितो हम भोगब आकि पत्नी भोगती? केकरो कियो ने छी, सभ अपन-अपन कर्मक भागी होइए।

कहि सकै छी, प्रस्तुत कथाक माध्यमसँ कथाकार सभसँ लगक सम्बन्धक बेवहारिक परिचय करबैत एक-दोसराक सम्बन्धक बीचक सीमा-रेखाकेँ रेखाङ्कित केलैन अछि।

‘हुसि गेलौं’

‘हुसि गेलौं’ कथामे कथाकार जीवनक वर्णन करैत कहलैन अछि जे जीवन जीवन छी। जीवनमे सम-विषम परिस्थिति अबैत रहैत अछि जइसँ जीवन प्रभावित होइत अछि। आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक अनेको रंगक परिवर्तन जीवनमे होइत अछि। जेहेन परिस्थिति जीवनमे अबैए तेहने विचार आ व्यवहार सेहो बदैलते अछि। अही बिम्बकेँ पकैड़ कथाकार प्रस्तुत कथामे जागेसर चर्च केलैन अछि। जागेसर गरीबीक चलते अर्थात् आर्थिक मजबूरी भेलाक कारणेँ गामसँ दिल्ली गेला। किछु समयक पछाइत पुन: गाम आबि गामहिमे रहैक विचार मोनमे रोपि लेलैन। ऐ तरहेँ जुगेसरक जीवनमे वैचारिक ओ बेवहारिक परिवर्तन भेल। जेकरा नीक ताना-बानाक संग कथाकार उक्त कथामे प्रस्तुत केलैन अछि।

‘केलवारी’

केलवारी कथाक माध्यमसँ केरा-खेतीक सन्दर्भमे कथाकार अपन अनुभवात्मक ज्ञानक साझा केलैन अछि।

अपना ऐठाम माने मिथिलांचलमे परम्परासँ जे केराक खेती होइत आबि रहल अछि ओ ऐठामक तीनू मौसम (जाड़, गरमी, बरसात)क अनुकूल रहल अछि। मुदा ओइ किस्मक जगह नव किस्मक केरा आएल अर्थात् बौना किस्मक, जेकरा सिंगापुरी सेहो कहैत छिऐ, जइसँ मिथिलांचलमे जे पूर्वसँ अबैत केरा छल ओ उपैट गेल। मुदा ओ बौना किस्म, जे आन-आन देशक छल, अपन मिथिलांचलक माटि-पानिक अनुकूल नहि भेने विकास नहि कए सकल। जइसँ पुन: परम्परासँ अबैत जे अपन केरा छल, ओ अपन स्थान बना लेलक। उक्त विषयकेँ नीक विश्लेषण संग कथाकार ऐ कथामे प्रस्तुत केलैन अछि।

प्रस्तुत कथोपकथनपर विचार कएल जाए- (1) "जहिना देखबहक जे जामुनक मासमे लोक जामुनक बीआ रोपैए, आमक मासमे आम रौपैए, अनारसक मासमे अनारस रौपैए तहिना अपना ऐठाम सरसठिक रौदीक पछाइत जे उथल-पुथल भेल ताहिमे केरोक खेती आएल। बाहरी किस्मक केरा, एक-मौसमी। लोक जहपटार अपन पुरना करजान सभ उपटा-उपटा लगा लेलक। जे केरा अपना ऐठाम बहुत पहिनेसँ होइत चलि आबि रहल छल, ओ उपैट गेल। रोपाएल ओ जे समायानुकूल नै छल, अपनो गेल आ जेहो आएल सेहो गेल। जेकर फल भेल- मिथिलांचलक केदली वन महराइ गाबए लगल!"

(2) "बौआ, केचुआ छोड़ैक लूरि जेकरा रहै छै वएह ऐ धरतीक सुख बुझैए। अपना ऐठाम केराक खेती अदौसँ होइत आबि रहल अछि। जेहने गुणगर तेहने पेटभर। मुदा ऐठाम तँ पौष्टिक वस्तुक उत्पादन होइ वा नै होइ, मुदा जन-जनकेँ पोष्टिक अहार भेट रहल छइ। जइसँ स्वस्थ शरीरक निर्माण भऽ रहल छइ।"

'सिकिया नेता'

ऐ कथामे चुनाव दिनक चर्च कएल गेल अछि। कथामे एक पात्र कथाकार स्वयं छैथ। ओ भोरे सुतिकऽ उठबे केलाह कि सुधनी दादीकेँ

यत्र-कुत्र गरियबैत सुनलैन। मनमे शंका भेलैन जे अखन पुलिसक दौड़ गाममे चलि रहल अछि, जँ कहीं जा कऽ पुछिऐन आ तही काल पुलिसक गाड़ी चलि आएल तखन अनेरे लफड़ामे पड़ि जाएब। तेँ सुधनी दादी लग नहि पहुँच रूपनी भौजीकेँ पुछलखिन जे केकरा सुधनी दादी भोरे-भोर गरियबै छैथ। जैपर रूपनी भौजी बुझबैत बजली जे गाममे देखै नइ छिऐ जे केहेन-केहेन सिकिया नेता सभ भऽ गेल अछि। मौगीक सलवार-जम्फर जकाँ पैजामा-कुर्ता पहीरि लइए आ अँगने-अँगने लेटरीनक नाओंपर घरक नाओंपर लोक सभसँ रूपैआ ठकने घुरैए। सुधनी दादीकेँ दू हजार लेटरीनक नाअेंपर आ पाँच हजार घरक नाओंपर ठकि लेने छैन। वएह भोँट-दे कहैले आएल अछि तेकरे देखि दादी गरिया रहल छैन। तही काल रबिन्दर भाय बुथपर (भोँटक बुथपर) सँ घुमि कऽ अबै छला। साढ़े सात बजैत रहइ। कथाकार पुछलखिन जे भाय, भोँट खसेलौं? जैपर रविन्दर भाय कहलकैन, लोकक कतार देखि अखन नइ खसेलौं, छह बजे साँझमे खसाएब।

रविन्दर भाय राजनीतिसँ जुड़ल नहि छैथ मुदा समाजसँ जुड़ल रहने समाजक बीच जे पारिवारिक काज अछि तइमे हुनकर नीक योगदान रहै छैन। माने अपन परिवारक काज जकाँ अनकहु काजकेँ बुझि करै छैथ। जेकर उद्देश्य मनमे यएह छैन जे जखन समाजमे छी तखन समाजसँ मिलि कऽ ने रहैक अछि।

सामाजिक दायित्वकेँ रेखांकित करैत कथाकार प्रस्तुत कथाकेँ गढ़लैन अछि।

‘अगुताइ भेल’

प्रस्तुत कथाकेँ कथाकार रघुनीबाबाक माध्यमसँ गढ़लैन अछि। कोनो-कोनो कार्य समय आ परिवेशकँ धियानमे नहि राखि कएलासँ जे गड़बड़ होइए तेकरे जिक्र केलैन अछि। परिवारो आ समाजोमे एहेन बहुतो कार्य अछि जेकर खगता अछि, मुदा ओइ अनुकूल जँ समय वा परिवेश

नहि अछि तँ ओ कार्य असफल भइये जाइए। यएह रघुनीबाबाकेँ सेहो भेलैन। रघुनीबाबा माछ पोसैले छोट-छीन एकटा पोखैर खुनौलैन। मुदा पानिक अभावमे माछ नहि पोसि सकला। किएक तँ माछक लेल पोखैरमे बारहो मास पानि चाही, से नहि भेलैन। तेलबला दमकलसँ पानि महग भऽ जाइत छेलैन। अर्थात् जेते उपज (माछसँ लाभ) होइतैन तइसँ बेसी खर्च भऽ जाइत रहैन। समयकेँ आगू बढ़ने जखन गाममे बिजली आएल जइसँ पानिक सुविधा भेल तखन रघुनीबाबा अपने मुहेँ बजला- 'अगुताइ भेल'।

'अर्जुन रोग'

अर्जुन रोग शीर्षक कोनहु चिकित्सीय नाओं (मेडिकल नाम) नहि छी। ओ वैचारिक नाओं छी। महाभारतक प्रमुख पात्र पाण्डव वंशमे अर्जुन रहला अछि। जे कौरव-पाण्डवक बीचक लड़ाइमे प्रमुख भूमिका अदा केने छैथ। प्रस्तुत कथामे कथाकार अर्जुन सन योद्धाक रूपक चर्च केने छैथ। कथामे ओइ जीवनक दर्शन होइत अछि जे जीवन लाखो-रोग-वियाधिसँ घेराएल अछि। अर्थात् ई जे सामाजिक, आर्थिक, वौद्धिक इत्यादि सभ क्षेत्रमे जे मनुक्ख दबल-कुचलल अछि, पछुआएल अछि ओ केना ठाढ़ भऽ श्रेष्ठ मनुक्ख बनि सकैए, अही जीवन दर्शनकेँ कथाकार 'अर्जुन रोग'क अर्थात् नीक बनैक रोग (इच्छा)क चर्च प्रस्तुत कथामे केलैन अछि। कथाकेँ पढ़िते ई बुझबामे आबि जाइत अछि जे अर्जुनक लड़ाइ जीवन सुधारैक प्रक्रिया छी। जेकरामे नीक बनैक इच्छा जागि जाइत अछि अर्थात् जे अर्जुन रोगसँ ग्रसित भऽ जाइत अछि ओ अपन जीवनकेँ परिवर्तित करैत अन्तिम सीमापर पहुँचिये जाइत अछि।

'भौक'

प्रस्तुत कथाक माध्यमसँ कथाकार अन्धविश्वासक चर्च केलैन अछि। केना आजुक वैज्ञानिक युगमे अर्थात् एकैसम सदीमे अन्धविश्वास अछि तेकर जिक्र कथाकार केलैन अछि।

आमक गाछी लगसँ कथा शुरू होइए। जेठ मासक दुपहरियाक टहटहौआ रौदमे दीनबन्धु काका एकटा भगत अर्थात् गोसाँइ खेलेनिहारक ओहिठामसँ आबि रहल छैथ। कथाकार आमक गाछीक मचानपर सुतल-सुतल गाछीक ओगरवाहि कऽ रहल छला, तैबीच दीनबन्धु काकाकेँ फाँड़ बन्हने, माथपर गमछा नेने अबैत देखलैन। दीनबन्धु काकाकेँ शोर पाड़ि कथाकार मचानपर बैसा पहिने ताड़क पंखासँ हौंकिकऽ ठंढा करै छैथ, पछाइत मन शान्त भेलापर पुछै छथिन जे एहेन समयमे कतएसँ अबै छी?

दीनबन्धु काका अपन सभ वृतान्त सुनबैत कहलखिन जे पत्नी देवरिया गेल छेली। अर्थात् देवरियामे एकटा जनानाकेँ सपनौती भेल। सपनौती ई भेल जे जेकरा कोनौं दैहिक वा दैविक रोग भेल अछि ओकरा एक चुटकी माटिसँ सभ किछु अर्थात् रोग-वियाधि छुटि जाएत। ओहीठाम दीनबन्धु काकाक पत्नी गेल छेलखिन। लोकक भीड़मे कियो मोबाइल चोरा लेलकैन, तेकरे नाम उचारै-खातिर भगतक ओइठाम गेल छला।

दीनबन्धु कक्काक बात सुनि कथाकारकेँ मनमे उठलैन- समय-समयपर अहिना अन्धविश्वासक हवा उठैत रहैए। समाजमे सभ तरहक लोक अछि। अन्धविश्वासक भौक बनौनिहार सेहो समाजेक बीचमे रहैबला लोक अछि।

सम्पूर्ण कथाक ताना-बानासँ अन्धविश्वाससँ जकड़ल समाजकेँ चित्र बेस व्यापक रूपमे सोझा आएल अछि।

‘सिरमा’

ई कथा बाल साहित्यपर केन्द्रित ‘बाल गोपाल’ नामक कथा संग्रहमे संग्रहित अछि। उक्त पोथीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 14 गोट कथा संकलित छैन। सिरमा कथाक लेखन तिथि 31 मार्च 2014 अछि। ई कथा मात्र 757 शब्दमे लिखल अछि।

सत्तैर बर्खक बाबा ‘जगदम्ब’ आ बारह बर्खक पोता ‘मुरारी’क बीचक ई कथा अछि। जगदम्ब शुद्ध समाजवादी सोच आ आधुनिक (वैज्ञानिक) बेवहारक लोक छैथ। ई अपना जीवनमे समय आ परिस्थितिकेँ

देखैत अपनो लेल आ समाजो लेल बहुत किछु केलैन। सामाजिक विकासमे अपन विकासक मानसिकता जगदम्ब बाबाक जीवनकेँ काफी संघर्षशील बना देलकैन। समाजक बीच व्याप्त रूढ़ि ओ आडम्बरकेँ चिह्नित करब, नीक-बेजापर सदैत गौर करब, नीकक अनुसरण करैत अधलाकेँ विरोध करब, बेजाकेँ तियागब आदि जगदम्ब बाबाक जीवनक खास पहिचान रहलैन। बाबा अपना जीवनमे जनजागरणक लेल केतेको गोष्ठी-संगोष्ठी सेहो करैत रहला। ओना, ऐ खातिर, माने जनजागरणक विरोधमे हिनका केतेको बेर जहल जाए पड़लैन। तथापि ई अपन कर्तव्य-पथपर वैज्ञानिक सोचक संग सदैत चलैत रहला। हिनक सम्पूर्ण जीवन क्रान्तिकारी पथक पथिक रूपमे रहलैन। कहि सकै छी, जगदम्ब बाबाक जीवन वैज्ञानिक सोच आ कान्तिकारी क्रिया-कलापक बीच मानवीय सम्वेदनासँ भरल रहलैन।

शान्ति निकेतनमे पढ़ैत 12 बर्खक मुरारी। मुरारी जखन पाँचे बर्खक छल तखने अपन पिताक संग बंगाल चलि गेल। सात बर्खक पछाइत गाम आएल अछि। बाबाक जीवनसँ अनभिज्ञ मुरारी मुदा सम्बन्ध तँ बाबा-पोताक बीचक छैन्हे। ..मुरारी अपन बाबा लेल बंगालसँ एकटा सिरमा लऽ कऽ आएल अछि। बाबा लग आबि बाजल- “बाबा, पुरनाकेँ बदैल दियौ, सभ किछु नवका अनलौं अछि।”

जगदम्बक मन ठमैक गेलैन। मुदा तामस नहि उठलैन। अपन सिरमाक इतिहास सुनबए लगला। इतिहास सुनि मुरारीकेँ बुझि पड़लै जे अपन आनल सिरमा बाबाकेँ देब अनुचित होएत, किन्नहु नहि लेता। मुदा से भेल नहि। मुरारीक श्रद्धाक आगू जगदम्ब अभिभूत भऽ सदैव परिवर्तनकारी स्वभावक सुन्दर परिचय प्रस्तुत केलैन।

‘बुलन्दी’

ऐ कथाकेँ दू गोट पात्रक माध्यमसँ कथाकार लिखलैन अछि। पहिल पात्र रूपचन काका आ दोसर पात्र कथाकार स्वयं छैथ।

स्वस्थ्य-प्रसन्न रहि बुलन्दीसँ केना लोक जीब सकैए, यएह ऐ

कथाक मूलमे अछि। रूपचन काका अपन बेवहारिक अनुभवकेँ गप-सप्पक माध्यमसँ कथाकारक संग साझा करै छैथ।

रूपचन काका अप्पन जीवनक शुरूआत किसानी कार्यसँ कए किसानक रूपमे जीवन स्थापित केलैन। दुनियाँ दिस ताकब छोड़ि अपना दिस नजैर निखारलैन। ओना, कौलेजक जीवनमे रूपचन काका एते सुनिकऽ सीख नेने छला जे भूत-सँ-भविष्य धरि केना मन दौड़ैए। मुदा अनुकूल स्थान नहि भेटने विचारकेँ विचारेक पौतीमे सैंतिकऽ रखने रहला।

जहिना कोनो घटना स्थलपर देखल घटना, महिनो-सालो बाद धक-दे मोन पड़ि जाइए तहिना रूपचन काकाकेँ अपन जीवनक दिशा धक-दे मोन पड़लैन। किसानियोँक तँ विराट रूप अछिए। तइमे अपने बसि ब्रजवासी जकाँ केना जीब, यएह मूल प्रश्न छी। रूपचन काका दरबज्जापर बैसल एकटा बाल्टीन आगूमे रखने रहैथ। जइ बाल्टीनमे दरबज्जाक चुबाठ-पानि टप-टप छतसँ खसैत रहइ। दरबज्जापर पहुँचते रूपचन काका बजला- “तूँ सभ ते नबका लोक भेलह। देहपर गमछा रखिते ने छह।”

कहि, रूपचन काका एकटा गमछा देह पोछेले, माने पानि जे पड़ल रहए तेकरा पोछैले, देलैन। ..देह पोछि, गमछा राखि रूपचन काकाकेँ हियासए लगलौं। दू ढंगसँ हिसास करए लगलौं। पहिल जे रूपचन कक्काक प्रति अपन विचार केहेन अछि आ दोसर, गीता वा आध्यात्म सोच जकाँ आध्यात्म आ जीवनक सम्बन्ध रूपचन कक्काक केहेन छैन। तइ बीचमे रूपचन काका बजला- “चाह पीबह?”

‘अन्तिम आशा’

ई कथा ‘साहित्यकारक विवेक’ नामक पोथीमे माने कथा संग्रहमे नअम स्थानपर संग्रहित छैन। हराशंख तथा कृत्यानन्द काका नामक पात्रक माध्यमसँ कथा रचल गेल अछि।

विकासक दौड़मे गामक किसानक टुटैत जिनगी, ठमकल किसानी

कारोबार तथा पछुआइत खेती-पथारीक कथा ‘अन्तिम आशा’ कथामे आएल अछि।

उपरोक्त कथासभक संक्षिप्त परिचयक आधारपर ‘कनियाँ-पुतरा’, ‘वारन्ट’, ‘दुष्टपन’, ‘केकरो कियो ने’, ‘हुसि गेलौं’, ‘अर्जुन रोग’ आ ‘सिरमा’ शीर्षक कथासभकेँ मनोविज्ञान आधारित कथानक अन्तर्गत राखि सकै छी, तहिना ‘बुलन्दी’ शीर्षक कथाकेँ जीवन जीबाक कला आधारित, ‘कनियाँ-पुतरा’, ‘केकरो कियो ने’ कथाकेँ पुरुष प्रश्न आधारित, ‘काजक मेहपन’, ‘केलवाड़ी’, ‘अगुताइ भेल’, ‘बुलन्दी’ आ ‘अन्तिम आशा’ केँ किसानी जीवन आधारित तथा ‘स्वरोजगार’, ‘सिकिया नेता’, ‘भौक’, ‘अन्तिम आशा’ ओ ‘वारन्ट’ केँ तत्कालीन सामाजिक-राजनैतिक-शैक्षिक तथा अन्धविश्वासक समस्या आधारित कथाक रूपमे देखि सकै छी।

- उमेश मण्डल

कथा-क्रम

---

1. काजक मेहपन	03
2. स्वरोजगार	07
3. कनियाँ-पुतरा	16
4. वारन्ट	25
5. दुष्टपन	32
6. केकरो कियो ने	41
7. हुसि गेलौं	44
8. केलवारी	55
9. सिकिया नेता	65
10. अगुताइ भेल	69
11. अर्जुन रोग	73
12. भौक	78
13. सिरमा	84
14. बुलन्दी	88
15. अन्तिम आशा	93

काजक मेहपन

आधा जेठ बित गेल मुदा आन साल जकाँ ने कहियो लू-ए चलल आ ने एक्कोटा बिहड़ियो बरखा भेल। मुदा तैयो ऐ बेरक समय सभ सालसँ नीक अछिए। सभ सालक माने भेल, गोटे साल हवा-बिहाड़ि नइ भेने गरमीक प्रचण्ड समय बनि जाइए, ने सएह भेल आ ने पानि-पाथर-हवाक बहुतायतसँ ठण्ढे बनल रहल।

समय-समयपर हवाक रूखि मौसमकेँ अनुकूल बनौने रहल जइसँ समयमे ने बेसी तापमाने बढ़ल आ ने उतैर कऽ निच्चे खसल। दुनूमे सँ कोनो भेने समैयक संग मौसमो बिगैड़ जाइते अछि। जेकरा बुझै-परखैमे हाथीए जकाँ, हाथी जकाँक माने भेल जेकर चारू टाँग एते सबल अछि तैयो चूकि जाइए, मनुखो चुकबे करैए।

अपना ऐठाम किसानक पथ-पंथक पथिक डाक-घाघ, ऐतिहासिक पुरुख भेल छैथ, जिनकर कहब छैन- ‘पनरह कातिक, तीस अखाढ़ जे सुतल से गेल बजार।’ मुदा केहेन कातिक आ केहेन अखाढ़?

मासक रूपोक गुण तँ तीनबटिया जकाँ छइहे। जइ साल अधिक बरखा भेल, तइ सालक मौसमक मिजाज दोसर रंग रहैए, जइ साल रौदी भेल, माने समयोपर आ उचितो बरखा नइ भेल, तइ सालक मन-मिजाज दोसर रंग भइये जाइए। तँए कि ओहन समय नइ होइए जे सोल्होअना उचिते-उचित हुअए। सेहो तँ होइते अछि। तेहने समय ऐ बेरक अछि।

मौसम नीक भेने मौसमी फसलो नीक हेबे करत...।

विक्रम बाबा अपन बरसाती मौसमक फलबगानमे फलक गाछकेँ निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि मेहपनिया नजैरसँ देखि रहल छला। मेहपन कहियौ कि

मेहपनिया, माने भेल ओकर मेही-सँ-मेही रूपमे मेहिया कऽ ओकर बारीकपनकेँ बुझब।

जहिना मनुक्खक जिनगीमे अतीत-वर्त्तमान आ भविस चक्कर लगबैत चलैए आ ओही बीच बच्चाकेँ देखि अपन बालपनो आ वृद्धकेँ देखि अपन वृद्धपनो लोक बुझै-गमैए तहिना विक्रम बाबा, गरमी मासक मौसमी फलक वर्त्तमानकेँ देखि रहल छला आ जाड़क मौसमक फलक भविस दिस सेहो तकै छला।

'अनजान सुनजान महा कल्याण' जहिना कहल जाइए तहिना मौसमो आ मौसमक फलो-फूल आ अनो-पानिक लीला अछिए। जहिना कोनो अने वा फले-फूल अपनाकेँ समेट अपन उदय-प्रलय मौसमे अनुकूल निमाहैत चलैए तहिना भेल, तँए ई कहब जे ओ बरहमसिया, माने सभ मौसममे, नइ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो होइते अछि।

तही बीच विक्रम बाबाक पाँचो-सातो बुदरूकिया पोता-पोती लगमे पहुँच 'बाबा-बाबा' करए लगलैन। नमहर परिवार रहने पाँचो-सातो बुदरूकिया अपने पोता-पोती छेलैन। तहूमे पोता-पोती आ दादा–माने बाबा, आ दादी माने बाबीक बीच जेहेन मीठगर सम्बन्ध हेबा चाही से छैन्हे। जेकर फलाफल सोझहेमे छेलैन जे सभ बुदरूकिया अपना संग खेलए चाहै छेलैन...।

पाँचो-सातो बुदरूकियापर विक्रम बाबा तड़तड़ा कऽ तड़तड़ाइत बजला-

"भागै जेमे कि नइ..!"

जहिना देहपर सोहरैत मच्छरकेँ लोक बिऐन हौंकि कनी हटबैए तहिना धिया-पुता कनी हटि अपने खेलैक गर बनौलक। विक्रम बाबा अपना गरे अपन गर लगबए लगला आ बाल-बोध अपना गरे। मुदा तेते जोरसँ धिया-पुताकेँ कहने छेलखिन जे दू साए गजक दूरीपर आँगनक सभ स्त्रीगण सुनलक।

जहिना चिन्हल बोल तहिना जेकरा कहने छेलखिन सेहो चिन्हले-चिन्हल छेलैन।

आँगनमे स्त्रीगण सबहक बीच टीका-टिप्पणी शुरू भेल। एक तँ ओहुना बैसारी लोकक ठोरपर बरी बेसी बनिते अछि, तहूमे बाल-बोधक मुद्दो पकड़ाएले

अछि। एक गोरे बजली- “बुड़हाक मति घुमि गेलैन अछि।”

दोसर टिपलैन- “से कि कोनो चोराएल बात अछि।”

ओना, ई बुझैत हएब जे फुस-फुसा कऽ ओ सभ अँगनेमे बजै छेली से बात नहि, विक्रम बाबाकेँ सुना-सुना बजै छेली। विक्रमो बाबा सभ सुनै छला मुदा मनमे मिसियो भरि मलाल नइ जगलैन जे सभ कियो माने स्त्रीगण सभ (पुतोहु) सीमा तोड़ि बाजि रहल छैथ। ओना, ई बात दिन-दिनक बेवहार सँ विक्रम बाबा सेहो जानियेँ रहल छैथ। तँए, विक्रम बाबा-ले धैनसन। अपन जिनगी जीबैक निसचित आधार विक्रम बाबाकेँ छैन्हे। विक्रम बाबा बिसवासपूर्ण ढंगसँ जानियोँ रहल छैथ आ मानितो तँ छैथिए जे लाखो काज जिनगीक बीच अछिए, जे जिनगीधारककेँ निमाहै पड़ैए। मुदा एक संग जँ एकसँ अधिक काज एकठाम गोठिया जाए, तखन की हएत.! कियो तँ एकबेरमे एकेटा काज करत।

आन-आन जे करैथ मुदा विक्रम बाबाक स्पष्ट विचार छैन जे जहिना काजेपर जिनगी जरूर ठाढ़ अछि तहिना काजपर काज सेहो ठाढ़ अछिए मुदा काज-काजक अपन-अपन मोलो (भैलू, Value) तँ अछिए। कोन काजक की मोल अछि से विक्रम बाबा स्पष्ट बुझै छैथ।

जेहेन महत्-क काज रहत ओकर प्रक्रियाक (करैक प्रक्रिया) महत् सेहो तेहेन रहत। कृषकक जीवन धारण केने छी, हमरा-ले कृषिसँ सम्बन्धित–क्रियासँ विचार धरिक–काज सभसँ महत्-पूर्ण अछि।

ओना, दुनियाँकेँ जानब अधला विचार नहि, मुदा ईहो तँ प्रश्न अछिए जे एते विशाल दुनियाँ आ ओइ दुनियाँक विशालतम जीवनक बीच जखन छी तखन जेते सम्भव हएत तेतबेक ने अपन सीमा बनाएब। जँ से नहि करब तँ जहिना रामकेँ लंका जाइकाल पुल बनबैक खगता भेलैन जेकरा बनबैले नल-नील सन कारीगर भेटलैन, जिनका–माने नल-नीलकेँ–पानिमे पाथर अलगबैक लूरि तँ छल मुदा टुकड़ा-टुकड़ी पाथर एकबट्ट केना बनत से लूरिये ने रहइ, तहिना ने अपनो हएत।

विक्रम बाबाक मन-चित्त एक्कोरत्ती पुतोहुक डाकवाक् सँ नहि

सिहरलैन।

आधा जेठ बित गेल आ बरसाती फलक सृष्टिक समय आबि गेल। विक्रम बाबाक मनमे एलैन जे जहिना हमर दाता ई छी माने फल, तहिना ने हमहूँ एकर कर्त्ता-धर्त्ता, भोक्ता-भुक्ता सभ छिऐ, तँए अखनेसँ ने तनदेही दइक खगता अछि। नइ ते डाकबाबाक विचार ओहिना ने भऽ जाएत जेना 'शिकारी औत, जाल बिछौत, लोभसँ फँसब नहि, मुदा फँसि गेल सभटा।

आँगनसँ एकटा पुतोहु आँखि लाल-पीयर केने बच्चा लग पहुँच गेली।

ओना, जहिना पुतोहुक बात विक्रम बाबा-ले धैनसन छेलैन तहिना बाल-बोध-ले बाबोक बात छेलैन्हे। ओकर कोन मतलब छै जे बाबा जोरसँ बजला तँ उनटन भऽ गेलइ। जहिना सभ काल बजै छैथ तहिना बजला। तहूमे असगरमे माने एकटा बच्चापर जे जोरसँ बजितैथ तँ कनी कटाहो होइत, मुदा जैठाम जेरगर छी–माने पाँच-सात बच्चा–तैठाम जँ जोरसँ नहि बजता तखन केकरा की कहलखिन से कियो थोड़े बुझि पौत।

बच्चा सभकेँ संग मिलि खेलाइत देखि पुतोहु ओहन शिकारी जकाँ वौआ गेली जेकरा ठेकाने छै जे कोन तरहक शिकार खेलैले जाइ छी।

पुतोहुकेँ वौआइक कारण भेलैन जे चारू दियादनीक बच्चा अछि, केकरा कहलखिन से कि कोनो अपना आँखिसँ देखलिऐ। मुदा कर्मनिस्ट आ कर्महीनक बीच सांस्कारिक मतभेद तँ अछिए जे विक्रमोबाबाकेँ आ पुतोहुओकेँ बुझैक अपन-अपन ढंग छेलैन।

विक्रम बाबा मने-मन अपन फलक गाछकेँ तजबीजो कऽ रहल छला आ कनडेरिये आँखिये पुतोहुक लीला माने ताल-भजार सेहो देखि रहल छला, मुदा दुनूमे सँ कियो बाजि नहि रहल छला। ❑

स्वरोजगार

एक तँ अहुना शिक्षण संस्थानक वातावरण देखि रवि शंकरक मन कौलेजक पढ़ाइसँ उचैट गेल, तैपर परसुका किरिया-कलाप तँ आरो मनकेँ तोड़ि देलकै। भेलै ई जे कौलेजमे विश्वविद्यालय स्तरक परिचर्चा छात्र सबहक बीच भेल जइमे रवि शंकरकेँ आमंत्रित नै कएल गेलइ। बनल-बनाएल परिचर्चाक दिशा निर्देश, बनल-बनाएल कर्ता-धर्ता आ बनल-बनाएल पाठक-सुनिनिहार।

आमंत्रित नै करैक कारण रहै जे कौलेजक वातावरणमे रवि शंकर 'चुप्पा बताह' आ 'गोंग' बुझल जाइत। जइसँ संगी-साथीक बीच अधिक काल रवि शंकरक बतहपनियेँक चर्च चलैत। जहिना 'बघबा खाए वा नै खाए लोहारक लोहराइन महकबे करत', तहिना रवि शंकरक सेहो रहइ। एकटा अवगुण रवि शंकरोमे जरूर छै जे हाइ स्कूलमे जेते विषय पढ़ने छल, ओते विषयसँ सम्बन्ध बनौनहि अछि। ऐ बातकेँ मनसँ हटा नेने अछि जे हाइ स्कूलक किछुए विषय कौलेजमे रहि जाइ छै, सेहो दिनो-दिन घटिते चलि जाइ छइ। अही सीमाक उल्लंघनक चलैत छात्रेटा नहि, शिक्षकोक बीच चर्चक विषय बनल रहइ। जखन कि रवि शंकरक स्पष्ट समझ छै जे भाषा कामधेनु छी, जे सदिकाल दूध दऽ सकैए। एकर माने ई नहि जे निमुआन धन बुझि ओकर दुरूपयोग होइ। ओतबे शब्दक प्रयोग नीक होइ छै जेतेसँ विचारक माध्यमसँ विषय गतिमान बनै छइ। भाषा ओहन धार होइए जेकरा पार करैमे घटवारकेँ घटवारि नै दिअ पड़ै छइ...।

विश्वविद्यालयक परीक्षाकेँ अधडरेड़ेपर छोड़ि रवि शंकर अपन सभ वस्तु-जात समेट, लगक जे किताब-कॉपी रहै ओकरा छँटिया लेलक, दोसराक संग जे लेन-देन रहै ओकरो फरिया लेलक, पुस्तकालयक लेन-देन सेहो फरिया

लेलक आ पड़ोसक लेन-देन सबहक मुँह-मिलानी करैत बिना किछु केकरो कहने रूमक चाभी भागेसरकेँ सुमझा जहिना यागवल्यक्य गुरुआइसँ दुनू पत्नियोँ धरिकेँ छोड़ि विदा भेल छला तहिना विदा भऽ गेल। ओना, भागेसर मात्र गौंए रूमेट नहि, दियादिक संग खानदानी सम्बन्ध सेहो। तथापि ने रवि शंकर किछु बाजि अपन बेथा भागेसरकेँ सुनबए चाहलक आ ने भागेसरे किछु बजलै। नइ बजैक कारण भागेसरकेँ बुझले रहै जे गणेशजी जकाँ एकभग्गु ऐछे, जेमहर नजैर जेतै तेम्हरे जनकक हरबाहिसँ मूसक राखल मुसहैन तक खुनि कऽ निकालि लैत आ जेमहर नइ जेतै तेमहर हाथीक आँखि जकाँ लुब-लुबबैत रहत..! ओसारसँ निच्चाँ उतैरते रवि शंकरकेँ पाछूसँ भागेसर पुछलकै-

“रवि भाय, आगूक की कार्यक्रम अछि?”

जहिना गणेशजीक मन सदिकाल एक्के रंग रहैत तहिना रवि शंकर बाजल- “अखन विचार मनेमे अछि। पहिने गाम जाएब, समाजक संग परिवारकेँ देखब, पछाइत दुनू बापूत मिलि विचारब जे केना बाप-दादाक लगौल फुलवारी आरो हरियाइत रहत तखन ने।”

एक दिस रवि शंकर डेग बढ़ौलक दोसर दिस भागेसर पल्ला झाड़लक जे सभ दिनक एक्के रंग बुड़िवाण रहि गेल। जा जे कपारमे लिखल छह से कियो बाँटि लेतह! खैहौन चेतानन्दक कपार!

कौलेजक हातासँ निकैलते रवि शंकरक मनमे घौंदा जकाँ प्रश्न लुधैक गेलइ। बियौहता बर आ दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनमे समस्याक सोहरी लगि गेलइ। मुदा जहिना छोट बच्चाकेँ कियो दुलारसँ कना दइ छै आ ओ अपना माए लग जा कहै छै, ‘फल्लाँ मार’, तहिना सभ प्रश्नकेँ छँटिया रवि शंकरक मनमे परसुका प्रश्न उठलै। की हम परिचर्चामे अपन विचार व्यक्त करैबला नै छी? भऽ सकैए जे जे विचार हमर अछि ओ दोसरोक होइ, मुदा सेहो तँ सुनला पछाइते ने बुझितौं? नहियेँ बजितौं मुदा जँ आनोक मुहसँ सुनितौं तैयो तँ मनमे सवुर हेबे करैत, सेहो ने भेल! ने बजनिहारे भेलौं आ ने सुनिनिहारे!

रवि शंकरो आ भागेसरो संगे दुनू ब्रह्मपुर हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास करि कऽ राजधानीक एक्के कौलेजमे नाओं लिखौलक। ओना पढ़ैमे रवि शंकरक

अपेक्षा भागेसर हल्लुक, मुदा मैट्रिकमे बेसी नम्बर भागेसरेकेँ आएल छेलै, जे सुनिए कऽ रवि शंकर रहि गेल। विचारि नै सकल जे जखन भागेसर दब अछि तँ ओकर नम्बरो ने दबे अबितै! बाल-बोध मन रवि शंकर, एतबे बुझलक जे परीक्षा तँ शिकार करब भेल। अनाड़ियो शिकारीकेँ बेसी शिकार हाथ लगै छै आ जीवनियोँकेँ कम। ई नइ बुझि सकल जे जहिना खेतमे जोत-कोरसँ फसल लगबै धरि वा बाँस-खढ़-खरहीसँ घर बन्है धरि कोनो पेंच-पाँच नै होइ छै। पेंच-पाँच होइ छै, फसल लगला पछाइत आ घर बन्हला पछाइत। अपन रोपल अपने खा दोसरोकेँ खुआबी आकि अपने पुराबी आकि अनके रोपल खाइ...।

भागेसरमे एकटा विचार जरूर अछि जे रवि शंकरकेँ श्रद्धाक नजैरसँ जरूर देखैत। मुदा से सोझहामे, परोछमे विचारक दूरी एते लतैड़ गेल छै जे जड़िसँ मुड़ीक दूरी देखबे ने करैए। ओना हाइ स्कूल धरि दुनूमे एते दूरी नै बनल छेलै जेते कौलेजमे आबि कऽ बनलै। जहिना अध्ययन रवि शंकरकेँ एकाग्रता दिस खिंचैत गेल तहिना भागेसर देखा-देखीक अनुकरण करैत दोसर दिस बढ़ि गेल। तइसँ नजैरमे दोष आबि गेने बुझबे ने करैत जे छबड़दानी अपने सुरक्षित पानिक तरमे रहि छबड़ाकेँ कहैत जे ऊपरेमे छियौ।

ओना पटना अबिते दुनू गोरे एक्के लॉजमे रूम भाड़ा लेलक। मुदा भड़ैत बनैये-काल रवि शंकर बाजल रहए- “गौंआँ छोड़ि दोसर कियो रूममे नै आबि सकैए।”

तखन तँ भागेसरो एक-पुरखियाहे छल, संगीक जरूरत बुझि बाजल रहए- “बड़बढ़ियाँ।”

माथपर मोटरी नेने रवि शंकरक डेग आगू दिस बढ़ैत गेल, मुदा मनमे बेर-बेर पानिक हिलकोर जकाँ उठैत रहै जे विश्वविद्यालय स्तरक कार्यक्रम भेल, बेकती-विशेषक नै छल, तखन किए ने बुझलौं? ..ने प्रश्नक जड़ि भेटै आ ने विचार आगू बढ़इ। मुदा तैयो बाढ़िक पलाड़ी जकाँ बहबे करइ। मन बहकलै, इन्दिरा आवासक जेकरे पक्का घर रहै छै हथियाक झटकीमे खसल घरक अनुदानो तेकरे भेटै छइ। सएह ने तँ भेल। की अहिना भोजे-भातक शिक्षण संस्थान बनल रहत? धू:! अनेरे मनकेँ बौअबै छी। ठीके लोक बताह कहैए!

एहने-एहने बतहपनी सोचने ने लोक बताह होइए! अनेरे हमरे किए एते सोग अछि। 'जानए जअ आ जानए जत्ता।' लसिगर होइ आकि खढ़हर से ओ जानए। हमहीं की बजितौं जे अनेरे माथ धुनै छी। बड़ बजितौं तँ यएह ने बजितौं जे साहित्य जगतमे मध्यकालीन युग स्वर्णिम रहल। भक्तिमय साहित्यक सृजन एते कहियो ने भेल, मुदा भक्ति साहित्यक पछाइत वैराग्य अबैत आकि श्रृंगार? एबाक चाहै छल 'वैराग्य' से नइ आबि 'श्रृंगार' आबि गेल! समैयो मुगले शासनक छल। मिथिलांचलक किसानक सुदिन नै दुर्दिन छेलइ। बीससँ तीस रौदी प्रति सदी होइत आबि रहल छेलै, बाढ़ि-झाँट छोड़ि कऽ। तैसंग बड़का-बड़का भुमकमो भेल। आजुक संचार नहि, दू-गाम चारि गाम पसरैत-पसरैत आवाज विलीन भऽ जाइ छल। ने धार-धूर आजुक छी जे आबे बाढ़ि अबैए आ पहिने नै अबै छल। खाएर छोड़ू। रौदीक मारिसँ जे परिवार नष्ट भेल, वा गाम छोड़ि कऽ जे भागल, तेकरा छोड़ि कऽ। जे इमानदार किसान छला ओ मिसियो भरि ओइ सभ प्रकोपसँ डोलला नहि, मातृभूमिक माटि-पानिमे अपनाकेँ समरपित केने रहला। भलेँ एक रौदीक मारि पाँच बर्खमे किए ने भरपाइ करए पड़ल होइन...।

एकाएक रवि शंकरक विचार आगू बढ़ल। मनमे उठलै- विश्वविद्यालय सर्वोच्च शिक्षण संस्थान छी। जे मिथिलांचल ऋृषि-मुनिक बास स्थल अदौसँ रहल आकि ओतबे गनल-गूथल छैथ जेतेकेँ दोरिका छाप भेट गेलैन! विश्वविद्यालयक दायित्व बनैत अछि जे जिनकर रचना दिवारमे सड़ि गेलैन, पानिक चुबाटमे गलि गेलैन ओहनो-ओहनो रचनाकारक खोज हुअए।

गामक सीमानपर अबिते रवि शंकरकेँ भागेसर मोन पड़ल। मोन पड़िते बुदबुदाएल- "गौंआँ-घरूआ रहने भागेसर बहुत उपकार केलक। ओकरे केने कौलेजक पुस्तकालयसँ सम्बन्ध बढ़ल। नइ तँ तेहेन-तेहेन लुटिहारा सभ अछि जे किताबक कोन चर्च जे आलमारियो उठा कऽ लऽ जाइए। जँ ओ नै रहितए तँ अपने-बुते ओते भीतर तक थोड़े जा सकै छेलौं। ओकरे पाबि ने सभ रंगक किताबसँ भेँट भेल। जिनगी भरि ओकर उपकारकेँ नै बिसरब।"

रवि शंकरकेँ पटना छोड़िते भागेसर अपना पत्नीकेँ मोबाइलसँ कहि देलकैन जे 'रवि शंकर बताह भऽ गेल!'

गाम अबैसँ पहिनहि तेना चालैनमे दऽ राधा चाललैन जे सौंसे गाम पसैर गेल, रवि शंकर बताह भऽ गेल! तहूमे चुप्पा बताह। कखन की कऽ देत तेकर ठेकान नहि। काने-कान सौंसे गाम बीआवान भऽ गेल।

ओना ई बात परोछ रूपैँ चेतानन्दोक कान तक पहुँचलैन मुदा सोझहा-सोझही नै भेने अनेरे सुनलाहा बातक पाछू जाएब उचित नइ बुझि चुपे रहला। कौआ कान नेने जाइए, तइले कौआकेँ खेहारैसँ नीक, अपन कान देखब होइ छइ। ओना पौखैरक पानि जकाँ असथिर चेतानन्दक परिवार, तँए चिड़ैक एक लोल पानि उठौने हिलकोर नइ उठैत। दलानक ओसारपर मोटरी रखि रवि शंकर हिया-हिया चारू दिस ताकए लगल जे अपन हाजिरी तँ दर्ज करबैक अछि।

कनियेँ पछाइत चेतानन्द बाड़ी दिससँ एला। अबिते रवि शंकरकेँ पुछि देलखिन- “बाउ, नीके छेलह किने?”

जहिना बिनु बोलक बच्चा माए-बापक बोल सुनि हँसि-कानि अपन बात कहैत तहिना रवि शंकर मुस्की भरि उत्तर दैत पिताकेँ गोर लगलक। गोर लागि अपन वस्तुजात सेरियाबए कोठरी दिस विदा भेल।

समाजक बीच अनेको सुआदक बात-विचार हवा-बिहाड़ि जकाँ वातावरणमे पसैरते रहै छइ। मुदा कोन बात कोन आवरणमे पसैर जाइ छै, ई बुझब बाल-बच्चाक खेल तँ छी नहि। एहनो तँ होइते अछि जे पहिने दीक्षे छिटाइत अछि शिक्षा हरा जाइत अछि। खाएर जे हौउ, चेतानन्दक मनमे उठलैन जे काल्हिसँ जे गाममे बीआ-बान भेल अछि ओकर मुड़ी पहिने देखि ली। जँ रखै-जोकर हएत तँ राखब, नहि तँ मचोड़ि कऽ तोड़ि कातमे फेक देब...।

आगू ससैरते चेतानन्दकेँ मनमे उठलैन- एक तँ ओहिना रस्ताक झमारल रवि शंकर अछि, तैपर कौलेजमे पढ़ैए। कौलेजिया छौड़ा सबहक जे चालि देखै छिऐ से किछु ने फुराइए। जँ कहीं रवि शंकरो ओहिना करए। मुदा कानमे नहियोँ देब हमरा-ले उचित नहि हएत। पिते नै आदि गुरु सेहो छिऐ। ओकर नीक-बेजा नइ बुझब बाल-बोधक संग अन्याय हएत। कोनो जरूरी छै जे नीक बात सभकेँ अधले लगै, किछु के नीको तँ लगबे करै छइ। ..छातीपर पाथर रखि

चेतानन्द बजला- “बाउ, लोकक मुहेँ सुनै छी जे तोँ बताह भऽ पढ़ाइ छोड़ि गाम चलि एहल हेन, से की बात छिऐ?”

पिताक प्रश्न सुनि रवि शंकर मिसियो भरि विचलित नै भेल। जहिना पौखैरक असथिर पानि, काह-कूह निच्चाँ बैस गेने फरिच रहै छै तहिना रवि शंकरक मन असथिर रहइ। बाजल- “बाबूजी, एक संग तीनटा प्रश्न उठा देलिऐ। उत्तर बेराबेरी देब। पढ़ाइ छोड़ि कऽ किए एलौं। बहुत बेसी तँ अखन धरि नै पढ़लौं जे भरि पोख उत्तर देब। मुदा एते जरूर बुझलौं जे अपन जिनगी अपने हाथमे लऽ कर्मकेँ धर्ममे प्रतिष्ठित कऽ सकै छी। नइ तँ मुँह किम्हरो बोल किम्हरो बनल रहैए। अपन जिनगी अपना हाथमे लऽ क्षमतानुसार अपनो आ दोसरोक सहयोग करिऐ। मुदा सहयोगोक सीमा छइ। जखन मनुक्ख अपन सीमांकन कऽ चलत तँ ओहन सहयोगक बेगरते नै रहि जाइ छइ। मुदा बेकतीसँ परिवार, परिवारसँ समाज आ देश-दुनियाँ बनैत अछि, तँए बढ़ैत चलबे ने जिनगी छी।”

चेतानन्दकेँ बतहपनीक आभास नै भेलैन, तँए दोहरा कऽ बतहपनी शब्दक प्रयोग करब नीक नइ बुझलैन। पिताक बात छिऐ जँ कहीं उनटे रोपा जाए। शब्द तँ मनसँ उचरैत अछि। तँए अशुभकेँ शुभ बनाएब उचित भेल, मुदा शुभकेँ अशुभ बनाएब केना उचित हएत? अपनो नीक हएत जे जुआन बेटा भेल, सरकारो मानियेँ नेने हेतै, तँए अपना अधिकार आ कर्तव्यकेँ हमहीं किए रोकबै। हँ! तखन बिआह कराएब पछुआएल अछि से करबै धरि भार अछि। लेत अपन घर-परिवार, सर-समाज। साठि बर्ख नहियेँ पूरल हएत तइले किए बैसल रहब। से नहि तँ एकटा आरो बात पुछिए लिऐ...।

..चेतानन्द पुछलखिन- “बौआ, गाममे रहि करबह की? पढ़ि-लिखि सभ नोकरी-चाकरी करैए आ तूँ..?”

गंभीर होइत रवि शंकर बाजल- “बाबू, अखन गामक असली रूप बुझैमे थोड़े बाँकी रहि गेल अछि तँए अखन किछु ने कहब।”

“की असली रूप?”

“गामक माटि-पानिक लम्बाइ-चौड़ाइ की छै, अपना केते अछि, गाममे

परिवार केते छै इत्यादिकेँ बुझब बाँकी अछि से बुझि गेला पछाइत अपन योजना आगूमे रखि अहूँक विचार लेब।”

रवि शंकरक विचार सुनि चेतानन्द ठमैक गेला। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलैन। की योजना? कोनो कि सरकारी कारोबार छी जे योजना बनौत। मुदा धाँइ-दे नइ मानब उचित नै हएत। भलेँ बीकछा कऽ पुछि लेब अलग भेल। तहूमे कौलेजमे पढ़ैए, जँ कहीं किताबक भाषा बाजल हुअए, तखन?

से नहि तँ नीक हएत जे अखन रवि शंकरोक मन थीर नै हेतै, ताबे ओहो थीर होइए, तैबीच अपनो अधखरूआ काज पूरा लइ छी। ओहो निचेन हएत अपनो निचेन हएब, तखन खरियारि कऽ बुझि लेब।

बेरका समय। चाह पीब चेतानन्द रवि शंकरकेँ चाल पाड़लैन। अबिते रवि शंकर पुछलकैन- “किए सोर पाड़लौं?”

चेतानन्द बजला- “तखुनका बात नीक जकाँ नइ बुझलौं?”

रवि शंकर- “जाबे धरि गामक माटि-पानि, गाछ-बिरीछ, माल-जालक संग परिवारकेँ नइ बुझि लेब, ताबे अपन सीमा-सरहद नीक जकाँ नइ बना सकै छी।”

‘माटि-पानि, गाछ-बिरीछ इत्यादि’ सुनि चेतानन्द बजला- “ई कोन बड़का उलझन भेल जे तूँ ओझराएल छह। सात साए बीघाक गाम अछि, एगारहटा पौखैर अछि। इनार तँ मरिये गेल। दूटा बाट गाममे अछि। जे दुनू मिलि चौराहा बनल अछि। एकटा पुबे-पछिमे अछि आ दोसर उत्तरे-दछिने। तैसंग पाँच साए परिवारो अछि।”

चेतानन्दक विचार सुनि रवि शंकर बाजल- “बाबू, जे बात नइ बुझल छल से बुझलौं। कनी थम्हू, कागतपर लिखि लेब नीक हएत।”

कागत-कलम आनि रवि शंकर बाजल- “गामक रकबा केते अछि?”

“सात सौ बीघा।”

“परिवार केते अछि?”

“पाँच सौ।”

“अपना केते जमीन अछि?”

“साढ़े पाँच बीघा।”

“तखन तँ परिवारक हिसाबसँ बेसी अछि?”

“हँ से तँ अछिए। तँए कि हम बेसी खेनिहार छी?”

बेसी खेनिहार सुनि रवि शंकरक मन ठमकल। मुदा जखन चोर-मोट सोझहेमे अछि तखन पुछिए लेब नीक हएत। ..रवि शंकर बाजल- “बेसी खेनिहार! माने?”

चेतानन्द- “बाउ, अपनो मनमे अछि जे जेते खेतमे काज केनिहार छैथ हुनका सबहक बीच एकरंग खेत होइन, जइसँ श्रमक प्रतियोगिता हएत। मुदा जेकरो बटेदारी, भूदानी खेत भेलै सेहो सभ कियो भरना लगा तँ कियो केबाला कऽ दिल्ली–बम्बै धेने जा रहल अछि। तैसंग जिनका बेसी छैन, ऊहो नोकरी-चाकरी करए चलि गेल छैथ, गामक खेत तँ ओहने परती बनि गेल अछि जेहेन उजड़ल गाम होइ छइ। तखन तोहीं कहह जे की कएल जाए?”

प्रश्नकेँ ओझराइत देखि रवि शंकर बाजल- “पहिने अपन समय आ खेतीक मिलान करए दिअ, तखन फेर आगू गप करब।”

उत्सुक होइत चेतानन्द बजला- “हँ, हँ, नीके सोचै छह। कोनो काज करैसँ पहिने बुझि-जानि लेब बेसी नीक होइ छइ।”

रवि शंकरक जिज्ञासा देखि चेतानन्दकेँ खुशी भेलैन। मनमे उठलैन- ‘नै दुनियाँ तँ कम-सँ-कम अपन परिवारक तँ सभ एक रंग खाएब, ओढ़ब-पहिरब, एक रंगक घरमे तँ रहब। यएह ने भेल परिवारक एकरूपता। ई तँ नहि ने जे कुरसीपर बैसल बेटा बापकेँ कहत- ‘ऐ बूढा, कहाँ रहता है!’ मुदा जखन अकासे फाटि गेल अछि तखन दरजीकेँ बपहारिये कटने की हएत?

साँझक समय। लालटेन नेस चेतानन्द दरबज्जाक चौकीपर चाह पीब असगरे बैसल छला। बाजाप्ता कागज कलम नेने रवि शंकरो आबि बैसल। हाथमे कागज देखिते चेतानन्द पुछलखिन- “बौआ, कथीक कागत-पतर छिअ?”

जहिना कोनो काजक पहिने भूमिका बान्हल जाइ छै तहिना भूमिका

बान्हि कागत खोलि रवि शंकर बाजल- “बाबूजी, अपन किसान परिवार छी।”

‘किसान परिवार’ सुनि चेतानन्द बजला- “से तँ छीहे। जँ से नै छी तँ किए बड़को-बड़को कुरसीबला अपनाकेँ निधोख किसान परिवार आ किसानक बेटा बजैए!”

मुस्कियाइत रवि शंकर बाजल- “पहिने सुनि लिअ, तखन अपन विचार देब। पानि खेतीक परान छी। बिनु पानिक किसानक जिनगी मुरदाक होइ छइ। चारिए मासक बरसात बारहो मासकेँ सजबैए। जँ हाथमे पानि आबि जाएत, तखन लत्ती जकाँ किसानी पसैर जाएत। तँए किछु खेत बेच बोरिंग कराएब। खेतीक विकसित रूप बनबैमे जेते खर्च हएत ओ खेत बेच कऽ करब।”

चेतानन्द मुड़ी डोलबैत बजला- “घर-परिवार सुमझाबैक अर्थ ई नहि ने होइ छै जे विचार रोकल जाए। जे मन फुरह से करह, मुदा पाँच कट्ठा तीमन-तरकारी-ले हमरो बेरा दिहह। देखै छी जे तेते ने लोक दबाइ दइ छै जे ओकर गुणे बिगाड़ि दइए। अपना हाथे उपजाएब मनसँ खाएब। अछैते औरुदे मरनाइयो नीक नहि!”

चुटकी लैत रवि शंकर बाजल- “बाबूजी, घरक आगूओमे धन-खेतीए रखने छी आ मन निरोग तरकारीपर जाइए!”

चेतानन्द- “अखन तूँ नै ने बुझबहक। ई खेत गोरहा छिअ। नहियोँ तँ बोरा कट्ठा भइए जाइए।”

बिच्चेमे रवि शंकर बाजल- “आ जइबेर रौदी भऽ जाइ छइ?”

“एते लोक हिसाब जोड़त तखन काज चलतै।”

“तँए ने..?” ❑

कनियाँ-पुतरा

कमला-कमलक जन्मक उनैसम दिन। उनैसमासी कर्म केलाक पछाइत जहिना कर्ता चैनक साँस लेबो करैत आ छोड़बो करैत तहिना सुधनी दादी पोती (कमला) पोता (कमल) केँ जाँति-पीचि, पछबरिया ओसारपर कजरौटी दऽ पूब सिरहौने सुता बेटा-पुतोहुकेँ कहलखिन-

“आब अपन करमकेँ करम-धरम करह, बाड़ी-झाड़ी विरहा गेल हएत ओकरो तकतियान नै करब तँ जीब केना?”

कहि सुधनी दादी आँगनसँ निकैल बाड़ी दिस विदा भेली आकि दछिनवरिया घरक कोनचर लग पहुँचते मनमे ठहकलैन। ठहैकते ठाढ़ भऽ गेली। ठहकलैन ई जे कहुना तँ घरमे हमहीं बुढ़ छी, मुदा सुनैत तँ यएह एलिऐ जे जँ बेटा-बेटीक जौंआँ सन्तान हुअए तँ पहिने बेटाक जन्म होइ छै पछाइत बेटीक। मुदा से भेल कहाँ। पहिने बेटीक जन्म भेल? मुदा पुछबो केकरा करबै? बेटा-बेटे भेल, पुतोहु कनियेँ छैथ, तखन? समाजमे जँ केकरो पुछबै तँ कहत जे बुढ़िया बताह भऽ बड़बड़ाइए। गुनधुनमे सुधनी कोनचर लग ठाढ़ भेल ने आगू बढ़ैत आ ने पाछू ससरैत। अपन दतारी दोसरो-तेसरो तँ पुछैवाली छैथे। मुहाँ-मुहीं नै पुछि हएत, मुदा पुछबा तँ सकै छिऐन। चोटे आँगन दिस घुमि पुतोहुकेँ हाथक इशारा दैत कहलखिन-

“कनियाँ, कनी एमहर आउ।”

ओसारपर बैसल धीरजकेँ मिसियो भरि शंका नै भेलैन जे एहेन कोन गप छी जे सोझहामे नै बाजि माए कातमे कहै छथिन। शंको केना होएत चुल्हि-चौकाक बात तँ सासु पुतोहुएकेँ ने कहथिन, तइले बेटाकेँ किए कोनो तरहक कुवाथ हेतैन। लगमे अबिते सुधनी बुधनीकेँ कान लग फुसफुसा कऽ बजली-

"कनियाँ, अहाँ तँ अखन नव-नौताड़ि छी, अखन ओते नइ बुझबै मुदा माए तँ छैथ। चुपचाप हुनकासँ बुझि लिअ जे जौंआँ सन्तानमे पहिने बेटियोक जन्म होइ छइ?"

सासुक बात सुनि बुधनी मानि तँ गेली, मुदा तैयो बजली-

"ओना काल्हिए हम पुछि लेबैन, मुदा कहियो बाजल छेली जे पहिने बेटेक जन्म होइ छइ।"

पुतोहुक बात सुनि सुधनी ठमैक गेली। मुदा तैयो बजली-

"कनियाँ, आँखिक देखल अहूँकेँ अछि आ हमरो, तखन सुनलेहे बात मानब उचित हएत?"

सासुक बात सुनि बुधनी ठमकली। बल्ला आकि चूड़ी देखैले कोन ऐनाक जरूरी कोन स्त्रीगणकेँ होइ छइ। ई तँ सद्य: आँखि देखैत अछि। जेकरा आँखि नै देखैत तइले ने ऐनाक जरूरत। कमसँ-कम एते तँ हेबे करत जे जहिना ऐ समाजमे (सासुरक) तहिना नैहरोक समाजमे अहिना लोक उनटा-पुनटा बुझबो करैए आ बजबो करैए। तैसंग ईहो हएत जे माइयो अपन बातमे मजगूती अनैले दोसरो-तेसरोकेँ पुछथिन वा निम्न बुझि नहियोँ पुछि सकै छथिन। मुदा जँ नै पुछि लेब आ झोंकमे कहियो बुढ़ही झोंकि देलैन तखन तँ अनेरे आफतमे पड़ि जाएब। पुछैए-मे की लगल अछि यएह ने आठआना मोबाइलमे खर्च हएत, तइले अनेरे सासुक धौजैन बेसाहि कऽ रखब नीक नहि। मने-मन बुधनी विचारिते छेली आकि अंकुरित भगवान जकाँ मनमे अकुरलैन। अकुरलैन ई जे अपना जौंआँ सन्तान भेल, किनको एक-दू-तीन सन्तान होइ छैन, हमर बेथा जहिना ओ नीक जकाँ नइ बुझि सकै छैथ तहिना तँ हमहूँ नहियेँ बुझि पएब। अपना दू सन्तानक बेथाक अनुभव अछि, दोसरकेँ तीनक अनुभव रहितो एक-एकक अनुभव छैन। डायविटीज आ ब्लडपेसर किनको एक संग छैन आ किनको भेलैन दुनू मुदा बेरा-बेरी। अनुभव तँ दुनू गोरेकेँ दुनू बेमारीक भेलैन मुदा की दुनूक इलाजमे सोलहन्नी एक्के दबाइ कएल जाएत...।

पत्नीक ओझराएल मनक ओझरी चेहराकेँ रसे-रसे ओझरबैत चलि जाइत। ओसारपर बैसल धीरज बेर-बेर चेहरा देखैत तँ टुटल फूल जकाँ बेसीए

मलिन होइत चलि जाइत देखैत। मुदा सासु-पुतोहुक बीचक विवादमे पड़बो ओते नीक नै हएत जेते हेबा चाही। एकर माने ई नै जे परिवारमे कियो चिन्तित हुअए आ केकरो-ले धैनसन, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत? मुदा पुछबो केना करब? दुनूक बीचक सवाल जँ एक पक्षसँ पूछब तँ दोसर पक्ष पञ्छीए जकाँ ने बुझती, जँ एकठाम बात उठाएब आ ओ लिंग-विशेषक होइ तखन ने माए बाजत आ ने माइयक डरे (सोझमे रहने) पत्नी बजती। तखन?

..मुदा जे बदनामे चलि गेल ओ कहियो ने कहियो निकलबे करत, तहिना जे परिवारक भीतर घूसि गेल ऊहो भुमहुर-आगि जकाँ धुँएबे करत, तइले अनेरे मन घोर-मट्ठा करब नीक नहि, दुधे किए ने पीब लेब जे सभ संगे रहत। दूधक मोहैन जकाँ धीरजक मनमे चलिते रहै आकि दोसर अकुर गेल। ओ ई अकुरल जे ऐ घरक ऐगला भार (चलबैक भार) तँ अपने दुनू बेकती (पति-पत्नी) पर पड़त, जाबे माए जीबैए ताबे गारजन बुझि भार हटौने छी मुदा अखने जँ ओ बिमार पड़ए आ भार उठबै-जोगर नै रहि जाए तखन तँ एकाएक भार पड़बे करत। जँ कोनो काजक भार अबैसँ पहिने अदहो-छिदहो बुझल रहत तँ एते हल्लुक तँ बनिए जाइ छै जेते सोलहन्नी बिनु बुझलक होइ छइ। समाजमे देखै छी जे किनको सत-सतटा बेटी भेने डीह-डाबर दोसराक हाथ चलि जाइ छैन, तँ किनको सात बेटा भेने गामक अनको सभटा इनार-पौखैर हाथ चलि अबै छैन। धू: अनेरे मनकेँ छिछियबै छी। देखै छी जे एते-दिन बापे बेटाक भिनौजी होइ छेलै आब दुनू बेकतियोमे देखै छी। तखन अनेरे मन किए वौआएब किए ने दुनू बेकती पति-पत्नी बनि बुढ़ाड़ियोमे कोहवर घरक गप करब। पत्नी दिस नजैर उठा धीरज बाजल-

"एमहर कनी सुनू। अखन भने माइयो अँगनामे नै अछि, एकटा बात पुछै छी?"

सासुसँ हटि बुधनीक जिज्ञासा पति दिस बढ़ल। जहिना बाल-बोध बच्चा खिस्सा सुनि माल-जालक बच्चा जकाँ 'घुटरू-घु' सुनि मुँह बाँबि दइ छै तहिना जिज्ञासा भरल बात सुनैले बुधनी मुँह उठा बजली- "की?"

धीरज- "अहाँक पीड़ा (उनैस दिनक) देखि मन महैक गेल जे आब

सन्तान नै हुअए सएह नीक। दूटा भेबे कएल जँ दुनूकेँ दुनू बेकती सेवा कऽ मनुक्ख बना ठाढ़ कऽ देबै तँ एकसँ दू परिवार तँ अबाद हेबे करत किने?”

हाल-बेहाल भेल बुधनी देहक मन मानि गेल जे पतिक विचार सोलहन्नी नीक छैन। हूँहकारी भरैत बजली-

“अहाँ विचारकेँ काटब से दरकार हमरा अछि। तखन तँ पुरुख अपने खेतमे आड़िओ दइए आ तामस उठै छै तँ ढाहियो दइए। तँए अहाँ जानी। हम तँ संगीए ने भेलौं। बड़ हएत तँ एतबे ने, जे कानि-कानि लोककेँ कहबै, संगियाँ मरि गेल हम भुतियाइ छी।”

जिनगीक सचाई जहिना धीरजकेँ तहिना बुधनीकेँ एक-दोसर दिस खिंचए लगल। आगू-ले दुनूक जिज्ञासा बढ़लैन। तही बीच सुधनी खोंइछामे झिंगुनी आ मुट्ठीमे सुखेलहा कड़ची नेने पहुँचली। अबिते चुल्हि लग कड़ची-जारैन रखि पुतोहुकेँ कहलखिन- “कनियाँ, बड़ीकाल भऽ गेल। बच्चा सभकेँ दूध पीएलौं?”

कड़ची रखि ओसारपर झिंगुनी खोंइछासँ उझलि बुधनीक लग बैस सुधनी बाड़ीक खिस्सा पसारि देलैन। बाजए लगली-

“उनैसे दिनमे बाड़ीक दशा बिगैड़ गेल। लत्ती सभ मचान छोड़ि-छोड़ि निच्चाँ उतैर कठुआ-कठुआ गेल। रामझिंमनी पँच-पँच, छह-छहटा जुआ कऽ गाछेकेँ कठुआ देलक। तेते ने खढ़-पात जनमि गेल जे बाड़ीक रुइखे खतम भऽ गेल अछि।”

बाड़ी-झाड़ीक अपसोच सासुकेँ करैत देखि पुतोहु मलसारि दैत बजली- “बाड़ी गेल तँ गेल मुदा घरमे जे दूटा लाल आएल से?”

पुतोहुक बात जेना सुधनीकेँ हिलकोरि देलकैन। अगम पानिमे हेलए लगली- “से तँ अही दुनू लाललेे ने ओ सभ अछि। लालक पतिपाल हेतै तँ ओ सभ ढेर हेतइ।”

पुतोहुक बात सुधनीकेँ धारक पानि जकाँ भँसौलकैन नै समुद्र जकाँ हिलकोरए लगलैन। परिवार तँ खाली मनुक्खे टाक नै होइ छै, घर-दुआर, खेत-पथार, माल-जाल इत्यादि अनेको मिला कऽ बनै छै, जे मनुक्खसँ लऽ कऽ

आनो-आनो वस्तुकेँ एक निसचित सीमामे बान्हि दइ छइ। मुदा एक बान्हमे रहितो तँ सबहक अपन-अपन महत्तो छै आ काजो छइ। जइसँ एक दोसरकेँ जानो-पराण दइ छै आ जिनगियो दइ छइ। बाड़ी-झाड़ी, तीमन-तरकारी तँ मासे-मास दिने-दिने होइत-जाइत रहैए मुदा मनुक्ख तँ से नै छी। तँए मनुक्खे ने मूल भेल। मूलक मूल्य तँ तखने ने बढ़ैत जाएत जखन मूलक सेवा हेतइ। मूलेक पानि ने छीप धरि रस पहुँच हँसबै-खेलबैए। अनेरे मनमे धौजैन करै छी। जेना सुधनीक मन हल्लुक भेलैन। बजली- "कनियाँ, आब तँ दूध थीर भऽ गेल हएत, कहू जे दुनू बच्चाकेँ भरि पोख दूध होइ छै किने। जँ से नै हएत तँ बच्चाक पतिपाल करब कठिन भऽ जाएत। जँ अखनेसँ दूधकट्ट भऽ जाएत तँ सभ दिन खिद-खिदाइते रहत। रंग-रंगक रोग सेहो दबतै, आ अगुओ-पछुओ पकड़तै।"

सासुक बात सुनि बुधनी सकपका गेली। मुदा परिवारेक गार्जनेटा नहि, बच्चाक दादियो ने सुधनी छथिन तँए बाल-बोधक कोनो बात छिपाएब उचित नइ बुझि बजली-

"माए, एकटा तँ बिसैरिये गेल छेलौं, हिनका कहबो ने केने छेलिऐन। ई तँ गपपर गप चलल तखन मोन पड़ल।"

पुतोहुक बातमे सुधनीकेँ मिसियो भरि अनुचित नइ बुझि पड़लैन। बजली-

"से की?"

"पुरनी (पल्हैन) एकहक घोंट कऽ दुनू बच्चाकेँ सेहो दूध पीआ दइ छइ।"

बुधनीक अधखरूए बात सुधनी बुझि गेली। ओ बुझि गेली जे परसौतीक पहिल पूरक तँ पल्हैने ने होइ छैथ। ओना धियान अपनो दिअए पड़त। पल्हैन दस दुआरी होइए। समाजक काज तँ सबहक बरबैरे होइ छै मुदा काजे छोट-पैघ होइए जेकरा लोक पकैड़ चलैए। मुदा खतराक तँ घड़ी अछिए। जँ केतौ (पल्हैनक) हमरा (अपना) काजसँ पैघ काज दोसर ठाम भऽ जाए तखन जँ ओकरा छोड़ि दिअए ईहो तँ नीक नहियेँ भेल। मुदा जे हौउ, एते तँ वेचारी (पल्हैन) चेताइयो देलक जे बच्चाकेँ भरि पोख दूध नै होइ छइ। खाएर अखन

तक जँ बच्चा नीक जकाँ जीब गेल तँ आइए-सँ दोसर जोगार कऽ लेब, जरूरी अछि। बजली-

"अच्छा कनियाँ एकटा बात कहू जे वेचारीकेँ खुआ-पीआ दइ छिऐ किने? वेचारी एहेन पीतमरू अछि जे आइ उनैसम दिन बीत रहल अछि अखन तक अपन सिदहो-बोइननै मंगलक हेन। जखने बच्चा जनमैत अछि तखन माइए-बापटा कैँ कि परिवारो-समाजोकेँ आशा जगिते छइ। मुदा ईहो नीक नै जे जे मुँह खोलि नै बाजए ओकरा सुपतो नै भेटइ। आइ पल्हैन जखने औत, तखने मोन पाड़ि देब, जेना जे हेतै से दाइए देबइ।"

एकटा बच्चाकेँ दूध पीआ बुधनी सासुक कोरामे देलक। दोसर बच्चाकेँ ओछाइनसँ उठा कोरामे लइते छल आकि हको-परास भेल पल्हैन पहुँचली। जेना समैपर नै एने कियो अपनाकेँ दोखी बुझैत तहिना पुरनियोँ बुझलक। अबिते बाजल- "काकी, अबेर भऽ गेल।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी गुमे रहली। मुदा सुधनीक गुमी पुरनीकेँ आरो झकझोड़ि देलकै। झकझोड़ि ई देलकै जे भरिसक मने-मन सुधनीकाकी गुम्हैर रहली अछि। मुदा से नै भेल, भेल ई जे पुरनीक बोली-वाणी, चालि-ढालि, चेहरा-मोहरा जोर-जोरसँ बाजि रहल छल जे पुरनी तेहेन उकड़ू काजमे फँसि गेल छेली जे तन-मन दुनू फ्रीसान भऽ गेल छेलैन। मुहसँ फुफरी उड़ैत थाकल-मारल बटोही जकाँ देखि सुधनी बजली-

"पुरनि, पहिने हाथ-पएर धो कऽ किछु खा लिअ। जखन आबि गेलौं तखन काज हेबे करतै। किए एते परेशान बुझि पड़ै छी?"

सुधनीक बात सुनि पुरनी पौखैरक पानि जकाँ थीर होइत बजली-

"काकी, की कहबैन। दछिनवारि टोल प्रसव करबए गेल छेलौं। उनटा बच्चा छेलइ। दरदे कनियाँ छटपटाइ छेली, बच्चा जनमिते ने छेलैन। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हरल। ओही काजमे एते अबेर भऽ गेल।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली- "अहिना होइ छइ। ने एक्केटा मनुक्ख अछि आ ने एक्के रंग काज हेतइ। मुदा मनुक्खो तँ कम भेदिया नै ने अछि, देखियो-सुनि आ गरो अँटका कऽ भेद तँ बुझिए जाइए।"

हाथ-पएर धोइ पुरनी खाए लगली। खाइते-खाइते बजली- “काकी, अपना बच्चाकेँ भरिपोख दूध नै होइ छै, हमरो कोनो ठेकान नै अछि। से कोनो ओरियान कऽ लोथु। अखन अन्न चटबैबला थोड़े भेलैन जे अन्न चटौथिन।”

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली- “बौआकेँ कहलिऐ हेन जे ओना गाइयो-महींसक दूधसँ काज चलि सकैए मुदा नीक हएत जे बकरीए दूध दिऐ।”

पुरनी-

“हँ-हँ काकी बेस विचार छैन। एना तँ बजारोक दूध एकपर एक छै मुदा ओकर कोन बिसवास। अपना हाथक जे अछि तेकरे ने बिसवास।”

दुनू गोरेक (माइयो आ पल्हैनो) बात सुनि धीरजकेँ भेल जे जखन दूध-ले बकरीक ओरियान करैएक अछि तखन समय गमाएब नीक नहि। जरूरीक जे काज अछि जँ ओकरा पछुआएब आकि अनठाएब ओ परिवारकेँ पाछू धकेलब भेल। जखन बुझै छिऐ जे एक परिवार रहितो, सभ काज परिवारेक रहितो करैक तँ किछु सीमा अछिए। उठि कऽ आँगनसँ निकैल दूधारू बकरी भँजियबैले विदा भेल। समाजो तँ समाज छी। जहिना रंग-रंगक मनुक्ख तहिना रंग-रंगक धनक खाड़ी सेहो बनले अछि। कोनो दरबाजा एहनो अछि जैठाम हाथी-घोड़ा रहैए आ कोनो एहनो अछि जैठाम किछु ने रहैए। मुदा तँए कि गाममे गाए-महींस बकरी नै अछि से तँ अछिए।

धीरजकेँ आँगनसँ निकैलते बुधनीकेँ अपन बात बजैक गर भेटल। गर ई जे एक परिवार रहितो, सभ बात बुझला पछाइतो सभ लग सभ बात सभ नै बाजि पबैए। बजली- “भने माइयो छैथ आ अहूँ छी, जिनगीमे एहेन दुख कहियो ने भेल छल, जे भेल तँए..?”

बुधनीक बात सठलो ने छल आकि बिच्चेमे पुरनी बजली- “कनियाँ, हमर-अहाँक (नारीक) यएह अग्नि परीछा छी। राजासँ रंक तककेँ ई परीछा होइ छइ। तइले दुख-बेकल मनमे रखब तँ दुनियाँ चलत।”

पुरनीक विचारकेँ बुधनी सुनिते द्रवित भऽ गेली। एक संग मनमे अनेको प्रश्न उठि गेलैन। परिवार-ले बच्चा अनिवार्य ऐ दुआरे अछि जे वएह बच्चा बढ़ैत सियान-चेतन होइए, जैपर कुले-खनदान नै परिवार, समाज, देश-दुनियाँ ठाढ़

अछि। एहेन जे मनुक्खक अनिवार्यता छै तैठाम सन्तानक अनिवार्यता तँ छइहे। मुदा जिनगीक तँ कोनो ठेकान नै अछि, बच्चासँ सियान आकि बुढ़ धरि कखनो-कहियो कियो मरि जाइए, तखन? एक बच्चापर आश्रितो तँ नहियेँ रहल जा सकैए। दोसर ई जे जँ बेटा-बेटीकेँ बरबैर मानि लेब, सेहो तँ सोलहन्नी उचित नहियेँ। हँ कोखि-ले सन्तान भेल मुदा सामाजिक जे ढाँचा अछि तइमे बराबरी केना औत। मुदा मनो तँ मने छी। देहमे दुख भेने जे विचारमे अबै छै, सुख भेने बदैल जाइ छइ। अपने दुनू परानी विचार केलौं जे एहेन दर्द (बच्चा जन्मक) दोहरा कऽ नै उठाएब मुदा..? पीड़ाएल मन बुधनीक दृढ़तासँ मानि गेल जे आगू सन्तान नहियेँ हएब नीक। बजली- "अखन तँ सोझहामे ईहो दुनू गोरे छैथे, नीक-बेजा बुझबे करै छथिन।"

बुधनीक बात सुनि पुरनी बजली- "कनियाँ, औगताएल किए छी, अखन पहिने देह-हाथ सक्कत बना लिअ। ताबे बच्चो सकताइए। अबिते-जाइते रहै छी जेहेन अपन परहेज करब, तेहेन जे चाहब से हेतइ।"

पुरनीक बातमे बुधनी जिनगीक बिसवास पौलक। आँखि उठा पुरनीक आँखिपर दैत अपन बेथा कहलक। बुधनीक बेथीत मन देखि पुरनी बाजल- "कनियाँ, जहिना कामिनी फूल महिनामे चारिए दिनक जिनगी पबैए तहिना सन्तानक खेल सेहो अही चारि दिनमे निहीत अछि, पछाइत बुझा देब।"

गप-सप्पकेँ सीमा छुबैत देखि सुधनी पुरनीकेँ पुछलखिन- "तोहर सिदहा केते हेतह। कहुना भेलह तँ तूँ पसारी भेलह, तँए तोहर रस्ता रोकब अपन रस्ता रोकब हएत। दाइए दइ छिअ। अपन नेने जैहह।"

सिदहा सुनि अखन धरिक कएल काजक फल देखि पुरनीक मन खुशी भेल, बाजल- "काकी, हमर खेत-पथार, माल-जाल, राज-पाट सभ तँ यएह छी। दोसर कोन असरा अछि। आइ दिनसँ हिनका ऐठाम खेनिहार सभ आबए लगतैन। मुदा जे काज हम केलिऐन सेहो कियो करतैन।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी सहैम गेली। बजली- "कनियाँ, एक बेर अपना मुहसँ बाजि जाउ, केते हएत। काजक भीर हमरो नजैरमे अछि। अन्हार घर साँपे-साँप होइ छइ। समाजमे जेते हमरो सन लोक दइए तइसँ कम नै देब।"

सुधनीक विचारमे आशा देखि पुरनी बाजल- "बेटाक अदहा बेटीक सिदहा भेल, तँए दोबर नै डेढ़िया भेल। अनका लिए जे हौउ, मुदा हमरा लिए तँ जेहने बेटा तेहने बेटियो भेल।"

मास दिनक कमला-कमल भऽ गेल। सुभ्यस्त समय भेने गामोक चुहचुही ऐ साल नीक अछि। धनमण्डल भेल अछि। बच्चाक निविते जहिना पमरिया, बकूनियाँ, हिजरा-हिजरनीक ढबाहि लागत, तहिना ठको-फुसियाहक ढबाहि लगबे करत किने?

दीपेक पमरिया, कहियो बपहरक नाओंसँ तँ कहयो ममहरक नाओंसँ एबे करत। से कि कोनो एक्के ठामक औत नैहर-सासुर सबतरि पसरत। जीविकाक तँ दोसर साधनो ओकरा छइहो नै ने।

दोसर मास चढ़िते चारि गोरे पमरिया पहुँचल। बेटाक बधैया मांगए। मुदा बेटीक? ❑

वारन्ट

बोरिंग-दमकलक कर्ज चुकौला पछाइतो हरिहर काकाकेँ केसक वारन्ट भऽ गेलैन। ओना वारन्टसँ घबरेला नहि, मुदा एते शंका तँ आबिए गेलैन जे रंग-बिरंगक चेहराक बीच जीयबो तँ असान नहियेँ छी।

सरसैठ इस्वीक रौदीक पछातिक समय। सरकारोक नजैरमे थोड़ेक पानि आएल आ रौदियाएल किसानोक मन ठेहियाएल। अखन धरि जे विचार-सोलहन्नी भाग-तकदीरक बीच जीबैत चलि आबि रहल छल तइमे कनी धक्का लगलै। धक्काक कारणो भेल जे गामक-गाम सून भऽ भऽ मसान जकाँ बनए लगल छल, बनबो कएल। नम्हरो-नम्हरो गाछमे सुखनियाँ लगि गेल, केतेको रंगक फलो आ अन्नो गामसँ लोकेक संग पड़ा गेल। माल-जालक उजाड़ भऽ गेल। खेती-पथारीक चर्चे की, जे मिथिला दार्शनिकक जगह रहल ओइ मिथिलामे दुर्दिनक बीच कुदिन सेहो आबि गेल।

बी.डी.सी. मीटिंग बिहानपुरमे भेल। जेना छोट आँट-पेटक मीटिंग छल तेना खूब जमगर भेल। गामसँ जिला धरिक अफसर-अफसरान एकठाम चारि घन्टा धरि बैसला, कम नै भेल, मुदा तैबीच चाह-पान-जलखैमे जे समय लगल हुअए तइ लगा कऽ।

मीटिंगमे कलक्टर साहैब सभसँ सिरगर रहैथ। ओना अखुनका जकाँ नवतुरिया नहि, उमेरगर सेहो। हुनके बातक प्रतीक्षामे सभ कियो। उठि कऽ तोहफा बाँटैत कलक्टर साहैब अपन श्रीमुखसँ व्याख्यान देलखिन-

“सौनक मेघ जकाँ सरकार लटैक कऽ निच्चाँ आबि गेल, तँए मुँहमंगा बर्खाक झड़ी लगत। इच्छित वस्तु लोककेँ भेटत।”

कहि चारि श्रेणीमे गाम बाँटि देलखिन। तीन श्रेणीक किसान आ चारिम बोनिहार, आ पछाइत कहि देलखिन-

"बोनिहार-ले गाए-महींस, रिक्शा, टमटम इत्यादि भेटतै जइमे तीन हीसमे एक हीस सरकार देत आ दू हीस अपन लगतै। तहिना सीमांत किसानकेँ बोरिंग दमकल तिहाइ छूटपर भेटत। आ जे अढ़ाइ बीघासँ पाँच बीघाक किसान छैथ हुनका चौथाइ छूट भेटत। कहि मुस्कियाइत बैस गेला। धन-बर्खा हुअ लगल। सौनक सतैहिया लादि देलक। खाद छूटपर, बीआ छूटपर, खेतीक औजार छूटपर, गाए-महींसक संग रिक्शा, टमटम, लॉडस्पीकर, चूड़ी दोकान इत्यादि-इत्यादि सभ किछु छूटपर भेटत।"

नाराक संग मीटिंग समाप्त भेल। भोजन-भात चलल, ढेकार करैत जश देत सभ सीमान टपला।

हवा जकाँ समाजमे उठल। गाम-गामक लोक ब्लौक दिस मुड़ियारी देलक। मुदा अनभुआर माल-जाल जहिना डोरी-खुट्टा तोड़ि लंक लऽ पड़ाइए, जे गोटे-गोटे पकड़ेबो करै छै आ गोटे-गोटे वौड़ जाइए, तहिना। खाएर जे हौउ, 'भागल चोरक भगबे नफा।' तैसंग ई बात सेहो जे सभ नइ बुझि पौलक- आम खाइले गाछ रोपए पड़ै छइ। भलेँ गाछ रोपब असान किए ने हौउ मुदा आमक चुनाव कऽ माटि-जगहक चुनाव सेहो करए पड़ै छै, जँ से नहि तँ धनखेतीक कलम जेहने जुतिगर होइ छै तेहने हएत...।

व्याख्यानक क्रममे उधिया कऽ एते लोक भासि गेल जे बुझैक होशे ने रहलै जे गीता 'जिनगी' छिऐ नै कि 'पाठ'। अध्यात्म दर्शने छिऐ आकि जीवन दर्शन। तहिना कलक्टर साहैब विचारकेँ सभ बुझलक जे मीटिंग समाप्त हेतै आ काल्हि जखने ऑफिसक कुरसीपर बैसै जाइ जेता कि धाँइ-धाँइ गाममे बोरिंग-दमकलक ट्रक संग पंजबिया गाइयक पथार लगि जाएत। अकास-धरतीक जे मिलन स्थल- क्षितिज होइ छै ओ हस्तांतरणक होइ छइ। बोरिंग-दमकल बेपारीक घरसँ जहिना औत तहिना पशुपालकक घरसँ पशु औत। तइ दृष्टिएँ मिथिलांचल कौड़ियो बरबैर नहि। सोलहन्नी बहरबैयाक आशा...।

ब्लौक दिस गामक लोक मुड़ी उठबैत पौलक जे पहिने-ब्लौकक

रजिष्टरमे नाओं दर्ज करबए पड़त, ओ कागत आगू बढ़ि ऐगला ऑफिसमे दर्ज भेला पछाइत रजिष्टरमे औत। ओइठामसँ बैंक पठौल जाएत, तेकर पछाइत काजक दौड़ शुरू हएत।

काजोक दौड़ तँ हल्लुक नहियेँ। ब्लौकक चक्करक संग जिलाक चक्कर आ तैपरसँ बैंकक चक्कर धरिमे दू बर्ख समय आ बिनु हिसाबक खर्च जहिना सभ गमौलक तहिना हरिहर काका सेहो गमौलैन।

मुदा तेकर मिसियो भरि चिन्ता हरिहर कक्काकेँ नै भेलैन। चिन्तो केना होइतैन, जहिना हजार हाथक गाछक छिप्पीपर चढ़ला पछाइत जँ धरतीपर खसल वा पड़ल फलपर नजैर पड़ै छै, जेकरा पबैले गाछपर सँ उतरैक समैयो आ भीरो किछु ने बुझि पड़ै छै तहिना मनमे घमौड़ लैत रहैन। समय आ खर्चक फल एकटा टटके जरूर भेटलैन जे जहिना परिवारमे तहिना समाजमे गप-सप्पक क्रम बदलल। रजनी-सजनीक खिस्सामे कमी आएल, खेती-पथारी, माल-जाल इत्यादिक बात समाजक मंचपर आएल। छोट-मोट मीटिंग भी.एल.डब्लू.क माध्यमसँ हुअ लगल। जइसँ लोकक आकर्षण बढ़ल। बैंकक माध्यमसँ कर्ज भेटत आ बैंकेक माध्यमसँ असुलियो हएत। मुदा तैबीचमे जिला स्तरपर सब्सिडी-ऑफिस हएत। जाबे ओ आदेश बैंककेँ नै भेटतै ताबे कटौती नै हएत, लोनक सूदि चलैत रहत। तेतबे नहि, छह मासक बीच जँ अदा नै करब तँ सूदियो मुइरे पकैड़ लेत।

सरसैठक सरकारक मालगुजारी माफक जबरदस असर भेल। लोकमे नव बिसवास जगल जे जइ मालगुजारीक चलैत खेत सभ निलाम होइ छल, से आब नै हएत। जहिना मालगुजारी देनिहार बिसैर गेल तहिना सरकारो अपन कर्मचारीकेँ समेट दोसर फाइल दिस लगा लेलक। ने मालगुजारी देनिहार आ ने लेनिहार रहल। मुदा बैंकमे टटका रसीदक जरूरत पड़ल। मालगुजारी माफ मुदा केते माफ तेकर चिट्ठी ऑफिसेमे लटैक गेल। जहिना सबहक तहिना हरिहरो कक्काक साल भरि टहलैए-मे चलि गेलैन।

हरिहरो काका तँ जिद्दी, तही-ले समाजमे जश-अजश सदिकाल होइते रहै छैन। जश ई होइ छैन जे काजक प्रति जिद्दी छैथ। मुदा काजो तँ उनटा-पुनटा

अछि माने नीको अछि आ अधलो अछि, दुनू तँ काजे छी। जे विपरीतो दिशामे काज करबे करत।

हरिहर काका तेहेन जिद्दी जे रगैड़ कऽ टटका रसीद कटा, बैंकसँ रूपैआक निकासी कराइए लेलैन। पहिल खेप दू साए रूपैआक चेक माइनर एरीगेशनक नाओंसँ देलकैन। जिनगीक पहिल चेक देखि हरिहर काकाकेँ नीक खुशी भेलैन। खुशियो केना ने होइतैन, छोटके चेक ने बड़का चेक बनैए।

बैंकसँ निकैल हरिहर काका माइनर एरीगेशनक भाँजमे विदा भेला। भँजियबैत-भँजियबैत भाँज लगलैन। मात्र दू गोरेक ऑफिस। बोरिंग गाड़ैक ठीकेदारी। चेक जमा करिते रजिष्टरमे दर्ज भेला पछाइत ठीकेदारक नाओं कहलकैन। ठीकेदार तँ ठीकेदारे छी। चाहे-सरकारी हौउ आकि गैर सरकारी ओ तँ सबहक ठीकेदार भेल। एक संग पचासो ठीकेदारी चलि सकै छै, तँए ओहन लोकक भेँट तँ थोड़े कठिन होइते अछि।

मुदा ठीकेदार भेटलैन। भेटते हरिहर काका पुछलखिन- “ठीकेदार साहैब, कहिया तक काजमे हाथ लगत।”

ठीकेदारी शैलीमे ठीकेदार बजला-

“काल्हि नहि, परसू आउ?”

ऐ दौड़-बरहामे पाँच दिनक पछाइत फेर भेँट भेलैन। भेँट होइते पुछलखिन-

“अहाँक भेँटो हएब कठिन होइए तँए एकटा निठाही दिनक नाओं कहू।”

ठीकेदार स्पष्ट कहलकैन-

“मात्र दूटा पलान्ट छइ। अहाँक नम्बर आठम भेल। बीचक काज भेला पछाइत हएत।”

हरिहरो कक्काक तीन गोरेक बैच रहैन। तीनू गोरे अपनामे विचारलैन। काज जहिना अपन तहिना दोसरोक। प्रतीक्षा तँ करए पड़त। पुछलखिन-

“केते समय लगत?”

"महिना दिनमे भऽ जाएत।"

मास दिनक पछाइत तीनू गोरेक संग हरिहरो काका ठीकेदारक खोजमे निकलला तँ पता लगलैन ओ विधान सभा एलेक्शनक भाँजमे चलि गेल छैथ, छह मासक पछाइत औता।

पछुआइत काज देखि सबहक धैर्जक सीमा डगमगाइत तँ रहबे करैन। समय बीत रहल अछि कर्जक सूदि बढ़ि रहल अछि। जहिना समय बेठेकान भऽ गेल तहिना परिवारक काज सेहो बेठेकान भेने आमदनी टुटि रहल अछि। ऐसँ नीक तँ अपन खेत बेच बोरिंग करैबतौं। कोन फेरामे पड़ि गेलौं। अधमड़ू साँप जकाँ बनि गेल छी!

साल बीत गेल। ऑफिसक उनटा-फेर भऽ गेल। जहिना दुनू स्टाफ–अफसर-किरानी–बदैल गेला तहिना ठीकेदारो छोड़ि कऽ पुलक ठीकेदारीमे चलि गेल।

भाँज-भुँज लगबैत मास दिनक पछाइत हरिहर काका फेर काजकेँ पटरीपर अनलैन। कारगर अफसर। काज करैक उग्र जिज्ञासा। दुनू प्लान्टक भाँज लगौलैन। एकटा काजमे लगल आ दोसर माटिक तरमे चलि गेल। भेल ई जे अंधराठाढ़ी इलाकामे लेअर बहुत निच्चाँमे छइ। साढ़े चारि साए फुट बोड़ भेला पछाइत लेअर भेटलै। बोरिंग लोड भेल। लोड भेला पछाइत जखन क्रेसिंग पाइप उखाड़ब शुरू भेल तँ पचास फीट पाइप तरेमे सौकेट फेल कऽ गेलइ। पचास फीट निकलल बाँकी माटिये-मे रहि गेल। तहूमे तेहेन जगहपर गेल जे अफसरो बेवस भऽ गेला। कोनो सस-बस नै चललैन।

अन्तमे बेवस होइत हरिहर काकाकेँ कहलखिन-

"जँ रहि गेलौं तँ जरूर बोरिंग हएत, नइ तँ देखिते छिऐ ऑफिसक काज, जे आइ एतए छी काल्हि केतौ रहब।"

जिज्ञासु हरिहर काका अपन काज बिसैर पुछलखिन- "सर, एना किए अनियमित छइ?"

अफसर- "किए छै तेकर कोनो एक्केटा कारण छइ। रंग-बिरंगक कारण छइ। अनेरे कोन समुद्र उपछैक भाँजमे जाएब, ओकरा छोड़ू। हेबा की चाहै छेलै

से कहै छी।”

ओझरीमे जहिना अमती काँट आ पेरासूत ओझराइ छै तहिना ने मनो ओझराइ छइ। तइसँ नीक हरिहर काका बुझलैन जे जएह कहै छैथ सएह नीक।

पुछलखिन-

“की हेबा चाहै छेलै?”

“होइयोक बहुत रस्ता छै, तँए एकटा कहब उचित नहि, मुदा सही रहने नइ सोलहन्नी तैयो उचित तँ भेबे कएल।”

मानब मुड़ी डोलबैत हरिहर काका कहलखिन-

“एकरा के टोनत?”

अफसर बजला-

“सुनू, नीक होइतै जे ऑफिसेमे कागत-कलमक काज करै छैथ हुनका निसचित समय आ निसचित काजक भार देल जाइन। तइ काजमे की बाधा उपस्थित भऽ रहलैन अछि तेकरा निसचित समैपर देखल जाइन।”

मुड़ी डोलबैत हरिहर काका बजला-

“हँ, से तँ देखिते छिऐ जे काज जेहेन हौउ मुदा ऑफिसक कागत टंच रहैक चाही। नइ तँ दुनियाँ देखै छै जे कोसी योजना सन योजना अरबोक योजना छइ। मुदा राज रौदियाएल अछि! एना जँ सराध-बिआह दुनू दिस योजना चलत तखन केते आशा।”

माइनर एरीगेशनक दौड़-बरहा करैत सालक सिजिन समाप्त भऽ गेल। सिजिनक अर्थ भेल, जे काज माटिक छै ओ सुखारमे हएत। बरसातक समय बोरिंग गाड़ैमे असुविधा होइ छै, धसना खसैक डर रहै छै। ओना, नव तकनीकसँ गाड़ल जा सकैए मुदा दुनूक बीच सामंजस केना हएत से मूल भेल। एक पक्ष बुझैए जे पाइ सरकारक छिऐ, तँ दोसर पक्ष बुझैए पाइ जनताक छिऐ, जेकर गेलै तेकर, हमर की। मुदा की तइसँ काज चलतै? साल भरिक पछाइत बिहानपुरमे तीन बोरिंग-दमकलक संग काजक केंचुआ छोड़लक। किछु गाइयो-महींस गाम आएल। किछु रिक्शा टम-टम बढ़ने सवारीक सुविधा भेल। मुदा

जहिना किछु नव उत्पादित हथियार गाम आएल तहिना तइसँ बेसी लूटैक भूत पछुआ बनि पकड़लक। भोज-भात, बिआह-सराध जोर पकड़लक। बैंकक कर्ज तर पड़लै। जेकरा असुलैमे सख्तीसँ बैंक पेश भेल, जइसँ दिशाहीन समाज डरा गेल! कारोबार कमैत गेलइ...।

बोरिंग गड़ौला पछाइत सब्सिडी ऑफिसक काज एलैन। जिला भरिमे एकटा ऑफिस। जेते काजक भीड़ तइसँ बेसी खेनिहारक भीड़। पहिल दिन तीनू गोरे हरिहर काका हँसीए-ठठ्ठामे ओझरा घुमि एला।

दोसर दिन टेबुलपर जा कहलखिन- “तीन गोरे बोरिंग-दमकल नेने छी, बाजाप्ता बैंकक कागत अछि से सब्सिडीक आदेश देल जाए।”

जेना कियो सुनिनिहारे नहि! तहिना रंग-बिरंगक गप-सप्प चलैत रहल! जहिना स्कूलमे गलती केलाक पछाइत विद्यार्थीकेँ ब्रेंचपर ठाढ़ कऽ देल जाइ छै तहिना टेबुलक आगूमे तीनू गोरेकेँ ठाढ़ कऽ देलकैन।

घन्टा भरिक पछाइत कहलकैन- “परसो आना।”

परसू गेला पछाइत फेर परसू। ऊहो भाँज लगबैत जे किनका सम्पर्कमे अबैए, मुदा परसू अन्त नै भेल। ने ऑफिसमे दैछना देलखिन आ ने सब्सिडीक कागज ऑफिस छोड़लक।

सतासी-अठासीक भुमकम-बाढ़ि राज्यकेँ हिला देलक। दस हजार रूपैआ बैंक लोन माफक आवाज उठल। नव सरकार बनल। लोन माफ भेल।

बैंकक अन्तिम चिट्ठी जखन हरिहर काकाकेँ पहुँचलैन तखन केसक खर्च सहित जमा कऽ देलखिन।

ओही केसक वारन्ट हरिहर काकाकेँ भेल छैन। ❑

दुष्टपन

आने-आन किसान जकाँ रीतलालकेँ सेहो जुआनीए-सँ अपन परिवारकेँ सम्पन्न किसान परिवार बनेबाक विचार मनमे रहलैन। जहिना जीवनक उद्देश्य सभकेँ सम्पन्नता प्राप्त करब होइए तहिना रीतलालकेँ सेहो रहलैन। तेकर कारण छल जे केतेको पुस्तसँ परिवार किसानी-जीवनसँ जुड़ल रहलैन मुदा समैयक फेड़-फाड़क चलैत नहि भऽ पबैत रहैन। समैयोक फेड़-फाड़क अनेको कारण अछि, जेना गाम-गामक भौगौलिक बनावटक दुआरे कोनो गाम धार-धुरसँ अक्रान्त रहैए तँ कोनो गामक माइटिक शक्ति एतेक क्षीण होइए जे नीक उपजा-बाड़ी नहि भऽ पबैत, तहिना कोनो गामक एहेन बनावट होइए जे ऊँचरस जमीन रहने पाइनिक अँटकाउ नहि भऽ पबैत जइसँ समुचित उपजा-बाड़ी सेहो नहि होइए। खाएर जे होइए ओ तँ गाम-गामक बनावटक अपन-अपन गुण-अवगुणक कारणे होइए। मुदा रीतलालक गाम- रोहितपुरक अपन बनावट छै।

रोहितपुरक भौगोलिक बनावट एहेन अछि जइमे तीन खाड़ीक जमीन अछि। गामक एक-तिहाइसँ किछु कम ऊँचरस जमीन अछि, जेकरा भीठ कहै छिऐ, जइमे लोक घरो-दुआर बनबैए, बाड़ियो-झाड़ी बनबैए आ गाछियो-बिरछी लगबैए। तहिना दोसर तरहक माने दोसर खाड़ीक जमीन अछि, जेकरा तीन फसिला सेहो कहै छिऐ आ मध्यम जमीन सेहो कहै छिऐ, ओहन जमीन एक-तिहाइसँ किछु ऊपरे रोहितपुरमे अछि। आ तेसर तरहक माने तेसर खाड़ीक जे एक-तिहाइ करीब अछि, ओ नीचरस अछि, जेकरा चौरी कहै छिऐ। गामक अधिकांश किसान परिवार ओहन छैथ जिनका तीनू तरहक जमीन छैन। ओना, तीनू तरहक जमीन, लग्गी-डन्टासँ नापल, एक्केरंग नहियेँ छैन मुदा कमो-बेश तीनू तरहक जमीन छैन। किनको चौरीए बेसी छैन, तँ किनको मध्यमे जमीन

बेसी छैन माने तीन-फसिला, तहिना किनको ऊँचरस, भीठ जमीन बेसी छैन। खाएर जे अछि ओ तँ सभकेँ अपन-अपन अछि।

सम्पन्न किसान परिवार बनेबाक पाछू रीतलालक संस्कारमे किसानी संस्कार भरपूर छेलैन। ओना, एहेन विचार किसानक सभ परिवारमे रहैए मुदा रीतलालक मनमे पुस्त-पुस्ताइनसँ अबैत विचारधारा छेलैन।

बीस बीघा जमीन रीतलालक पिताजीक अमलमे छेलैन मुदा समैयक चढ़ाव-उतारक कारणे सम्पन्नता नहि आबि सकलैन। सम्पन्नतासँ मतलब ई नहि जे बहुत बेसी जमीन रहल जइसँ उपजा-बाड़ी पर्याप्त भेल। सम्पन्नतासँ मतलब ऐठाम ई जे खेबा-पीबाक अन्न-पानिसँ लऽ कऽ फल-फलहरीक गाछी-बिरछीक संग माछ पोसैक पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ दूध-दहीक लेल गाए-महींसिक पालन धरि अछि।

बच्चेसँ रीतलाल पढ़ै-लिखैमे नीक विद्यार्थी रहला, जइसँ एम.ए. नीक जकाँ पास केलैन। संयोग बनल, रोहितपुर गामसँ पाँच किलो मीटर पर एकटा कौलेज खुजल, जइमे रीतलालकेँ नोकरी सेहो भऽ गेलैन। गामेसँ कौलेज जाइ-अबै छला जइसँ गाममे रहैक अधिक समय भेटै छेलैन। ओना, नव कौलेज रहने दरमाहा सेहो सरकारी कौलेज जकाँ तँ नहियेँ छेलैन, मुदा वेतनक रूपमे दू हजार रूपैआ महीना जरूर भेटै छेलैन। घरपर सँ कौलेज गेने-ऐने आ अपनाकेँ रोजगारी भेने रीतलालक मनमे तृप्ति भइये गेल छेलैन। एक स्तरक शिक्षण संस्था रहितो सभ कौलेजमे सभ रंगक वेतनो भेटिये रहल छल। सरकारी कौलेजमे एक स्तरक वेतन छल आ प्राइवेट कौलेजक वेतन अनेको रंगक छेलैहे। जइ कौलेजमे माने प्राइवेट कौलेजमे पर्याप्त विद्यार्थी छल, जइसँ पर्याप्त आमदनी रहने दरमाहा अधिक भेटै छेलै, आ जइ कौलेजमे विद्यार्थीक संख्या कम छल, तइमे शिक्षककेँ दरमाहो कम छेलैन। मुदा सबहक मनमे ई आशा बनले रहैन जे जाधैर कौलेज सरकारीकरण नहि भेल अछि ताधैर वेतनक कोनो ठेकान नहि अछि। जखन सरकारीकरण कौलेज भऽ जाएत, तखन वेतनमे सुधार भेने एकरूपता भइये जाएत। अही आशासँ सभ शिक्षक काज करै छला। ..दस बरख नोकरी केला-पछाइत रीतलालक मनमे पुन: अपन

पारिवारिक संस्कार, माने किसानी जिनगीक संस्कार धीरे-धीरे जोर पकड़ए लगलैन। ओना, अनका जकाँ रीतलालक मनमे कहियो एहेन नहि भेलैन जे खेतक आड़िपर केना जाएब वा कोदारि-खुरपीसँ काज केना करब। ओ विद्यार्थीए जीवनसँ करैत आबि रहल छला, तँए कहियो मनमे ई नहि भेलैन जे लोक हँसत। ओना, गामो-समाज तँ गामे-समाज छी, जँ पढ़ल-लिखल लोक कोदारि-खुरपीसँ खेतमे काज करै छैथ तँ रंग-बिरंगक कुटी-चौल लोक करिते अछि। जइसँ अधला-सँ-अधला वृत्ति- चोरी, ठकनाइ-फुसियेनाइ आदि छिपल रहैए आ उचित (सही) काज हँसीक विषय बनि जाइए।

दस बरख धरि नोकरीक जीवन बितेला-पछाइत रीतलाल अपन मनकेँ असथिर करैत योजनाबद्ध ढंगसँ अपन परिवारकेँ उठेबाक विचार मनमे ठानि लेलैन। सभसँ पहिने अपन खेतक सीमांकन केलैन। सीमांकन ई केलैन जे केते जमीनमे बास अछि आ केते जमीन चास अछि। बास माने भेल घर-आँगनसँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा, खरिहाँन, बाड़ी-झाड़ी इत्यादि अछि। तहिना चासक केतेक जीमन ऊँचरस अछि माने गाछियो-कलम लगबै-जोकर आ केते जीमन तीन-फसिला अछि आ केतेक जमीन नीचरस अछि माने चर-चाँचर। जइमे रौदी भेने तँ किछु उपजक आशा होइतो अछि बाँकी समय माने अधिक बरखा भेने वा बाढ़ि एने ओकर मालगुजारियो तक नहि ऊपर भऽ पबैत, सभ डुमि जाइए। जइ जमीनक भैल्यू सेहो कम छै। ओना, एहेन संस्कार सेहो किसान परिवारमे सभ दिनसँ आबिये रहल अछि जे अधला-सँ-अधला जमीन किए ने हुअए, मुदा ओकरा बेचब मर्यादासँ हीन अछि। ओहने जँ परिस्थिति परिवारक भऽ गेल जखन कोनो दोसर चारा नहि रहल तखने लोक जमीन बेचै छैथ। ऐ मानेमे बजरूआ संस्कार गाममे नहि प्रवेश केलक। माने खेतक उपज कम भेने ओइ पूँजीकेँ बेचि बैंकमे जमा कऽ अधिक सूदि उपार्जन करी...।

दरबज्जापर बैसल रीतलाल एकाग्र भऽ सोचि रहल छला जे अपन जीवनकेँ समृद्धसँ समृद्धतम अवस्थामे केना बढ़ाएब? प्रश्न तँ जटिल अछिये मुदा केहनो जटिल-सँ-जटिलतम प्रश्न किए ने हुअए, ओकर उपाय नहि अछि वा रस्ता नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। पत्नीकेँ शोर पाड़लैन। लगमे अबिते सुशीला बजली- “किए शोर पाड़लौं?”

गम्भीर दृष्टिएँ गम्भीर मुद्रामे रीतलाल बजला- "बैसू, जीवनक किछु गम्भीर विचार करब अछि।"

ओना, जीवनक किछु 'गम्भीर विचार' सुनि सुशीला अकबका गेली। अकबकाइक कारण भेलैन जे जीवन तँ जीवन छी ओइमे गम्भीर विचार की भेल। रीतलालक लगमे बैसैत सुशीला बजली- "की जीवनक गम्भीर विचार?"

साधारण पढ़ल-लिखल सुशीला, माने स्कूली शिक्षा मात्र मिडिल धरिक छेलैन तहूमे सासुर बसला पछाइत परिवारक काजमे तेना उलैझ गेली जे किछु पढ़ै-लिखैक समैये ने भेटलैन मुदा परिवार चलबैक तँ लूरि, परिवार सम्हारैक ढंग तँ ओतेक भइये गेल छैन जे घर-अँगनाक काज सम्हारि तीनटा बालो-बच्चाकेँ पोसिये रहल छैथ।

रीतलाल बजला- "गम्भीर विचार ई जे परिवारकेँ बेसी-सँ-बेसी नीक केना बनाएब। ओना, परिवार छी, नीक कि बेजाए चलिये रहल अछि आ आगूओ चलबे करत।"

पतिक मुँहक बात 'परिवारकेँ बेसी-सँ-बेसी नीक बनाएब' सुनि सुशीलाक मनमे जेना एक नव चेतनाक जागरण भेलैन। जे सोभाविको अछिए। सबहक मनमे ई इच्छा रहिते छै जे अधिक-सँ-अधिक नीक बनि परिवारोकेँ अधिक-सँ-अधिक नीक बनाबी। ओना, सुशीलोक चेतना सुतल नहियेँ छेलैन, जागृतावस्थामे छेलैन्हे मुदा जे जीवन जीब रहल छेली तइ अनुकूल ठमकलो तँ छैन्हे। जागृतावस्थाक माने भेल वर्त्तमानक जिनगीकेँ सम्हारि आगूक लेल सेहो क्रियाशील बनाएब, से नहि छेलैन। जे जीवन छलैन तेकरे पाछू अपन सभटा समय निकैल रहल छेलैन, जइसँ आगूक कोनो नव विचार व नव काज नहि आबि पबैत रहैन।

जमीनक जहिना-जहिना सीमांकन रीतलाल मने-मन करए चाहि रहल छला तहिना-तहिना जीवनक सीमांकन करैक विचार सेहो मनमे जगलैन। जीवनक सीमांकन करैक विचार मनमे जगिते विचार उठलैन जे भलेँ पति-पत्नीए किए ने होइ, मुदा जँ पहिने पत्नीक सीमांकन करए लगब तँ हुनका मनमे ईहो उठि सकै छैन जे हमर आलोचना कऽ रहल छैथ, तँए नीक हएत जे

पहिने अपने दिससँ सीमांकन शुरू करी। रीतलाल बजला-

“अपन परिवारमे पूर्वजक देल बीस बीघा जमीन अछि, आ आइ दस-बारह साल स्थायी नोकरीक आशामे समय सेहो बीत गेल, दू हजार रूपैआ महीना जे शुरूमे भेटब शुरू भेल ओतबे अखनो भेट रहल अछि। जइ आशामे समय बीता रहल छी ओ पूर्ति हएत कि नहि तेकरो कोनो निसचित ठेकान नहियेँ अछि। तहूमे देखिते छी जे दस-बर्खक बीच महगाइ सेहो केतेक बढ़ि गेल अछि। जेतेक वस्तु दू हजारमे कीनै छेलौं तेते वस्तुक दाम अखन तीन-चारि हजार भऽ गेल अछि। तैसंग परिवारो बढ़ि रहल अछि आ खरचो बढ़िये रहल अछि।”

पतिक विचार सुशीलाकेँ जँचलैन। जँचबो केना ने करितैन। आँखिक सोझमे सभ किछु देखि रहल छेली। सुशीला बजली-

“हँ, से तँ बढ़िये रहल अछि। तइले ते अपने ने किछु करौ पड़त आ विचारौ पड़त।”

रीतलाल बाजल- “अपना जे सम्पैत अछि, माने खेत अछि, जँ ओकरा समुचित ढंगसँ क्रियाशील बनाएब तँ ओही पाछू अपन समैयोक सदुपयोग हएत आ आमदनियोँमे केता गुणा वृद्धि हएत, जइसँ परिवरो चलत आ आगूक लेल पूजियो बनैत जाएत जइसँ श्रमक संग पूजी सेहो सहारा होइत जाएत।”

ओना, रीतलालक विचारमे वैज्ञानिक विचार छेलैन, माने आधुनिक सोच रहैन मुदा सुशीला नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छेली। नहि बुझैक कारण छेलैन जे अखन धरि जे परम्परागत खेती रहल, जे सभ दिनसँ सुशीला देखैत आबि रहल छेली, तही बीच विचार अँटकल छेलैन। आगूक नव दिशा नहि देखि सुशीला अपन हीया हारि बजली-

“हम कहुना भेलौं तँ स्त्रीगणे ने भेलौं, पुरुख-पात्र तँ अहीं ने छी। बेसी-सँ-बेसी हम अहाँक पीठपर रहब, सहए ने। करब तँ अहीं ने।”

पत्नीक बात सुनि रीतलालक मनमे एकटा सहयोगीक सहयोगक आशा जगलैन। जइसँ मनमे भेलैन जे करैबला लोक तँ असगरो किछु-सँ-किछु कऽ सकैए, तैठाम जँ एकटा सहयोगी भेट जाए तखन तँ आरो ने किछु कऽ सकैए।

रीतलाल बजला- "आजुक जे दुनियाँ अछि ओइमे एहेन-एहेन तकनीकी साधन आबि गेल अछि जे जइ जमीनमे पाँच मन अन्न उपजैए ओइमे पचीस मन उपजत। जरूरत अछि ओकर समुचित बेवस्था करैक। अपनो देखिये नहि रहल छी बल्कि कइयो वएह रहल छी जे बाप-पुरुखा करइ छला।"

अपना जनैत रीतलाल वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखलैन, मुदा सुशीला नीक जकाँ नहि बुझि सकली। असंमजसमे पड़ल सुशीला बजली-

"से केना करब?"

रीतलाल बजला-

"जीवनमे स्वतंत्रसँ किछु करैसँ पहिने मनुष्यकेँ अपनाकेँ स्वतंत्र बनबए पड़तै। जाबे तक अपनाकेँ स्वतंत्र नहि बना लेत ताबे तक अपन काजो आ अपन विचारोकेँ स्वतंत्र रूप सँ आगू नहि बढ़ा सकैए।"

ओना, स्वतंत्र हएब केकरा अधला लगै छै जे सुशीलाकेँ लगितैन। मुदा लोके वा आने जीव-जन्तु केना परतंत्र अछि से सुशीला बुझिये ने पेब रहल छेली। अपना जनैत ओ अपनाकेँ स्वतंत्र बुझिये रहल छेली। किएतँ अपना जनैत अपन जे पारिवारिक काज छेलैन, ओ स्वतंत्र ढंगसँ करिते आबि रहल छेली। ओना, चिड़ैयो-चुनमुन पिंजराक बाससँ खुला अकासमे भ्रमण करब नीक बुझिते अछि मुदा ओकरामे ओ चेतना नहि छै जे स्वतंत्र-परतंत्रक रूपकेँ बुझत। सुशीला बजली-

"की स्वतंत्र आ की परतंत्र?"

रीतलाल बजला-

"काल्हि जा कऽ कौलेजक सेक्रेट्रीकेँ कहि देबैन जे हम आब कौलेजक काजमे सहयोग नहि करब।"

कौलेजक नोकरी छोड़ब सुनि सुशीला बजली-

"आजुक परिवेशमे नोकरी भेटब कठिन अछि तैठाम अहाँ भेल नोकरी छोड़ब से अपना सन हएत..!"

रीतलाल बजला- "अपना सन तखने हएत जखन अपन विचारानुसार

अपन काज बना अपना जीवनकेँ ठाढ़ करब। देखिते छी जे दिनक समय ओही पाछू माने कौलेजक पाछू बीत जाइए, रातिमे घरपर रहै छी, जे समय घरसँ बाहर काज करैक छीहे नहि, तखन अपन काज केना करब?"

पतिक बात सुनि सुशीला गुम भऽ गेली। किछु समय गुम्म रहला-पछाइत बजली-

"अपना जे सोहंतगर लागए सहए करू। मुदा..!"

रीतलाल बजला-

"मुदा-तुदा किछु ने, बहुतो कौलेजमे देखि रहल छी जे नोकरीक लोभमे शिक्षक अपन जिनगी बीता लेलैन मुदा ने कौलेजक स्थिति बदैल सकल आ ने शिक्षकक संग कर्मचारीक जीवन स्तर सुधैर सकल। जीवन-जीवन छी, तहूमे बुधिजीवी मनुक्खक तँ आरो ओहन छी जे किछु-सँ-किछु कऽ सकैए। केकरो मनुक्ख जीवन एकेबेर भेटै छै, तेकरो जँ पानिमे बहा लेत तखन ओ जीवन की भेल?"

सुशीला बजली-

"अपन जे मन मानए सहए करू। मुदा हम एते कहबे करब जे मनक उद्वेगमे एहेन विचार उठि रहल अछि।"

रीतलाल बजला-

"मनक उद्वेग जेकरा कहै छिऐ ओ सभटा अधले थोड़े होइए। मनेक उद्वेगमे ने लोककेँ किछु करैक लालसा सेहो जगैए आ किछु करबो करैए। अपने परिवारमे, आइ हम नोकरीकेँ एते महत् दइ छिऐ, मुदा जे नोकरीक फल भेट रहल अछि ओइसँ परिवार चलि सकैए? जखन परिवार चलि नहि सकैए तखन आगूक उन्नैत तँ मात्र कल्पना हएत। पिताजीक अमलदारी तक जे प्रतिष्ठा परिवारक छल आ जीवन स्तर छल, ओतबो आइ अछि? जखन नहि अछि, तखन अपनो दिस ने देखए पड़त जे अपन श्रमशक्ति केतौ-ने-केतौ हेराएल अछि।"

रीतलाल कौलेजक नोकरी छोड़ि देलैन। अपन सम्पैतिकेँ नीक जकाँ सीमांकन केलैन। सीमांकन केला-पछाइत चतुर्दिक उन्नतिक रस्तापर नजैर

दौड़ौलैन। आगू नजैर उठिते पहिल चीज देखलैन जे जहिना सभ अपन पदकेँ प्रतिष्ठित रूपमे देखै छैथ तहिना ने अपनो देखि रहल छी। की मनुक्खक प्रतिष्ठा यएह भेल जे उच्च पदपर आसीन भऽ गेलौं, मुदा मनुक्खक जे गुण अछि, जेना नीक आचरण बना जीवन-जापन करब से रहबे ने कएल, तखन ओ प्रतिष्ठे की भेल।

ओना, नव सिरासँ कोनो परिवारकेँ उठैमे साधनक जरूरत, माने पूजीक खगता सेहो पड़ैए, मुदा योजना बना एक्केबेर जँ सभ दिशामे बढ़ए चाहब तखन जँ पूजीक ओरियान कोनो रूपेँ कैयो लेब तैयो काजक ओत्ते बढ़ोत्तरी भऽ जाएत जेकरा सम्हारब कठिन अछिए। तँए नीक हएत जे एक-एक मुद्दाकेँ पकैड़, बेरा-बेरी सुदृढ़ करैत आगू बढ़ी, जइसँ दुनू लाभ हएत। काजमे सुदृढ़ता एने आमदनी सेहो बढ़ैत जाएत आ काजक बेवहारिक अनुभव सेहो होइत जाएत।

मन असथिर करैत रीतलाल विचारए लगला जे जइ काजमे पूजीक ओते आवश्यकतो नहि अछि आ अपनो किछु ओहन पूजी अछिये जे बेकार भेल नष्ट भऽ रहल अछि, पहिने तेकरा जँ उपयोगमे आनि क्रियाशील बनाएब, तँ ओ बेसी नीक हएत। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि मनकेँ असथिर करब। मन चेतनहीन अछि जेकरा चित्त (चेतना) चेतनशील बनबैए, तँए चित्तकेँ असथिर करब आवश्यक अछि। जखने चित्त असथिर हएत तखने मनक क्रिया सेहो असथिर हेबे करत।

योजनानुसार रीतलाल पहिने अन्नक खेती करैक विचार तँइ केलैन। अन्नक खेतीक योजना बनैबते रीतलालक नजैर खेतपर गेलैन जे अढ़ाइ बीघा खेतमे खरहोरि अछि जेकर कोनो उपयोग आब नहि रहल। ने खढ़क जरूरत लोककेँ रहलै आ ने खरहोरिक खेतसँ समुचित उपजे आबि रहल अछि। अगर ओकरा तोड़ि, माने खरहोरिकेँ उपटा अन्नक खेत बना लइ छी तँ सइयो मनसँ ऊपर अन्नक पैदावार हएत। ऐठाम दूटा प्रश्न विचारणीय अछि। पहिल, जे-जे खेत उपजाउ अछि माने जइमे अन्नक खेती होइए ओकरा सभकेँ समुचित ढंगसँ बढ़ाबी। समुचित ढंग भेल, समयपर ओकरा जोत-कोर करैत समयपर अबादब। अबादैक पाछू सेहो एकटा प्रश्न अछि जे परम्परागत बीजकेँ बदैल,

उन्नैतशील बीजक उपयोग करब। चिन्तन क्रियाक बीच रीतलालकेँ जेना नव-नव दृष्टिकोणो आ नव-नव विचारो मनमे जगिये रहल छेलैन...। तैबीच रीतलाल अनायासे पत्नीकेँ कहलैन- “अखन धरि जे जिनगी बना जीब रहल छी ओइमे नवीनता आनए पड़त। जखन जिनगीक क्रियामे नवीनता औत तखन ने समैयक संग चलि सकब।”

ओना, सुशीला सोल्होअना पतिक काजो आ विचारोपर ओंगठल छेली तँए ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजली।

सुशीलाकेँ चुप देखि रीतलालक मनमे उठलैन जे खाली खढ़े-खरहोरिक बात नहि अछि। कहैले बीघा भरि-भरि दूटा पोखैरियो अछि मुदा अइसँ केतेक आमदनी भऽ रहल अछि। तहूमे समय बदलने माने चापाकल भेने ओकर महत् आरो घटि गेल अछि। तहिना गाछी-कलम सेहो अछि।

तीन बीघा जे पहिलुका गाछी-कलम छेलैन, जे गाछ सभमे पुरान भेने फड़बो कमि गेल छेलैन आ अधिकांश गाछ बिमरियाह सेहो भऽ गेल छेलैन, ओकरा उपटौने एतेक पूजी भइये जेतैन जे अपन विचारक अनुकूल अपन सम्पैतकेँ क्रियाशील बना लेता।

तीन बीघा गाछी-कलमकेँ उपटा जे बीघा भरिक नव सिरासँ कलम लगौलैन ओ फड़ब शुरू भेल।

दस साल बीतैत-बीतैत रीतलाल गामक एकटा सम्पन्न किसान बनि अपनाकेँ स्थापित कऽ लेलैन।

गामो तँ गाम छी, रंग-बिरंगक लोकक बास भूमि सेहो छीहे। रीतलालक गाछी-कलमसँ सटा आन-आन किसान तेना हरोथ बाँस रोपि देलकैन जे गाछक बढ़बाड़ियो रूकि गेल आ फड़ब सेहो बन्न भऽ गेल। पत्नीकेँ रीतलाल कहला-

“यहए छी समाज जे दुष्टपनसँ भरल अछि।” ❑

केकरो कियो ने

एक तँ ओहुना मधुबनी जाइसँ पहिने पत्नीसँ खूब रक्का-टोकी भेल। रक्का-टोकीक कारण छल एकटा मुकदमा। रक्का-टोकी होइत-होइत रका-टोक हुअ लगल। आ ओहो एते बढ़ि गेल जे दुनू परानी दू दिस भऽ गेलौं। माने ई जे पत्नी बजली-

“हमरा एहेन ठाँठ महींस आकि ठाँठ गाए पोसैक जरूरत नइ अछि जे भरि दिन ओकरा पाछू लागल रहू आ दूधक बेरमे फूल सुँघा देत।”

एक मानेमे पत्नीक विचार जँचल। जँचल ई जे गाए आकि महींस कियो पोसैए धनक उगाही बुझि। ओ भलेँ कम दुधगैर हुअए आकि बेसी ई दीगर बात भेल। मुदा साफे किछु ने हुअए ई तँ कनी कठाइन भइये गेल। मुदा पत्नी बाजल छेली एकटा केसक उदाहरणमे।

आइसँ तीस बर्ख पहिने गाममे दू गोरेक झगड़ाक पनचैतीमे पंच बनि गेलौं। ले बङौर! गुर केतौ आ पह केतौ पड़ि गेल! जइ झगड़े पनचैतीमे गेल रही ओकर चर्च पंच सभकेँ अबै दुआरे पछुआएले छल तइसँ पहिने गामक दोसर गप उखैड़ गेल। जेते गोरे पनचैतीमे पहुँचल रही तहीमे दू पार्टी बनि गेल। दू पार्टी जँ विचारे धरि रहैत तखन तँ कोनो बात नहि। गाम-घरमे एना होइते छइ। कोनो घटना गाममे किए ने हुअए, जहाँ-तहाँ दू गोरे–चारि गोरेक बीच कहा-कही होइते अछि, भलेँ ओइ कहा-कहीक कोनो कारगर परिणाम नइ निकलौ। मुदा एतए से नहि भेल। दुनू पार्टीक बीच हाथा-बाँही होइत थापर-मुक्का चलि गेल। धरमागती जँ पुछी तँ मारि बेसी हमरे पार्टी माने हम जइ पार्टीमे रही सएह सभ खेलक। मुदा बेकतीगत रूपमे हम बेसी हाथ चलेलौं, हाथ कि चलेलौं जे दुनू हाथमे ऑंगुरक मुक्का बान्हि बेसुमार चलेलौं जइसँ एक गोरेकेँ बेसी चोट लगि

गेलै, वएह केस कऽ देलक, सएह केस आइ तीस बर्खसँ लड़ैत आबि रहल छी। लड़ैत की आबि रहल छी, मधुबनी जाइ-अबै छी। कहियो हाकिम नहि, तँ कहियो पेशकारक हड़ताल, कहियो वकीलक वहिष्कार, तँ कहियो चपरासीक हड़तालक दुआरे कोर्ट लगबे ने कएल, जइसँ तारीक-पर-तारीक होइत-होइत आइ तीसम बरख बीति रहल अछि।

मासे-मास तारीक भेने परिवारक अनिवार्य खर्चमे, माने मासक बजटमे केसक खर्च साए रूपैआ जोड़ाइये गेल अछि। ओना, परिवारमे पाँच-दस, पचीस-पचास रूपैआक केते काज खगि जाइए से बरदास करैत आबि रहल छी।

पत्नीक प्रश्नक उत्तर देब जरूरी छेलएहे। जँ से नहि देब तखन तँ पत्नीक संग हारबे ने भेल। आ जखने घरमे पत्नीक जीत हएत तखने ने पुरुख-जुइतिक घर मौगी-जुइतिक भऽ जाएत वा पुरुखाह घर मौगियाह भऽ जाएत। आ जँ से हएत तँ गाम-समाजक मुँह रोकि देबै, कहबे करत किने- 'फल्लॉं घर मौगियाहक घर छी।' मनमे कोनो ताले-मेल नइ बैइसए। पछाइत घाल-मेल करैत बजलौं-

"केस-मोकदमाक हाल अहाँ थोड़बे बुझबै ओ इज्जतक लड़ाइ छी, बिनु लड़ने केकरो इज्जत होइ छइ।"

आमक गाछक सराइर हुअए आकि लत्तीक फोंकगर मुड़ी, ओकरा तोड़ि देने जहिना मुड़िये बदैल जाइए तहिना भेल। पत्नी बजली-

"हमरा ऐ केससँ कोनो मतलब नइ अछि, सात गोरे फँसल अछि, जे गति ओइ छबोकेँ हेतै से हमरो हएत।"

बजैक क्रममे तँ पत्नीक विचार नीक छेलैन्हे। किएक तँ सम्मिलित परिवार ने छी। दुनू गोरे मिलि कऽ ने ठाढ़ो केने छी आ आगू मुहेँ चलाइयो रहल छी। मुदा जँ केसक पैरवी छोड़ि देबै तखन तँ अनेरे गैर-हाजिरीमे वारंट हएत, जब्ती-कुर्की हएत! आ जँ कहीं पुरान केस बुझि हाकिम फैसले लिखि देलैन तखन तँ सजो भऽ सकैए। तैकाल मे हमर साती पत्नियो पूरि पौती आकि अपने पुरए पड़त?

ओना, एते चलाकी दुनू परानीक गप-सप्पमे कइये नेने छेलौं जे पत्नीकेँ बेतुकार उत्तर नहि दए, कहने रहिऐन जे मधुबनीसँ ऐ बेरक तारीक केने अबै छी, तखन निचेनसँ दुनू परानी विचारि लेब।

अपने मधुबनीए-मे रही। जेठुआ लगन जखन एहेन अछि, तखन फगुआ मासक फागुनक लगन केहेन भेल छल से सभकेँ बुझले अछि। अपना बुझल नइ छल जे औझुका लगन अपनो लगल अछि, तँए थोड़े निचेन रहबे करी। आठ-नअ बजे रातिमे जखन घरपर पहुँचलौं तँ देखलिऐ जे सौंसे अन्हार पसरल अछि। घरमे एकोटा मनुक्ख नहि। गुण अछि जे गाए-महींस नइ पोसने छी, एकटा जँ पीलिया कुत्ता अछियो तँ ओकरा-ले समाजे खुजल अछि। ओना, जखन दरबज्जापर पएर देलौं तखन ओ दरबज्जाक आगूमे अन्हारेमे बैसल छल। हारि-थाकि निर्णय केलौं जे अनका भरोसे लोक केते दिन जीब सकैए, से नै तँ भेल ते चारिटा रोटी बनाएब अछि। अनेरे तीमन-तरकारी बनबैक भाँजमे की पड़ब से नै तँ जखन अपने उपजौल तरकारी अछि, तखन किए ने ओकरा उसैनिये वा पकाइये कऽ पुष्टगरसँ चहटगर सन्ना बना ली। एते करब कोन असाध भेल।

तेसर दिन हहाएल-फुहाएल पत्नी धिया-पुताक संग नेने पहुँचली। बजलौं- “लगन कटबए केतए गेल छेलौं?”

पत्नी बजली-

“बहिनक बेटीक सासुर। बिआह छेलइ।”

मनक विचारकेँ मनेमे दाबि, मुँह बन्न कऽ लेलौं। किएक तँ मनमे आबि गेल- ‘च-र-र-अ सरोकारे करहर मौसा।’ ❑

हुसि गेलौं

हाटक काजे बिस्टौल विदा भऽ सड़कपर एलौं कि दुनू परानी जागेसर भाय टेम्पूपर पास करैत रहैथ। केतबो किछु भेल, लोक केतबो बदलल मुदा मिथिलाक माटि-पानि अखनो वएह अछि जे सभ दिनसँ अछि। बाहरसँ अबैत कियो परदेशी घर लग होइत पास करता, अपने सड़कपर रहब आ हुनका टोकबो ने करिऐन तखन गामक जँ कियो हेराएल-भुतियाएल आबैथ आ हुनका रहैक ठौर नहि भेटैन तखन गामक नाक-मुँह केहेन बनत। भाय! मिथिला छी, मिथिलाक अपन साजो-श्रृंगार अछि आ अपन मुहौं-कान तँ अछिए। चारि लग्गा टेम्पू पाछुए छल कि जागेसर भायकेँ चिन्ह गेलिऐन। उमरदार छथिए। माने अपनासँ कहुना बीस बरख जेठ हेता, देखिते कहलयैन- “भाय, दुनू परानीकेँ सम्मिलिते गोड़ लगै छी।”

ताबे टेम्पू लग आबि रूकि गेल। जागेसर भाय बजला- “आब हमहूँ गामेमे रहब। पहिने अपन घर-घराड़ीक दर्शन कऽ लेब जरूरी अछि, पछाइत निचेनसँ दुनू भाँइ बतियाएब।”

हाटपर विदाहे भेल रही, भीतरे-भीतर मनमे ईहो होइ छल जे घन्टा भरिक हाट अछि, जँ रस्तेमे समय बरदा जाएत तखन काजो हुसिये जाएत। मुदा संजोग नीक रहल जे जागेसर भाय अपने समय लगबैले तैयार नहि होइत बजला- “अखन काजक बेर अछि, तोहूँ काज करए जा आ हमहूँ जाइ छी, निचेनमे साँझू पहर निचेनसँ गप करब।”

जागेसर भाइक बात सुनि अपनो जान हल्लुक भेल, मुदा दुनू परानी जोगेसर भाइक चेहराक रूप किछु-किछु विकृत्ति जकाँ बुझि पड़ल, जइसँ मनमे खोंच-खरोंच जकाँ जरूर उठए लगल मुदा जागेसर भाय अपने साँझुका समय

बना लेलैन। अखन जइ काजे निकलल छी तइसँ अलग जँ मनकेँ दोसर दिस बढ़ाएब तँ हाटक काजमे गड़बड़ी अबैक सम्भावना बनियेँ जाएत। जे काज केनिहार नहि अछि ओकरा लिये ने दिन-राति एक्केरंग होइए मुदा जे काज केनिहार अछि तेकरो लिये तँ होइते अछि जे करै छी कोनो काज आ मनमे नाचि रहल अछि कोनो दोसर काज। तँए, जखने आँखि काजपर गड़ए आ हाथ करए लगए तखने मनकेँ समेट ओइमे एकाग्र करी। जँ से करब तँ काज होइक संग बिसवासो बनिते अछि मुदा से नहि भेने दुइर हेबाक सम्भावना बनैए आ बिसवासक तँ कोनो बाते नहि।

डेढ़े दू किलो मीटरक दूरीपर बिस्टौल गामक हाट अछि, तँए पएरे विदा भेल रही। थोड़बे आगू बढ़लौं कि जागेसर भाय पुन: मोन पड़ि गेला। मोन पड़िते विचार उठल जे जागेसर भाय घर-घराड़ी की देखता, ओ भरिसक बेचैक खियालसँ एला अछि। जेकरा जेतेक पाइ होइ छै ओकरा ओते पाइयक भूख बढ़िते अछि। तहूमे बैंकक सूदि जोड़निहारक हिसाब तँ आरो बदैलिये जाइत अछि। ऐठाम, माने गाममे जागेसर भाइक घरक तँ कोनो थाह-पता नहियेँ छैन, खाली घराड़ी बँचल छैन। ओना, बिनु घरे घराड़ियो केना भेल? हँ! एते जरूर भेल जे जोति-कोरि कऽ बाड़ियो-चौमास बनौल जा सकैए आ ऊँचगर रहने घरो बनौल जा सकैए। फेर अपने मनमे उठल जे जेतेक पाइबला लोक छैथ, हुनका ओतेक पाइयक भूख बढ़ै छैन, सेहो सोल्होअना केना मानल जाए? जखन संतोष-असंतोष दुनू जीवनक खास भावना छी तखन दुनूकेँ ने बराबरीक हिस्सा हेबा चाही। जेकर माने भेल, अदहा लोक ओहन भेला जिनका पाइ रहितो पाइक भूख बढ़ै छैन आ अदहा लोक ओहन भेला जिनका पाइ भेने सवुर–संतोष–होइ छैन जइसँ पाइयक अभूख होइ छैन...। मनमे ई विचार चलिये रहल छल कि दोसर विचार अपने आबि धमकल। दोसर विचार ई आबि धमकल जे एहनो आदमी तँ होइते छैथ जिनका पाइ भेने सवुरो भइये जाइ छैन। माने जे जइ निमित्ते पाइक भूख जगल आ ओ निमित्त पूर्ति भऽ गेला पछाइत, माने खाहिंस पूर्ति भेने भूखो मेटा जाइए। तैबीच मनमे तेसर विचार जगि गेल। जगि गेल ई जे कोनो निमित्त जीवनोपयोगियो होइए आ कोनो नहियोँ होइए, तखन? तैबीच हाटपर पहुँच गेलौं। गमैया हाट, खाइ-पीबैक वस्तु छोड़ि आन किछु रहिते

ने अछि। चारिम दिन फेर लगबे करत। भेल तँ तीन दिन धरिक खाइ-पीबैक वस्तु कीनैक अछि, तँए बेसी झरो-झमेल नहियेँ अछि।

हाटक काज लगले भऽ गेल। समैयेपर अपना ऐठाम पहुँच गेलौं। घरपर पहुँचते जागेसर भाय फेर मोन पड़ि गेला। साँझु पहर निचेनसँ गप-सप्प करैक बात कहने छला। अपन घर ऐठाम अछि आ हुनकर घराड़ी पाँच बीघा हटल छैन तखन गप-सप्प केतए हएत?

ओना, जागेसर भायकेँ गाममे जेते लोक चिन्है छैन तइसँ बेसी अनचिन्ह छैन। चिन्ह-अनचिन्हक माने भेल जइ दिन जागेसर भाय गाम छोड़ि दिल्ली गेला तइसँ पहिलुका लोक आ जेकर जन्म जागेसर भाइक गेला पछाइत भेल वा बिसैर गेला से लोक। मुदा समाजमे (माने गामक समाजमे) एहनो तँ होइते अछि काजे एकठाम रहितो चिन्ह-अनचिन्ह सेहो बनल अछिए। जेकर अनेको कारणो अछि। बेवहारिक रूपमे झगड़ा-झंझट भेने वा कारोबारक सम्बन्ध नहि रहने चिन्ह-अनचिन्ह सेहो बनिते अछि। तैसंग जातीय वा साम्प्रदायिक विचार सेहो दूरी बनौनहि अछि। एक जाइतिक बीच केते एहेन बेवहार अछि जे दोसरमे नहि अछि। जइसँ ओ अनचिन्ह बनबे करैए। खाएर जे जइ गाममे अछि ओ ओइ गाममे रहह। ओ ओइ गौंआँक प्रश्न भेल तँए अपन-अपन बुझता।

जहिना कोनो नमहर कारखानामे वा शहर-बजारमे वा गामे-घरमे हजारो-लाखो लोकक बीच जँ कोनो बेकती-विशेषसँ पूर्व परिचय रहल वा केतौ- जेना गाड़ीमे, कोनो दोकानपर वा कोनो ऑफिसमे किनकोसँ कनियोँ गप-सप्प भेल रहल वा बेवहारिक रूपमे कोनो काजे भेल रहल तँ हजारो-लाखोक बीच सहयोगीक परिचय भइये जाइए, तहिना जागेसर भायकेँ सेहो भेलैन। गाम अनचिन्हार बुझि पड़लैन आकि अपने अनचिन्हार बुझि पड़ला से ओ जानैथ, मुदा सूर्यास्त भेला पछाइत दुनू परानी पहुँच गेला।

जागेसर भाय तँ सहजे गौंएँ छिया आ चिन्हो-पहचिन्ह अछिए। ओना, अनठियो-अनगौंआँकेँ तँ लोक अपना ऐठाम पाँच कौर भोजन आ पाँच बीत जगह सुतै-बैसैले दइते छैथ। तइले मनमे कोनो मलिनता राखब उचित नहि। दुनू परानी जागेसर भायकेँ देखिते बजलौं- “आउ, आउ भाय! हमरो भाग्य जगल

जे अहाँ सन गौंआँ दरबज्जापर एला।"

ओना, जागेसर भाइक जेते मन उछटगर हेबा चाही से नहि रहैन। मुदा उपायो तँ दोसर नहियेँ छेलैन। मन उछटगर नइ रहैक कारण अपन दिल्लीक मकान सभ नजैरमे नाचि रहल छेलैन आकि की, से ओ जानैथ। जागेसर भाय बजला- "जाबे अपन ठौर-ठेकान रहैक नहि भऽ जाइए ताबे तोरे ऐठाम रहब।"

हूँहकारी भरैत बजलौं- "ई तँ अपन घर बुझू भाय! जेते दिन रहैक मन हएत तेते दिन रहब।"

तैबीच अपन पत्नियोँ आ मैझली बेटियो दरबज्जापर आबि गेल। बेटीकेँ कहलिऐ- "बुच्ची, चाचीकेँ अँगने लऽ जाहुन, आ रहैक गर लगा दहुन।"

जागेसर भाइक पत्नी- सावित्रीकेँ संग नेने पत्नियोँ आ बेटियो आँगन गेल। आँगनसँ एकटा लोटामे पानि नेने दरबज्जापर अबैत बजलौं-

"भाय, समान सभ भने चौकीपर रखि देलिऐ। होउ, पहिने पएर धोउ, पछाइत गप-सप्प होइत रहत।"

आँगनमे पत्नी एते सतरकी करबे केली जे चाह बना दरबज्जापर नेने एली। पत्नीक हाथसँ चाहक दुनू कप पकड़ैत दहिना हाथक कप जागेसर भाय दिस बढ़बैत बजलौं-

"भाय, पहिने चाह पीब लिअ, ताबे जलखैक ओरियान सेहो होइए। जलखै केलाक पछाइत फेर चाहो पीब, पानो खाएब आ निचेनसँ गपो-सप्प करब।"

तैबीच सुनरलाल सेहो अनठियाकेँ भँजियबैत दरबज्जापर पहुँचल। सुनरलालक पैछला पीढ़ी, माने बाप-दादाक सम्बन्ध जागेसर भाइक परिवारक संग सात पुस्तसँ रहल छेलैन। जे जागेसर भायकेँ सेहो बुझल छैन आ सुनरलालकेँ सेहो बुझले छैन। मुदा जागेसर भाइक अमलदारीमे सम्बन्ध, माने दुनू परिवारक बीचक सम्बन्ध ने टुटल छल आ ने नइ टुटल छल, तँए अधटुटू जकाँ बनियेँ गेल अछि। सम्बन्ध टुटबक माने बेवहारिक रूपमे सम्बन्ध बिच्छेद भेल आ नइ टुटबक माने जे स्थान-विशेष बदलने सम्बन्धमे बाधा उपस्थित हएब। सुनरलालकेँ अबैसँ पहिने जागेसर भाय तँ चाह पीब शुरू कऽ नेने छला

मुदा अपने ऐ ताकमे रही जे मुँहमे चाह गेला पछाइत जागेसर भाय किछु बजबो करै छैथ, माने चाहक नीक-बेजाए आकि चुप्पे रहै छैथ। तइ बीच सुनरलाल पहुँचल छल। सुनरलालकेँ देखिते बजलौं-

"एके कप चाह छह, अहीकेँ बाँटि दुनू भाँइ पीबह।"

कहि चौकीपर चाह रखि अपने दोसर कप आनए आँगन गेलौं। सुनरलालक जहिना देहक पानि काज करैमे जलजल करै छै तहिना मुँहक पानि बजै-भुकैमे सेहो छै। जइसँ बजैमे फरकोर अछिए। मुदा चाह बाँटि कऽ पीब, तइ सम्बन्धमे सुनरलाल किछु ने बाजल। भऽ सकैए जे जागेसर भायकेँ अनठिया माने गामसँ बाहर रहनिहार बुझि नइ बाजल आकि अपनत्वक विचारसँ नहि बाजल ओ तँ सुनरेलाल बुझैत हएत, मुदा बाजल किछु ने।

एक घोंट चाह पीब सुनरलाल बाजल-

"जागे भाय! पुस्तैनी सम्बन्ध रहितो, दुनू भाँइ दू ठाम रहै छी तँए मुँह-मिलानी जकाँ नहियेँ अछि, मुदा जेना हमर पिताजी आ अहाँक पिताजीक बीच सम्बन्ध छल जे संगे-संग बेसी काल एकठाम रहै छला, तेना तँ हमरा अहाँक बीच नहियेँ अछि मुदा दुनू परिवारक बीच सम्बन्ध सात पुस्तक रहल अछि।"

जागेसरो भायकेँ अपन परिवारक इतिहास बुझले-सुनले छैन तँए हूँहकारी भरैत बजला-

"ओ दिन-दुनियाँ किछु और छल, आइक दुनियाँ किछु और भऽ गेल अछि, मुदा बीचमे विचारशील मनुक्ख सेहो अछिए जे अपन वर्तमानकेँ नजैरमे रखि भविसक बाट पकैड़ सेहो चलबे करैए।"

जागेसर भाइक विचारमे सुनरलालकेँ अपनत्वक भान भेल, जइसँ मनमे विचार जगलै जे किए ने जागेसर भायकेँ अपने ऐठाम चलैले कहिऐन। विचारैक क्रममे तँ सुनरलालकेँ मनमे विचार उठि गेल मुदा लगले अपने चिन्तनीय विचार रोकैत सुझौलकै जे समाजक (माने गाम-समाजक) ऐठाम जे पदारपन कऽ चुकल छैथ, तैठाम सँ दोसर ठाम जेबाक विचार देब अनुचित हएत, तँए मनक विचारकेँ मनेमे दबैत सुनरलाल बाजल- "भाय, अपने गामो आ अपने परिवारो-समाज छीहे, तँए अपनो माने हमरो घर-दुआरक मुँह-कान चलि कऽ देखि

लेबइ।”

सुनरलालक बात सुनि जागेसर भाइक मनमे जेना आरो बिसवास जगलैन तहिना मन हरिया गेलैन। हरियाइत मने जागेसर भाय बजला-

“सुनरलाल! यएह आशा देखि ने गामो एलौं हेन आ रहैक विचार सेहो केनहि छी।”

सुनरलाल बाजल- “की विचार करि कऽ आएल छी जे आब गामेमे रहब?”

जागेसर भाय बजला- “हँ।”

सुनरलाल बाजल- “गाममे नीक लागत?”

जागेसर भाय बजला- “जखन गाममे रहैत रही, दिल्ली नहि गेल रही तखन दिल्लियो ने तहिना छल मुदा रहैत-रहैत जखन अभ्यस्त भऽ गेलौं, तखन नीक लगए लगल किने।”

ओना, जागेसर भाय आ सुनरलालक बीच जे गप-सप्प चलै छल, ओइसँ सम्बन्धमे गाढ़ता आबिये रहल छल मुदा बीचक जे जिनगी जागेसर भाइक रहलैन, से किछु बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए ओइ दिस–माने बीचक बीतल जिनगी दिस–विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

“सुनरलाल, जागे भाय जखन कहै छैथ जे आब गामेमे रहब, तखन गाम-घरक काजो आ बातो-विचार होइत रहत। तइ बीचक जे समय बीतल, पहिने से बुझब ने जरूरी अछि।”

तेज-तैराक लोक सुनरलाल अछिए, हमर बात पकैड़ बाजल-

“जागे भाय, केते दिनक पछाइत गाम एलौं हेन?”

जागेसर भाय बजला- “तीस बर्खपर एलौं हेन।”

सुनरलाल बाजल- “अपने, माने हम तँ मात्र पैंतीसे बर्खक छी, तँए पैछला किछु मोन नहि अछि। मुदा सुनल तँ बहुत बात अछिए। गामसँ जइ दिन निकललौं आ आइ पुन: गाम एलौं हेन, तइ बीचक जे समय बीतल ओ जानकारी भेला पछातिये ने पुन: भूत-भविसक मुँहमिलानी हएत। माने पैछला

जिनगीक जोड़क कड़ी ऐगला जिनगीक जोड़क कड़ीसँ जुटत।"

सुनरलालक विचार सुनि जागेसर भायकेँ दोबर उत्साह जगलैन। दोबर उत्साहमे पहिल भेल- अपन तीस बरख बीतल दिल्लीक जीवनक परिचय आ दोसर ई जे जेते बेसी दू गोरेक बीच गप-सप्प होइए ओते सम्बन्धोमे प्रगाढ़ता अबिते अछि...।

जागेसर भाय बजला- "सुनरलाल! तइ दिनमे, माने जखन दिल्ली गेलौं तखन अपनो उमेर बीसे-बाइस बर्खक छल। बाबा मरल रहैथ, हुनकर श्राद्ध-कर्म करैमे पिताजी कर्ज लेलैन। तीनिये सालमे कर्ज मोटा कऽ दोबर भऽ गेल। शुरूमे तँ देबाल–महाजन–पिताजीकेँ सोझे तगेदा करैन। माने सूदिक संग मूर रूपैआ दइले, मुदा पिताजीक हालत दिनानुदिन बद-सँ-बदतरे होइत गेलैन जइसँ रूपैआ नहि दऽ पाबि रहल छला...।"

बजैत-बजैत जागेसर भाय जेना किछु मोन पाड़ए लगला तहिना चुप भऽ मुँह बन्न कऽ लेलैन। ओना, अपना पहिलुका महाजनीक बहुत बात सुनलौं अछि आ बहुत देखलौं अछिए तँए मनमे कोनो तेहेन उथल-पुथल नहि भेल, मुदा सुनरलाल तँ नव कविरया लोक अछि, जेकरा ऊपरे-झापरे तँ महाजनीक किछु-किछु बात बुझल छै मुदा महाजनीक सूदि आ बैंकक सूदिमे की अन्तर अछि, से नीक जकाँ बुझले ने छै। बैंकोमे देखिते छिऐ जे अहाँक पाइक सूदि केते भऽ जाइ छै आ बैंकक पाइक सूदि केते होइए, जखन कि दुनू पाइये छी। सुनरलाल बाजल- "भाय, चुप किए भेलौं?"

जागेसर भाय बजला-

"सुनरलाल, एहेन बर्बर घटना जिनगीमे पहिल बेर परिवारमे देखलौं। खेत-पथार सभ चलि गेल। मात्र घर रहने घराड़ीटा बँचल, बाँकी सभ चलि गेल। ओही सोगसँ माइयो आ पितोजी तेहेन सोगेला जे मरिये गेला।"

एक पीढ़ीक जीवनान्त भेल, दोसर पीढ़ीमे जागेसर भाय छैथ। सुनरलाल बाजल- "भाय, तखन तँ अहाँ घोर संकटमे पड़ि गेल हएब..!"

जागेसर भाइक भीतर मनक प्रश्न जेना सुनरलाल पुछने होनि तहिना जागेसर भायकेँ भेलैन। आँखि कड़ुआए लगलैन जइसँ दुनू आँखिमे नोर आबि

गेलैन। बजला- “बौआ सुनर, जिनगीमे तेहेन अन्हार पसैर गेल जे मृत्यु छोड़ि दोसर बाट नहि सुझि रहल छल, तखन गामसँ भागि दिल्ली गेलौं।”

जागेसर भाय आगाँ बजला-

“दिल्लीक चर्च करैसँ पहिने एकटा बात आरो अछि, से पहिने सुनि लएह।”

सुनरलाल बाजल-

“हँ, पहिने सएह कहियौ।”

जागेसर भाय बजला-

“जहिना महाजनीक मारिसँ गामसँ भगलौं तहिना दिल्ली पहुँचते मनमे एकटा नव विचार जगि गेल।”

बिच्चेमे सुनरलाल बाजल- “से की नव विचार जगल?”

जागेसर भाय बजला- “से जगल जे जखन पाइमे (सम्पैतमे) एतेक शक्ति अछि तखन किए ने अपनो ओही उपार्जनमे जी-जानसँ लगि शक्तिशाली बनी।”

विचारक क्रममे भँसियाइत सुनरलाल बाजल- “वाह..!”

सुनरलालक ‘वाह’ सुनि जागेसर भाइक मनमे भेलैन जे भरिसक हमर विचार सुनरोलालकेँ नीक लगलै, मुदा आगूक जे जीवन भेल से जखन बुझैत तखन ने किछु निश्चयपर पहुँचैत। जागेसर भाय बजला-

“पाइ बनबैक पाछू जहिना ने दिनकेँ दिन बुझलौं आ ने रातिकेँ राति, तहिना खटनियोकेँ ने भारी बुझलौं आ हल्लुक। पाइक पाछू जेना सोल्हन्नी मन लटैक गेल।”

बिच्चेमे सुनरलाल बाजल- “वाह-वाह..!”

सुनरलालक मुहसँ खसल ‘वाह-वाह’ सुनि जागेसर भाय उत्साहित नहि भेला किए तँ अपन बीतल जिनगीमे तेहेन मोड़ आबि गेल छेलैन जे भीतरसँ मने टुटि गेल रहैन। विचारकेँ आगू बढ़बैत जागेसर भाय बजला-

“बौआ सुनर, जइ समयमे गामसँ दिल्ली गेलौं, तइ समयमे बिआहो भऽ

गेल छल आ एकटा सन्तान सेहो भऽ गेल छल। मासक पछाइत आठ मीटर लम्बा आ पाँच मीटर चौड़ा जमीनक एकटा टुकड़ा कीनलौं। डेढ़-दू साल बीतैत-बीतैत तीन कोठरीक अपन घर सेहो बना लेलौं। जइमे दूटा कोठरी अपन परिवार-ले रखलौं आ एकटा भाड़ा लगा लेलौं।"

सुनरलाल बाजल-

"जखन रहैक ठौर अपन भऽ गेल तखन तँ भाड़ा-भुड़ीक पाइक बचत सेहो भइये गेल हएत।"

जागेसर भाय बजला-

"हँ, सेहो भेल आ एक कोठरीक भाड़ाक आमदनी सेहो आबए लगल। अखन कुल मिला कऽ तीन ठाम मकान अछि। चारिटा कोठरीक एकटा मकान अपने रखने छी आ दूठाम भाड़ा लगौने छी।"

सुनरलाल बाजल-

"सुनै छी दिल्लीमे मकानक भाड़ा आन शहरसँ बेसी अछि?"

जागेसर भाय बजला-

"हँ से तँ अछिए। ओना, दिल्लीसँ बेसी भाड़ा मुम्बईमे छइ। तँए ने पचास हजारसँ ऊपर भाड़ा महिनामे अबैए।"

सुनरलाल बाजल-

"जखन एते अज-गज अपन दिल्लीमे अछि तखन गाम किए आबि रहए चाहै छी?"

सुनरलालक बात सुनि जागेसर भाइक बोलक आवाज फाटल बौसुरी जकाँ घड़घड़ाए लगलैन। अपन अतीत दिस नजैर दौड़बैत जागेसर भाय बजला-

"सब पानिमे चलि गेल..!"

'सब पानिमे चलि गेल' सुनि सुनरलाल बाजल-

"से की भाय साहैब?"

जागेसर भाइक मन जेना थरथराए लगलैन। थरथराइत मने बजला-

“बौआ सुनर, एकटा बेटीक पछाइत एकटा बेटा भेल, फेर एकटा बेटी भेल। माने तीनटा सन्तानक पछाइत पत्नीकेँ ऑपरेशन करा देलिऐन। जेठ बेटीक बिआह सेहो कऽ लेलौं। छोट दुनू बेटा-बेटीकेँ कौलेजमे नाओं लिखेलौं। कौलेजेक अवस्थामे, माने कौलेजमे पढ़ैऐक अवस्थामे छोटकी बेटी लव मैरेज कऽ लेलक आ बेटा गाड़ीक एक्सीडेन्टमे मरि गेल..!”

सुनरलाल बाजल-

“बाप रे! तखन तँ परिवारे नष्ट भऽ गेल..!!”

सुनरलालक बात सुनि जागेसर भाइक दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलैन। आगू किछु बजैक साहसे ने होइन। नजैर उठा कखनो सुनरलालपर दैथ आ लगले फेर निच्चाँ कऽ लैथ...।

दुनू गोरे माने जागेसरो भाय आ सुनरोलालकेँ थकथकाएल देखि बजलौं-

“कननौं तँ किछु नहियेँ हएत। जे चलि गेल ओ चलि गेल, मुदा अपने दुनू परानी तँ जीबै छी, तइले ते किछु...।”

नोर पोछैत जागेसर भाय बजला-

“बेटाक एक्सीडेन्टक पछाइत अपनोसँ बेसी पत्नीकेँ दुख भेलैन। मतिछिन्नू जकाँ करए लगली। एकटा मित्र कहलैन जे ‘हरिद्वार जाउ। ओइठाम गेला पछाइत सभ किछु ठीक भऽ जाएत।”

बजा गेल-

“हँ, ठीके कहलैन।”

जागेसर भाय बजला-

“दुनू परानी हरिद्वारो गेलौं।”

बजलौं-

“हरिद्वार गेला पछाति की भेल?”

जागेसर भाय बजला- “मन्दिरक पुजेगरीकेँ सभ वृतान्त अपन

कहलयैन। ओ विचार देलैन जे हरिवंश कथा सुनैक एक सप्ताहक अनुष्ठान करू, सभ ठीक भऽ जाएत।”

सुनरलाल बाजल-

“ठीके विचार देलैन।”

जागेसर भाय बजला-

“नियम-निष्ठासँ सेहो करेलौं, सुनलौं।”

सुनरलाल बाजल-

“सुनला पछाइत की बुझि पड़ल?”

जागेसर भाय बजला-

“परिवारक चिन्ता थोड़े जरूर कमल जइसँ विचारमे कनी उगरास भेल।”

सुनरलाल बाजल-

“की उगरास?”

जागेसर भाय बजला-

“दुनियाँमे हमहीं टा एहेन नइ छी, हमरा सन-सन हजारो-लाखो एहेन छैथ जे जीवनमे हुसबो केलाह आ हुसियो रहले छैथ। मुदा कोनो-ने-कोनो रूपेँ जीवन तँ बीतेबे केलैन आ बिताइयो रहले छैथ, सएह...।” ❑

केलवारी

पूर्णिमाक हिसाबे अदहा कातिक टपि गेल मुदा सकराँइतिक हिसाबे पचीस दिन पछुआएल अछि। रातिए दिवाली भेल, आइ परीवक पखेबो आ धनमनतरि सेहो छी। काल्हि भरदुतियो आ चित्रगुप्तो पूजा छी।

साठि बर्ख पार केलाक पछाइत जीवन काका नव जिनगी पाबि केलवारी पहुँचला। पानि भेटने चरिकट्ठबा चौमासकेँ आब वाड़ी-फुलवारी-केलवारी बनि हँसैत देखि बीच केलवारीमे बैस, वृन्दावन जकाँ कखनो नजैर उठा कोनो घौरपर दैथ तँ कखनो पूर्बाक लहकीमे लट-पट-सट-पट करैत भालैर सभकेँ सेहो देखैथ। लहकीमे लहैक जीवन काका अपन संगी-केलवारीसँ परिचए-पात करए लगला। बाबाक लगौल आमक गाछीकेँ आधा-अधी उपटा जीवन काका केलवारीमे जिनगी देखि रहल छैथ। आमक गाछीमे बबो अहिना ने देखैत छल हेता, यएह धड़-धरती ने कुलो-खनदान, उपजो-बाड़ी आ खेनाइयो-पीनाइकेँ अपना पेटमे समेट कऽ रखने अछि।

जीवन कक्काक मनमे फेर उठलैन- मुदा बाबाक बराबरी कहाँ कऽ पाबि रहल छी? पैछला सर्वेमे जेते हुनका खेत छेलैन तेते तँ हमरो अछिए। मुदा सबहक अपन समय होइ छै, तहीक कर्तो-धर्ता ने अपनो छी। हुनका अमलदारीमे गाममे एकटा वैद्य छला। वैद्य की छला अखुनका करखन्ना जकाँ छला। अपने हाथे मंडूल बनबै छला, जे पाण्डु रोगक रामवाण इलाज छेलइ। सीतामढ़ीसँ पूर्णिया आ नेपालक झँपा जिलासँ लऽ कऽ वीरगंज होइत गंगाक उत्तरी छोर धरिक बजार छेलैन। रोगीक आवाजाही भरि दिन लगले रहैत छेलैन। जहिना इलाकाक लोक वैद्यजी केँ जनैन तहिना रहैक जगह बाबाकेँ सेहो जनैत रहैन। अनका अपेक्षा स्थिति बहुत नीक नै रहनौं, दरबज्जाकेँ दरबज्जा बना

रखने छला। अनठिया-बहरबैया-ले कोनो रोक-राक नहि, मुदा तँए कि गामो ओहने छल? नहि! जातीय रंग-रूप नीक जकाँ गछाड़ने रहइ।

बाबासँ आगू बढ़ि अपनापर नजैर पड़िते जीवन काका चौंकला, की अपने जकाँ पोतोक मनमे रहि सकब? नहि! अहिना ऊहो साले-साल बरखी आ पितृपक्षमे मोन पाड़त? नहि! मुदा एना भेल किए? अपना अछैत जुआन बेटा काज करै-जोगर भेल, बाहर कमाए कहलिऐ। परिवारमे अन-पानिसँ लऽ कऽ रूपैआ-पैसा धरिक काज पड़िते अछि। किसानी जिनगीमे नगदी खेती नै भेने पाइक समस्या छइहे। पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, दबाइ-दारू, लत्ता-कपड़ा सभ तँ कीनैये पड़ैए।

अखन धरि जीवन काका अपनाकेँ अपन सीमानक भीतर बुझै छला तँए मनमे कोनो लहैर नै उठलैन। उठबो केना करितैन? जाबे समुद्र आकि मरुभूमिमे जुआरि नै उठत ताबे केना लहैर-लहैर लहराइत वायुमण्डल दिस बढ़त। ओना खुशीलाल आज्ञाकारी बेटा छैन। तैबीच वैचारिक मनभेद केना बनल से बुझिते जीवन कक्काक मन बगैद गेलैन। जहिना पोसो हाथी बगैद जाइत तहिना।

भेल ई जे खुशीलालकेँ एते छूट तँ दाइए देने छेलखिन जे नीक काज बिना केकरो पुछनौं करब अधला नहि। आज्ञाकारी बेटा केतौ सीमाक उल्लंघन नै केलैन, मुदा सीमाक उल्लंघन तँ भइये गेल। नव पद्धतिक पढ़ाइ एकभग्गू भऽ गेल अछि, जखन कि जीवन काका समग्रतामे बिसवास करै छैथ। मुदा जीवन काकाकेँ अपनो मन उग-डुम तँ करिते छैन जे बेटा ई बात अखन धरि किए ने बुझि पौलक जे भँसि गेल! माए-बाप जीबिते दिशा ने बेटा-बेटीकेँ सिखौत-पढ़ौत आकि जिनगी भरि संगे-संग रहि बेर-बेर सिखबैत रहत। जँ से हेतै तँ जिनगियो आ कालखण्डोक बँटवारा केना हेतइ। की आब किछु कहब उचित हएत? उचित तँ ओही दिन तक होइत जइ दिन काज करैले डेग उठबए लगल। मुदा आब..?

गंभीर प्रश्न जीवन कक्काक आगूमे गंभीर परिस्थिति पैदा कऽ देलकैन। जँ बताह जकाँ बड़बड़ा बेटोकेँ कहबै आ पुतोहुओकेँ कहबैन आकि टोकारा

पाबि खिसिया कऽ गाम दिस टहैल समाजोकेँ कहबैन, से उचित हएत? काजक तँ फले काजक पूर्णता छी। ऐठाम तँ ओहूसँ बेसी परिस्थिति चहैक गेल अछि! तेहेन पढ़ाइ-लिखाइ भऽ गेल अछि जे अखन ने मोटगर पाइ देखै छै, मुदा रिटायर करिते अदहा भऽ जाएत, आ बेटा-बेटीक जिनगी तेते भारी भऽ जेतै, जे सम्हारि नै पौत। एहेन परिस्थितिमे कियो माए-बापकेँ आकि बेटा-बेटीकेँ देखत? उगैत सुरुजक दर्शन ने शुभ होइ छै आकि डुमैत सुरूजक! तखन? जेकरा मूस जकाँ बिल खुनैक लूरि नै छै तेकरा-ले दुनियाँ जे हौउ, मुदा जेकरा खुनैक लूरि हेतै ओ सीमा किए टपत? बाढ़ि औतै ऊँचकापर चलि जाएत आ रौदी हेतै तँ नीचका दिस बढ़ि जाएत...।

यएह सोचि जीवन काका चारू कट्ठा खेतकेँ–जे आमक गाछी छल–जेकरा तोड़ि केलवाड़ियो आ तीमनो-तरकारीक चौमास खेत बना लेलैन। खेतोक लीला की कृष्ण लीलासँ कम अछि, रौदी भेने जीरो आ सुभ्यस्त समय भेने हीरो। केतौ तीनियोँ बीघा बीघासँ कम गोबरबैए तँ केतौ बीघा पाँच बर गोबरबैए...।

यएह सभ सोचि जीवन काका चारू कट्ठाक बीच एकटा कल गड़ा लेलैन आ चारूकात निम्मन हाता कटा, माटि ढहै दुआरे साबे आ आड़िपर अनरनेबा, नेबो, दारीम, सरीफा इत्यादि छोटका पौधबला फलक गाछ रोपि देलखिन। डेगसँ नापि एक-एक लग्गीक दूरीमे केरा गाछ सेहो रोपलैन। जे चालीस बीट भेलैन। जेठुआ रोप भेने कातिकमे दू-दूटा पौंच गाछ देलक। जे मघारि अबिते फूटि गेल। कुहैर-कहारि कऽ घौर भेल। खाएर जे भेल, भेल तँ। वएह बीट तेसर सालमे पहुँच गेल। साठिटा घौर पनरहसँ पचीस हत्थाक भेलैन।

एक तँ ओहिना मन तुरुछाइत रहए जे आइए झंझारपुरक हाटो छिऐ आ पखेब पाबैनो छी। हाटो तेहेन जे सुति उठि आँखि मीड़िते विदा हौउ। केना चौरीसँ करमी लत्ती आनब, सोन्हौनक ओरियान करब। जखन दुनू काज लोके हाथक छी तँ आगूओ पाछू कएल जा सकैए। खाएर.., गर अँटबैत झंझारपुर हाट गेलौं। केरोक सूर-पता लगबैक छल आ पाबैनोक वस्तु-जात कीनैक रहए। हाटपर पहुँचलो ने रही कि आढ़ैतबला भेट गेल। पुछलिऐ- "कारोबारक की

हाल-चाल अछि?”

मनमे एक्को मिसिया नै रहए जे अधला नजैरसँ पुछि रहल छिऐ। तीन माससँ झंझारपुर गेलो नै छेलौं। हाल-चाल सुनिते आढ़ैतबला गुम्हैर कऽ बाजल- “सभ बुड़ि गेला गंगा नहाइले आ ई रहि गेला गामेमे!”

परिचित लोकक मुहेँ कठाइन बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। आगू बढ़िते भाँज लगल जे हाजीपुरसँ लऽ कऽ भागलपुर धरिक जेतेक केलवारी अछि सभ केरा दहा गेल! जे केरा खुदरा-खुदरी गाम धरि पकैड़ नेने छल...। मनमे उठल- की गाममे केरा सन फल जेकर खेतियो असान अछि, तेकर कीनिनिहार किसान बनि गेल छैथ! झंझारपुरसँ विदा होइते मनमे उठल जे एकटा केरा-घौर छौड़ाक कबुला छै, जँ से नै भेल तँ छौड़ाक माए घरोमे रहए देती..?

मन ठमकल, एहेन कबुले की जे सौंसे घौर कबुला कऽ लेलैन। जे कीनि कऽ खाइए ओ दर्जनक हिसाबसँ कीनत आकि घौरे कीनि लेत? आइसँ पाँचे दिन छठिक रहल, तहूमे तीन दिन पहिनेसँ शुरूहे भऽ जाइए। जखन ओ चीजे ने हाट-बजारमे छै तखन एहेन की हमहींटा छी आकि अपन अड़ोसियो-पड़ोसियोक गति सएह हेतैन। पत्नी बड़ खिसिएती तँ पाइ आगूमे फेक देबैन। पाइ देखि जखन दोसर-तेसरसँ भाँज लगतैन, तखन अनेरे ने उचिती-विनती कऽ छठिक विसर्जन करती। दलदलसँ सक्कत माटिपर पएर पड़ल। मन थीर भेल। मुदा ई तँ अपना मनमे छल।

झंझारपुरसँ अबिते पत्नी झपैट कऽ बजली-

“जेकरा काज करैक छिछा रहै छै से ने काज करैए आ जे सदिकाल जेबीए टोबत, ओकरा बुते देवता-पित्तर राखल हेतइ।”

अपन हारल की बजितौं। तँए अपने चुप रही मुदा पत्नी बड़बड़ाइते रहली। अनधुन बिना कौमा-फुलस्टोपक बजैत-बजैत बजा गेलैन- “गामेमे जीवन काका केराक वोन लगौने छैथ आ अहाँ झंझारपुर वौआइ-ले गेलौं!”

हारल मन घुमि तकलक। बजलौं- “एना किए छान-पगहा तोड़ने जाइ छी। अखन पाँच दिन पाबैनमे बाँकी छइ। तैबीच की कोनो ओछाइन धऽ लेब। आकि छुटल-बढ़ल जे काज अछि तेकरे जोड़ियाएब।”

मुदा मानि गेली। खेला-पीला पछाइत नीनो किए हएत बरदकैँ सोन्हौन पिऔनाइ, गरदामी देनाइ रहए, तैसंग धानो काटि कऽ नै अनने रही, ऊहो आनए पड़त। पान पत्नी पीसि देती मुदा लगा कऽ तँ अपने दिअ पड़त। जेते काल नीन घेराएल रहल तेते काल टटका गपो सभ गपकैँ ठेलने रहल। तँए कखनो मन हुअए जे एहेन कबुला केनिहारिकैँ चारि थापर लगा दिऐ। कहू जे एहेन हाड़-काठबला कैँ कबुला-पाती केने धिया-पुता हएत।

बरदकैँ सोन्हौन-तेल पीअबैत गरदामी पहिरबैत, सींगमे तेल लगबैत, मुँहमे पान खुआ, दूधाएल धान आगूमे दैत केराक भाँजमे जीवन काका ऐठाम विदा भेलौं।

दरबज्जा खाली देखि मनमे उठल- लोक या तँ राजधानीए-मे रहैए आकि वोनेमे। जखन दरबज्जा सून छैन तखन केदलीए वोनमे हेता। तहूमे एक तँ छठिक लहकी, दोसर तेहेन इलाकाक केरा वोन दहाएल जे अनेरे एकक तीन हेतैन...।

चारूकात चकोना होइत करजान पहुँचलौं। देखिते जेना मने हरा गेल। कहू जे एकटा घौर-ले एक दुपहरिया हरान भेनौं आ नइ भेल। मुदा ऐठाम एकर वोने देखै छी! पत्नीक मुहेँ तरपट्टियो सुनए पड़ल। मुदा परिवार तँ परिवार होइ छै, एहेन-एहेन बातक जँ मद्दी हएत तखन परिवार ठाढ़ रहत। भूतलग्गू घर जकाँ अनेरे ढनमना कऽ खसि पड़त।

केलवारीक हत्तापर ठाढ़ होइतै मनमे भेल जे बिना चीजबलाकैँ पुछने आगू डेग उठाएब उचित नहि। मुदा जीवन काकाकैँ देखबो तँ नहियेँ करै छिऐन। गर लागल। बजलौं- “काका छी यौ, यौ काका?”

जहिना रातिमे ओछाइनपर पड़ल अनभुआर बोली सुनि अकानए लगैए मुदा उत्तर दोहरेला पछाइत तेहरेलोत्तर दइए, तहिना जीवनो काका बोली अकानए लगला। बुझलेहे जकाँ दोहरी आवाज दैत डेग आगू बढ़ेलौं एक तँ केराक वोन जे गाछो आवाज रोकैत आ पातो। तैसंग शर्बतक गिलास जकाँ आवाजोकैँ दुनू घोरिते हएत।

एक तँ निशाँएल जकाँ जीवन काका बैसल रहैथ। बहरबैया आवाजकैँ

नीक जकाँ नै अकाइन सकला, सहरगंजे बजला- “के छिअ, आबह।”

‘आबह’ सुनि मनमे हूबा भेल जे हाजिरी दर्ज भऽ गेल। जीवन काकार्कें बिसैर गेलौं। बिच्चेमे केरा घौर विचारकेँ बोहिया देलक। साठि-सत्तैरटा कटैबला केराक घौर देखलौं, एकर अलावे किछु तरकारीबला आ किछु फुल्लियो देखलौं। जइमे कोशा लगले रहइ। देखैत-देखैत दोसर कोन दिस पहुँचलौं आकि काका बोली देलैन-

“के छियह केमहर गेलह?”

बाढ़िक इलाकामे जहिना लोक पुक्की पाड़ि-पाड़ि जिनगीक उपस्थिति दर्ज करबै छैथ, तहिना हमहूँ बीटे-बीटे, दोगे-दोग देखैत पूबरिया-उत्तरबरिया कोण दिस बढ़ि गेलौं। बढ़ि की गेलौं, केरा अपन जिनगीक कथा देखबए-सुनबए लगल। किछु उत्तर नै देब उचित नइ बुझि बजलौं-

“काका, तेहेन वोन अहाँ लगा देने छिऐ जे वौआइ छी।”

“अच्छा बोली अकानैत चलि आबह।”

लगमे जाइते बुझि पड़ल जे जीवन काका जेना सोनाक घैल पौने होथि तहिना मन तिरपित छैन। तिरपितो केना ने हेता, घोंघीसँ मोती आ कोयलासँ हीरा होइते अछि तखन महि किए ने अकास उड़त। जे केहेन सोंगर लगौलासँ काज चलत। जँ से नै भेल तखन तँ अनेरे बनलो काज बिगैड़ जाएत।

मुस्कियाइत तीर फेकलौं-

“काका, बुढ़ाड़ियोमे जेना केंचुआ छोड़ने होइ तेहने चकचकी बुझि पड़ैए।”

हमर बात सुनि काका गुम भऽ गेला। औगता कऽ ओहन जकाँ नहि, जे कहबै सासुरक सुपारी खुआबह तँ कहत जे तीनटा सारि अपने अछि। केचुआ छुटिते ने नव-जीवन भेटै छइ। मुदा बातकेँ बदलैत जीवन काका बजला- “पहिने ई कहह जे औगताएल तँ ने छह? अखन तेहेन पाबैनक लदान पड़ि गेल अछि जे दमो माड़ैक छुट्टी नइए।”

काजो अपने रहए, काज तँ काजे छी। एकक पछाइते दोसर हएत, तइले

झंझारपुरक समय अछि आ ऐठाम नै अछि। बात बिहियबैत कहलयैन-

“काका, हम तँ छेहा बेरोजगार छी। अनेरे भरि दिन ढहनाएल घुमै छी।”

हाथक इशारा दैत बैसबैत बजला-

“बौआ, केचुआ छोड़ैक लूरि जेकरा रहै छै वएह ऐ धरतीक सुख बुझैए। अपना ऐठाम केराक खेती अदौसँ होइत आबि रहल अछि। जेहने गुणगर तेहने पेटभर। मुदा ऐठाम तँ पौष्टिक वस्तुक उत्पादन होइ वा नै होइ, मुदा जन-जनकेँ पोष्टिक अहार भेट रहल छइ। जइसँ स्वस्थ शरीरक निर्माण भऽ रहल छइ।”

साँस छोड़िते मोन पड़लैन जे किमहर आएल से तँ पुछबे ने केलौं। आ अनेरे सासुरसँ भागल स्त्रीगण जकाँ भटभटाइ छी। मुदा लगले मन सम्हरलैन। दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ चट-दे पुछि देब जे केमहर एलौं, सेहो तँ नीक नहियेँ। भने चाससँ समार भऽ गेल। एक रस भेने ने अनुकूलता अबै छै, ओना जँ ओहन वस्तुक शर्बत बनाएब जेकरा छानए पड़ैत तखन अनेरे किए एक बेर पानि छानू दोसर बेर शर्बत। एक्के बेर किए ने छानि एक रस बना लेब। बजला-

“बौआ, केमहर एलह से पहिने बाजह। ई काज भेल, काजकेँ कखनो टारैक वा अँटकबैक काशिश नै करी। ई दीगर भेल जे कोन काज केहेन काज।”

जहिना तीन-कोनियाँ तीर आकि बंशीक नोंक अपने दिस बैसला जकाँ रहै छै जे प्रवेश काल तँ पैसि गेल मुदा निकलै काल खोखरनहि औत तहिना जीवन काकाकेँ मचकीपर चढ़ल देखि आस मारलौं। मुदा केकरोसँ किछु मंगैसँ पहिने केकरो दोख अबै छइ। मन घुड़िया गेल जे जँ अपन दोख लगा कहबैन तँ सोझहा-सोझही गप केना करब, आ जँ पत्नीक दोख लगाएब ऊहो नीक नै हएत, किछु छैथ तँ अर्द्धांगिनी तँ वएह छैथ। नहि जँ समूहमे कबुलाक चर्च करब तँ मुहेँ छिऐन जँ कहीं बजा गेलैन जे एहने पुरुख छह जे कबुला-पाती केने धिया-पुता होइ छह।

असमनजसमे पड़ले रही कि बिच्चेमे काका बजला-

“समाजमे ने केकरोसँ लजाइ आ ने किछु छिपाबी। आन किए बुझै छह। एते केरा जे लगौने छी से अपने खाइले, पाकल घौर पाँच दिन अँटकै छइ। जँ चरि-चरि छीमी खाएब तँ बीस छीमी भेल। एहेन-एहेन हत्था सभ अछि जइमे

पचीस-पचीस छीमी छइ। तोहीं कहह जे एको हत्था अपना बुते सठत।”

रसगुल्लाक रसक बोड़मे डुमल कक्काक बात सुनि जेना अपने हँसी फुटि गेल। कहलयैन-

“काका, छठि पाबैन छिऐ, एक घौर केरा लेब। आन साल तँ दू-तीन हत्थाक घौर लऽ कबुला पूरा लइ छेलौं, जइमे बारह-चौदहटा छीमी रहै छेलै, मुदा ऐठाम तँ ओहन घौरे ने देखै छिऐ?”

हम तँ अपना मने कहलयैन। ओ की बुझलैन से तँ वएह जानैथ। मुदा अपनोसँ नमहर हँसी हँसि बजला-

“जा जे घौर मन हुअ ओ काटि लएह।”

सुनि तँ लेलौं मुदा मनमे भेल जे कहीं काका भक्की तँ ने मारलैन! तखन तँ जेतेमे पाबैन हएत तेते केरेमे चलि जाएत। मुदा मोन पड़ल जे अपनासँ श्रेष्ट लग चुपे रहब नीक। जे कहता ओकरे सरि-सुर करैत अपना अनुकूल बनाएब नीक रहत। तँए चुप्पे रहलौं।

चुप देखि जीवन काका बजला-

“सुनह, टटका केरामे पानि निकलै छै जे देहो-हाथकेँ आ कपड़ो-लत्ताकेँ दगा दइ छइ। तँए पहिने केरे काटि लएह जे जाबे दूध सुखतै ताबे गपो उसरि जाएत।”

कक्काक बात सुनि भरोस भेल जे केरा तँ भइये गेल, दाम केना पुछबैन। जँ दाम लेबाक रहितैन तँ गनि नेने रहितैथ, से गनबे ने केलैन। गर भेटल, पुछलयैन- “छीमी-हत्था कहाँ गनलिऐ?”

जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

“जँ एक साँसमे गामपर लऽ कऽ चलि जेबह तँ ओहिना भेलह। नहि तँ जेते पाबैनक फीरिस्तमे जे हुअ ओते दऽ दिहह।”

केराक घौर छोड़ि दुनू गोरे बैसलौं। नफगर काज देखि धैनवाद नै देबैन सेहो नीक नहि। बजलौं- “काका, अपने गामक टेक रखि लेलिऐ!”

‘टेक’ सुनि काका गुम भेला। की टेक? पाशा बदलैत बजला- “बौआ,

अपन धरती एकसँ एक अन्न, फल, फूल उपजबैक शक्ति अपना गर्भमे रखने अछि। तखन तँ जेहने दुहनिहार तेहने ने कामधेनु। चालिस बर्ख पूर्ब केरा-खेती केने छेलौं, मुदा खोप सहित कबुतरो चलि गेल छल, जेकरा घुमा कऽ लाबलौं।”

जिज्ञासा भेल। पुछलयैन- “से की?”

विह्वल होइत काका बाजए लगला- “जहिना देखबहक जे जामुनक मासमे लोक जामुनक बीआ रोपैए, आमक मासमे आम रौपैए, अनारसक मासमे अनारस रौपैए तहिना अपना ऐठाम सरसठिक रौदीक पछाइत जे उथल-पुथल भेल तइमे केरोक खेती आएल। बाहरी किस्मक केरा, एक-मौसमी। जहपटार लोक अपन पुरना करजान सभ उपटा-उपटा लगा लेलक। जे केरा अपना ऐठाम बहुत पहिनेसँ होइत चलि आबि रहल छल, ओ उपैट गेल। रोपाएल ओ जे समायानुकूल नै छल, अपनो गेल आ जेहो आएल सेहो गेल। जेकर फल भेल- मिथिलांचलक केदली वन महराइ गाबए लगल!”

जीवन कक्काक विचारमे रस भेटल। पुछलयैन- “हेबा की चाहै छेलै, काका?”

प्रश्न सुनि काका गुम भऽ गेला। किछु कालक पछाइत गुम्मी तोड़ैत बजला- “दिनो, उनहल जाइए, केराक दूधो सुखि गेल हेतह।”

प्रश्नकेँ टारैत देखि दोहरबैत पुछलयैन- “काका, जखन एते गप भइये गेल, तखन कनी पुछड़ी किए छोड़ि देलिऐ?”

ई बुझले ने रहए जे बिलमे चलि गेला पछाइत जँ साँपक नाँगैर पकैड़ खींचौ चाहब तँ नाँगैर टुटि जाइ छै मुदा साँपक मुँह नै निकलै छइ। तैबीच विस्मित होइत काका बजला- “बौआ, जे कहबह ओ तँ कइये नेने छी, देखिते छहक। मुदा एकटा बात तैयो रहि जाइए। अपन जे पुश्तैनी, जुग-जुगसँ अबैत वस्तु छल आकि अछि, ओकरा अनुकूल समैये नै भेटलै जइसँ आगू बढ़ैत। एहेन बाधा उपस्थित कऽ देल गेलै जे धात्री गाछ-तर भोजन केरा पातक जगह बजरूआ थारीमे होइए।”

उठि कऽ विदा होइत पुछलयैन- “काका, ऐ केराक किस्मक नाओं की

भेल?”

“ओना, केते-गोरे मर्तमान कहै छथिन, मुदा सहरगंजा नाओं छिऐ मरीचमान।”

दोहरबैत पुछलयैन- “बजारसँ तँ पकले घौर लऽ अबै छी, एकरा तँ पकबऽ पड़त।”

अदहा बात मुहेँमे छल कि बिच्चेमे काका बड़बड़ए लगला- “देखह, अपना ऐठाम माटिक तरमे गोरि धानक भूसा, डाबामे दऽ धुइक कऽ केरा पकौल जाइ छै, जे नीक होइ छइ। आ बजारक केरा, टमाटर आ आम सभकेँ कारबेटसँ पकौल जाइ छै, जे नीक नै होइ छइ। अखन पाँच दिन बाँकीए अछि, काल्हि गोरि देबहक तँ समैपर पकि जेतह।”

केराक घौर उठा आँगन अनलौं। जेते गोरे झंझारपुर हाटसँ घुमि-घुमि आएल रहैथ, एक्के-दुइए सभ पुछए लगला। मुदा एकटा धोखा भऽ गेल रहए जे पत्नी मोन पाड़लैन। मन ई पाड़लैन जे छीमीमे चुन कहाँ लगौलिऐ, कियो देखि नेने हएत तँ पाकत?

पत्नीक बातक कोनो मानियेँ ने लागल। एक तँ कोनो माससँ अनुकूल केरा पकबैक समय कातिक होइ छइ। मौसम परिवर्त्तनक समय रहै छइ। तैठाम चुन की करत? मुदा अपन अनुकूल बनबैले तँ किछु भकमोड़ अबिते छै, बजलौं- “ऐ बेर छठि परमेसरी खुशी छैथ, देखै छिऐ शुरूहेसँ केहेन बाट धड़ा देलैन।”

अपना जनैत तँ अनुकूल हुअ चाहलौं मुदा से भेल नहि। बजली-

“लोकक नजैर नीको होइ छै आ अधलो होइ छइ। मुदा यएह दुनू–नीक अधला–तेते विआन करैए जे नीक तँ केते नीक आ अधला तँ केते अधला। पाबैनक नाओंपर एक दिन केरा खेनहि की।”

पत्नीक बात सुनि अनुकूल नै बुझि पाशा पलटैत बजलौं- “आब कथी सभ बाँकी रहल, से मोन पाड़ि दिअ।” ❑

सिकिया नेता

आइ भोँट छी। भिनसर साते बजेसँ घर-अँगनासँ लऽ कऽ भोँटक बुथ धरि लोकोक आवाजाही आ चुनावी गहमा-गहमी हुअ लगल। अस्सी बर्खक सुधनी दादी अपन अँगनेसँ गरियाबए लगली-

“जो रे टिकजरौना! तोरा कहियो नीक नइ हेतौ।”

एते बात तँ बुझले छल जे सात बजेसँ भोँट खसब शुरू भऽ जाएत। बुथ दिस नहि जा, गाम दिस विदा भेलौं। बुथ दिस नहि जाइक मन ऐ दुआरे नइ भेल जे चुनावमे पुलिसक बेवस्था भरपुर अछि। केता खेप भोरसँ माने तीन बजे भोरेसँ पुलिसक गाड़ी गाममे चक्कर काटि चुकल अछि। जहिना एक दिस पुलिसक गाड़ी चक्कर काटि चुकल अछि तहिना गामक नेतो सभ केता खेप गाममे घुमि चुकल अछि। तहीकाल रविन्दर भायकेँ बुथ दिससँ अबैत देखलयैन। मनमे जहिना उत्साह बुझि पड़ल तहिना हतोत्साह सेहो बुझि पड़ल। मुदा तइसँ हमरा कोन मतलब। ई ‘उत्साह-हतोत्साह’ हुनकर अपन मामला छिऐन। हुनकेटा नहि, सबहक अपन-अपन मामला छीहे जे जिनगीमे केना उत्साहित भऽ जीब वा हतोत्साहित भऽ जीब...।

लगमे अबिते रविन्दर भायकेँ पुछलयैन-

“भाय, बुथ दिससँ अबै छी?”

जहिना पुछलयैन तहिना रविन्दरो भाय बजला- “हँ।”

सातसँ समय ऊपर भऽ चुकल छल। सात बजेसँ भोँट खसब शुरू हएत से बुझल रहबे करए। बजलौं- “भोँट खसा कऽ अबै छी?”

हमर बात सुनि रविन्दर भाय कनीकाल चुपे रहला। फेर की फुरलैन की

नहि, बजला- "नइ अखन भोँट कहाँ खसेलौं हेन। लोकक भीड़ दुनू बुथपर अछिए। जहिना कतार लागल भोँट खसौनिहारक भीड़ अछि तहिना गौंआँ-घरुआ सिखौनिहारक भीड़ सेहो अछि। तैसंग ऐ बुथसँ ओइ बुथपर पुलिसक गाड़ीक दौड़ौ-दौड़ी सेहो अछिए।"

ओना, रविन्दर भाय कोनो राजनीतिक दलक लोक नइ छैथ मुदा अपन दल नहि छैन सेहो बात नहियेँ अछि। अपन दल ऐ लोभहे बनौने छैथ जे जखन मनुक्ख छी, सामाजिक प्राणी छी तखन मनुक्ख आ जानवरक बीच भेदो तँ यएह ने अछि। तँए समाजक बीचे ने बास करैक अछि तइले तँ लोकक समूहक संग रहै पड़त। लोकेक समूह ने समाजो छी। अही लोभक दुआरे रविन्दर भाय समाजमे सक्रिय छैथ। सभ रंगक लोक समाजमे अछिए तँए सभधन्धी लोक रविन्दर भाय छथिए। केकरो बिआह-दानक लेन-देनक प्रश्न होइ कि श्राद्धमे पंचदान-विरखो क्रिया-कर्मक प्रश्न होइ आकि केकरो दुनू बेकतीक बीचक मतभेदक प्रश्न होइ रविन्दर भाय केना ओइ बीच नइ पड़ता।

पार्लियामेन्टक चुनाव छी। देशक भागक फैसला हएत। ओना, कोनो-कोनो राज्यमे विधान सभाक चुनाव सेहो छी आ खुदरो-खानि क्षेत्रक चुनाव सेहो छीहे। मुदा अपना ऐठाम से कम अछि। मात्र पार्लियामेन्टक चुनाव छी। मुँह देखि मुंगबा परसनिहार रविन्दर भाय छथिए, तँए मनमे भेल जे जँ भोँटक विषयमे पुछबैन तँ अनेरे वेचारे गामक झगड़ामे ओझरा जेता। असगर रविन्दरे भाय की की करता। मात्रिक दिससँ कोनो पार्टीक सनेस ममियौत भाए पठौने हेतैन तँ सासुर दिससँ सार किनको सनेस पठौनहि हेतैन। तेतबे नहि, जाइतिक मैनजनक फरमान भीने हेतैन आ संगी-साथीक भिन्ने। मुदा सभ किछु रहितो रविन्दर भाय इमानदार लोकक गिनतीमे गनल जाइते छैथ। नवका कम्प्युटरक हिसाब तँ नहि पढ़लैन अछि मुदा देशी हिसाब पढ़ने एते तँ बुझिते छैथ जे गामक इमानदारीक तराजू पाइ-कौड़ीक छी, जेकर डण्टी केतौ हाथीक नॉंगैर जकाँ बनि गेल अछि तँ केतौ पूछकट्टी बकरी जकाँ सेहो अछिए। अही बीच ने रविन्दर भायकेँ रहबाको छैन। ओना, रविन्दर भाय दुनू रंगक लोक छथिए। माने ई जे केकरो-ले हाथीक नॉंगैर जकाँ छैथ, तँ केकरो-ले पूछकट्टी बकरी जकाँ सेहो छथिए। तँए कहब जे रविन्दर भाय ओहन बकलेल-ढहलेल जकाँ छैथ जे

अपन असथिर विचार राजनीतिक प्रति नहि बना सकै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। बनाइयो तँ सकिते छैथ मुदा तइमे बाधो छैन्हे।

..बाधा ई छैन जे पार्लियामेन्टक क्षेत्र नमहर रहने अधिकतर नेताक घर–चुनाव लड़निहार–कने दूर-दूर छैन्हे जइसँ पहिले-पहिल बेर नामो सुनै छैथ, मुदा दू-तीनटा नेता लगक रहने चिन्हो-परिचय आ उचितो-उपकार होइते छैन। तँए जँ रविन्दर भाय अपन अ-असथिर विचार अपने जीवन आ अपन जीवनक उदेसकेँ देखैत जँ राजनीतिक विचारानुसार असथिरो करता तइमे बाधा ई छैन जे चिन्हरबो नेता आ उपकारियो नेता चुनावे-चुनाव अपन दल बदैल लइ छैन, जइसँ रविन्दर भाइक पार्टी सेहो बदैल जाइते छैन...। रविन्दर भायकेँ पुछलयैन- "भाय, भोँट खसबए कखन जाएब?"

रविन्दर भाय बजला-

"आब एक्केबेर छअ-बजे साँझमे जाएब। छअ बजे तक भोँट अपना ऐठाम छी।"

रविन्दर भाइक 'छअ-बजे' सुनि बजा गेल- "आनठामक दोसर समय अछि?"

रविन्दर भाय बजला-

"अखन औगुताएल छी तँए बेसी गप-सप्प नइ करब। एकेटा गप बुझि लएह जे केतौ चारि बजे तक आ केतौ तीनियेँ बजे तक भोँट खसत।"

मनमे भेल जे पुछिऐन, एना किए? जइ प्रशासनकेँ सात बजेसँ चारि बजे तक भोँट करबैक शक्ति अछि ओ दू घन्टा आरो किए ने करा सकैए। फेर भेल जे भऽ सकैए ओइ सभ बुथपर भोँटे कम खसैत होइ। अपनो मन कहलक जे अखनसँ जेते भोँट खसत ओते तँ संख्यामे पतराइते जाएत, अन्त-अन्त होइत पतराइये जाएत। आने काज जकाँ लगले भऽ जाएत। आगू बढ़लौं तँ सुधनी दादीकेँ रस्तापर बैसल यत्र-कुत्र गरियबैत देखलिऐन। मनमे भेल जे आइ देशक महापर्वक शुभ दिन छी, तखन अस्सी बर्खक सुधनी दादी किए गारि पढ़ि अपनो अशुभ दिन आ सुननिहारोक अशुभ दिन बना रहली अछि? से नहि तँ पुछिऐ लइ छिऐन। मुदा लगले मनमे भेल रस्तापर छी जँ कहीं तइ बिच्चेमे

पुलिसक गाड़ी आबि गेल तँ अनेरे लफड़ामे पड़ि जाएब। मुदा मनमे खुटखुटी पकैड़िये लेलक जे भोरे-भोर सुधनी दादीकेँ की भऽ गेलैन जे एना गरियबै छथिन? आगू तकलौं तँ बीस-पचीस लग्गी हटल रूपनी भौजीकेँ देखलयैन। मन मानि गेल जे रूपनी भौजी लग सभ भाँज लगि जाएत। आगू बढ़ि, रूपनी भौजी लग पहुँचते बजलौं- "भौजी, दादी किए भोरे-भोर बताहि जकाँ रस्तापर बैस गरियबै छथिन?"

'बताहि' सुनि विचारमे विराम दैत रूपनी भौजी बजली-

"बौआ, दू हजार रूपैआ लेटरीन बनबैक नाओंपर आ पॅांच हजार घरक नाओंपर सिकिया नेता ठकि लेलकै, वएह भोरे नजैर पड़लैन कि गरियौनाइ शुरू केलखिन।"

'सिकिया नेता' बुझबे ने केलौं, ओना गाममे तीनटा सिकिया पहलमानो आ सिकिया खलिफो अछि मुदा सिकिया नेतो अछि से भौजीए मुहेँ सुनलौं। लगले मनमे ईहो भेल जे भरिसक सिक्की-मौनीक कारोबार दुआरे लोक 'सिकिया नेता' कहैत होइ। बजलौं- "भौजी, के सभ अपना गाममे 'सिकिया नेता' छैथ?"

एक्केबेर नकमाइन करैत भौजी बजली- "ओइ छौड़ा सभकेँ नइ देखै छिऐ जे मौगी जकाँ झोंटो बढ़ौने अछि आ तैपर सँ मोछो-दाढ़ी सभ दिन कटबैए आ मौगियेक सलवार-जम्फर जकाँ पइज्जमो आ कुरतो पहीरि लइए आ अँगने-अँगने भेल घुरैए।"

भौजीक बात आरो सुनैक मन होइ छल मुदा भोँटक दिन छी, आइयो तँ लोक बुझह जे हमरो गिनती सरकार बनबैमे भइये रहल अछि। बजलौं-

"भौजी, अनेरे ने सुधनी दादी बताहि भेल छैथ। ओ तँ भागमन्त छैथ जे एहनो ठक-फुसियाहक दुनियाँमे अस्सी बर्खक उमेरमे गरियेबो तँ करिते छैथ।"

हमर बात सुनि भौजी मुस्कियेली। मुदा बजली किछु ने। ❑

अगुताइ भेल

दस सालक पछाइत रघुनीबाबाक भाग्य जगलैन जे जीतन बाबा जकाँ एकठाम समटल परिवारसँ भेँट भेलैन। माने, पोता-पोती, बेटा-पुतोहुसँ एक घर-ऑंगनमे भेँट भेलैन। असगरेक दुनू परानीक जे घर-आँगन छेलैन ओ भरल-पुरल बुझि पड़लैन।

दस बजे भिनसुरका उखड़ाहाक समय, जेठ मासक अन्तिममे रघुनीबाबा फलवारीक सेवामे लागल मने-मन सोचि रहल छला- यएह ओ समय छी जे पाँतरमे पैसल पियासे बटोहीक प्राण लइए, यएह ओ समय छी जइमे पाइनिक तृष्णासँ मालो-जालक आ आनो-आन जीव-जन्तुक जान जाइए। यएह समय ने हमरो आ हमर जिनगियोक जान-प्राण लइत अछि।

फलवारीक हहरैत किछु गाछकेँ देखि रघुनीबाबाक मन मानि गेल छेलैन जे जेठक ताप सन्ताप बनि जरूर अहू सबहक जीवन लेबे करत..! रघुनीबाबाक हृदय सिहैर गेल छेलैन जे एकरे जीवन किए, ओ तँ फलदाता छी, फलित तँ अपन होइए, तँए अपनो जीवन ने लेब भेल। जहिना रस्ता-बाट वा घाट-बाट मरल वा मरनासन्नक जीवनक ओगरवाही करैत ओगरवाह अधमरू जकाँ भऽ जाइए तहिना दारीमक अधमरू गाछक छाहैरमे बैस अपन जीवन रघुनीबाबा देखि रहल छला।

दस बर्खक पोता, पेन्ट-शर्ट पहिरने बाबाक फलवारी देखए आएल। ओना, प्राइवेट शिक्षण संस्थानक विद्यार्थी वोआजी, जेकरा शिक्षक सिखा देने छेलखिन आकि अपन संस्थानक बेवहारसँ सीख चुकल छल से नइ बुझि रहल छी। मुदा एते तँ भेबे कएल जे वोआजी रघुनीबाबा लग पहुँचल। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, वोआजी, शब्द, अपना सभ बौआजी कहै छिऐ से नहि

वोआजी शब्द अछि। आजुक परिवेशमे सभ कथुक नस्ल जहिना बदैल रहल अछि तहिना भाषा-भाषिक सेहो भइये गेल अछि। अंगरेजीक शब्द 'वोआ' आ तइमे 'जी' लागल अछि तँए दोगला नस्ल भेने 'वोआजी' शब्द अछि।

जेठक दसबजिया रौद, दारीमक गाछक अधमरू छाहैरमे बैसल रघुनीबाबा अपन पाँच कट्ठाक मछपोसा पोखैरकेँ सेहो देखि रहल छला। छाती भरि मोट केचलीक संग चिलमिल इत्यादिक सुखल बोन-झाड़ पोखैरमे देखि रहल छला। जहिना खुट्टापर मरल गाए देखि पोसनिहार अपन दूधक आशा तोड़ि लइ छैथ, तहिना रघुनी बाबाकेँ सेहो टुटि रहल छैन।

पैछला शताब्दीक जे सातम-आठम दशकक बीचक समय, जे किसानक जागरणकाल छल। ओही समय रघुनीबाबा कौलेजक पढ़ाइ समाप्त करैत किसानी जिनगी जीबैक संकल्प लेलैन। जहिना दुनियाँक सभ कथुक गति-विधि अछि तहिना अपन जिनगीकेँ रघुनी बाबा शुरूहेसँ बनौने, दुनियाँक संग चलि आबि रहल छला। ओना, पोखरिक दशा देखि टुटल मनमे खुशीक हिलकोर सेहो उठिये रहल छेलैन जे जे छुटि कऽ टुटि गेल छल ओहो अनुकूल समय पेबैक अन्तिम सीमापर पहुँचिये रहल अछि।

वोआजी बाजल- "बाबा, बहुत गरमी पड़ि रहल अछि, आब काज करैक समय नहि अछि।"

ओना, आजुक परिवेशमे जे शिक्षण संस्थान सबहक रूतबा भऽ गेल अछि, ओ एहेन भऽ गेल अछि जे जेते नव-नव संस्था (शिक्षण संस्था) बढ़ि रहल अछि ओते नव-नव चालि-ढाइलिक संस्कारो आ मनुखोक निर्माण भइये रहल अछि। खाएर जे अछि, वोआजीकेँ तइसँ कोन मतलब। बेठेकान जिनगीकेँ ठेकान लगा जीबि लेब तेतबे मतलबक जरूरत जहिना सभकेँ अछि तहिना वोआजीकेँ सेहो छइ। ओना, रघुनीबाबाक मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे अपना सभ ने चूरा-दही-चिन्नी-अचार पबै छी आ बारह मासोक आ तेकर अधिया रीतुओ आ चारि मासक मौसमोक बारहमासा, छहमासा आ चरिमासा ओछाइनपर पड़ल-पड़ल गबिते छी, मुदा धरतीपर एहनो तँ देश अछिए जैठामक बासीकेँ जेहेन अपना सबहक जेठुआ रौद होइए तइसँ बेसिये रौद सालो भरि

होइ छै, जहिना माघक शीतलहरीक जाड़ होइए तेहेन जाड़सँ ऊपरेक जाड़ सालो भरि–माने तीन साए पेंइसैठो दिन होइए। तहूठाम जँ मनुक्ख जीवन धारण केनहि अछि, तइसँ नीक तँ अपना सभ, सभ दिनसँ रहिते आबि रहल छी। मुदा बाल बोध पोताकेँ एते भरिगर विचार देब उचित नहि। मनमे बेसी दाव पड़ि जाइत। तहूमे अखन तक भरिपोख गपो-सप्प ने भेल छेलैन, जे तहूसँ किछु अनुमान लगैबतैथ। तखन तँ भेल जे जइ हिसाबे वोआजी बाजल तइ हिसाबक उत्तर देबे ने नीक हएत। सोझ-साझ जोड़-घटाउकेँ अनेरे दसमलवमे टुकड़ी-टुकड़ी करब उचित नहि। ओ तँ अपन जीवन सूत्र छी, जेहेन जीवन तेहेन सूत्र। अखन तँ वोआजी अठमा क्लासक विद्यार्थी अछि। तहूमे जँ रघुनीबाबाक जुग-जमानाक रहैत तँ ओहिना धड़िया पहिर पीपरक गाछ लग गुल्ली-डण्टा खेलैत, नहि तँ फुटबॉल-भोलीबॉल खेलाइत रहैत। ओना, वोआजीकेँ देखि रघुनीबाबाक मनमे ईहो उठैत रहैन जे एहेन समयमे जीन्स पेन्ट पहिरने अछि आ आदेश..! मुदा पोता तँ पोते छी, तेसर पीढ़ीक निच्चाँकेँ तीन पीढ़ी ऊपर जेबाक छइ।

वोआजीक विचारमे विचारकेँ मिलबैत रघुनीबाबा बजला- “बौआ, काज तँ छोड़ि कऽ बैसले छी। तहूमे भगवान तेहेन फेरी लगा देलैन जे अधासँ बेसी फलक गाछ सुखि जाएत।”

बाबाक बात सुनि बाल-बोध वोआजीकेँ जिज्ञासा जगल, बाजल-

“बाबा! ओ पुबरिया खेत जे अछि तइमे की लगौने छी?”

माछ पोसैक पोखरिक गति देखि रघुनीबाबा मने-मन कुही हुअ लगला। महाभारतक अन्तिम दिनक लड़ाइ जकाँ बाबाक मन अपन जीवनक संघर्षमे ओझराए लगलैन। अनेको विचार घनघोर बरखा होइत कालक पाइनिक बुलबुला जकाँ मनमे उठए लगलैन। 1970 ई.मे कौलेजसँ निकललौं। जे किछु अध्ययन कौलेजमे भेल ओ स्वावलंबी जीवनक भेल। ओना, स्वावलंबी सेहो अनेको रंग-रूपक अछिए मुदा से सभ किछु ने। अपन पैत्रिक जमीन रघुनीबाबाकेँ अपनो छेलैन। किसानक जागरण काल छल...।

मिथिलांचलक किसान कोसी नहैरक मुख्य शाखा कोसी धारसँ जयनगर तक जुड़ि गेल देखि आशान्वित भइये गेल छल। इलाकासँ रौदी मेटा जाएत..,

नहैरक सस्ता पानि सालो भरि खेतीवारी लेल हएत.., जनकजीक मिथिला पुन: स्थापित हेबे करत...। तैसंग रंग-रंगक आशाक गीतो समाजमे गओले जाइ छल- ‘छिटा-कोदारि ले चल-चल...।’

ओही उठानिक समय रघुनीबाबा सेहो पाँच कट्ठा खेतकेँ पानिमे उसरैग देलैन। पोखैर खुनबैमे बेसी भीड़ो ने भेलैन, किएक तँ गामक बीचमे खेत छेलैन, लोककेँ माइटिक खगता छेलैहे, खुनि-खुनि लऽ गेल। जइसँ मछपोसा पोखैर बनि गेल।

रौदी तँ अपना ऐठामक बुझल अछिए जे 19म शताब्दीमे पचीस बेर भेल। औसतन चारि बर्खमे एकबेर। तहिना बाढ़िक उपद्रव सेहो इलाका-इलाकामे रहबे कएल। जइसँ सदिकाल किछु-ने-किछु उजार-पुजार होइते आबि रहल अछि। असुविधाक चलैत रघुनीबाबाकेँ कहियो समुचित बेवस्था नहि भऽ सकलैन जे समुचित उपजा पोखैरसँ पबितैथ। बरसात समय पानिसँ भरै छल, अखुनका जकाँ रंग-रंगक माछोक किस्म नहियेँ छल, अखाढ़क जीरा कातिक तक कते उमझत। पोखैर सुखि जाइ छेलैन। ओना, अपना बोरिंग रहैन, मुदा तेलबला दमकल रहने खर्च बेसी भऽ जाइ छेलैन, तँए सम्हारि नै पबै छला। मुदा बिजली भेने मन पुन: अपन जुआनीक संकल्प जगि चुकलैन अछि। मन मानि चुकल छैन जे अगुताइ भेल...।

हारि-जीतक बीच रघुनीबाबा छेलाहे, पोताकेँ कहलैन- “बौआ, आगू साल फेर अबिहह। पुरना रहुओ आ गाइयक दूधो-दही भरि मन खुएबह।”

वोआजी बाजल- “अच्छा चलू। जे भेल सेहो बड़बढ़ियाँ, जे नइ भेल सेहो बड़बढ़ियाँ। काल्हि-ले काल्हि विचारि लेब।”

पोताक विचारमे अपन विचार मिलिते रघुनीबाबाक मनमे तीन पीढ़ी ऊपरसँ तीन पीढ़ी निच्चाँ धरिक रूप-रेखा आबए लगलैन। एबो केना नहि करितैन, मनुक्ख मशीन नइ ने छी जे सालेमे सात-गुणा बढ़ि जाएब, मनुक्ख तँ मनुक्ख छी। हँ! तखन माल-जाल जकाँ सात पीढ़ीमे तँ नहि, मुदा मनुक्ख तीन पीढ़ीमे सोलहन्नी केचुआ जरूर छोड़ए। मुदा बाबाक मनमे ईहो शंका होएत रहैन जे नवतुरिया छौड़ासँ जँ मुँहमिलानी नइ राखब तँ अनेरे बकठाँइमे समय जाएत। विदा होइत बजला- “चलह।” ❑

अर्जुन रोग

जिनगीक अधडरेरपर पहुँचते सुचित भाइक मनमे ओहन रोगक प्रवेश सहे-सह हुअ लगलैन जेहेन घैलचीक घैल पानिक रस पीबैत-पीबैत रसा जाइए। ओना, बीतल चालीस बर्खक जिनगीमे केते रंगक रोग-सोग, वर-वियाधिसँ गुजैर चुकल छला, जे कहियो दवाइक गोली तँ कहियो इन्जेक्शन तँ कहियो सीरपक उपयोगसँ नीक होइत आएल छला, मुदा ऐ बेरक रोग छुटतैन कि नै छुटतैन से मन कबूले ने कऽ रहल छैन। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत डॉक्टर ऐठाम जेबाक विचार केलैन।

ओना, रोगीक भीड़ डॉक्टर ऐठाम, मुदा सुचित भायकेँ पहुँचते, एक नजैर डॉक्टर साहैब देखि लेलैन। देखिते मनमे हिलकोर उठलैन, कियो पानिक रोग पनिदूदूरसँ सहजे ग्रसित भऽ फुइल जाइए, तँ कियो पाण्डु रोगसँ पीड़ित भऽ पीड़ा जाइए, तँ कियो लोहुक रोगसँ लोहित भऽ जाइए, मुदा सुचित भायमे तइ सबहक कोनो लक्षण डॉक्टर नै देखलखिन।

रोगीक भीड़मे सुचित भाइक नम्बर नवम् रहैन। आठो रोगीकेँ निकलला पछाइत सुचित भाय आगूमे रखल स्टुलपर बैसला। ओजारक जाँच-पड़ताल करैसँ पहिने डॉक्टर साहैब रोगक प्रभावक जाँच शुरू करैत पुछलखिन–

"की सभ होइए?"

'की सभ होइए' सुनि सुचित भाय थकमका गेला। थकमकेला ऐ दुआरे जे अखन जे होइए से कहबैन आकि पहिने जे सभ रोग भेल छल सेहो कहैत कहिऐन। दुविधामे पड़ल सुचित भाइक मुँह बन्ने छेलैन। चुप देखि डॉक्टर साहैब ससरैत समय देखि झटैक बजला-

"किए मुँह बन्न केने छी। स्पष्ट बाजू। डॉक्टरसँ रोगक बात छिपौला आ

ओकीलसँ घटनाक बात छिपौलासँ नीक परिणामक आशा क्षीण भऽ जाइ छइ। तँए जे होइए खोलि कऽ बाजू।”

डॉक्टर साहैबक झटकार सुनि सुचित भाय बजला-

“ओना, अखन धरि केते बेर बीमारी भेल, मुदा ओइ सभसँ फराक ऐबेर बुझि पड़ैए।”

डॉक्टर–

“जे बुझि पड़ैए सएह ने पुछै छी?”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि मनकेँ मोड़ि सुचित भाय बजला-

“कोनो बात विचारए लगै छी आकि बिच्चेमे दोसर आबि ओहिना रस्ता काटि दइए जहिना चौमैतपर लोको, मालो-जाल आ गाड़ियो-सवारी एक दोसरक कटैए।”

अखन धरिक आन रोगीसँ फराक सुचित भाइक जवाब सुनि डॉक्टर साहैब खरियबैत बजला-

“देखू, रोगीक भीड़ अछि, समय निर्धारित अछि तँए जे किछु होइए, निसचित समैयक भीतर बाजू। बहुत प्रक्रिया होइ छै, तइ सभमे सेहो समय लगत। जहियासँ रोगक आक्रमण भेल, तहियासँ बाजू।”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि सुचित भाय पैछला बातकेँ छोड़ैत बजला-

“जइ दिनसँ परिवार सुचित रस्ता छोड़ि कुचित रस्ता दिस बढ़ल आ अपनो मनमे सुचित विचार कुचित दिस बढ़ल तही दिनसँ रोगक आक्रमण भेल।”

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब थकमकेला। केना नै थकमकैतैथ, जहिना कोनो धानक खेत आकि कोनो आन अन्नक खेतमे गोटे बागर भऽ आन सभसँ अपन लक्षण फराक देखबए लगैए तहिना आन रोगीसँ फराक सुचित भाय बुझि पड़लैन। मुदा, डॉक्टर साहैब ने बिगड़ला आ ने अधीर भेला, असथिरसँ पुछलखिन-

“परिवारमे की भेल आ अपने की भेल, दुनू फुटा-फुटा बाजू। पहिने

परिवारक बाजू।”

पहिने परिवारक पुछैक कारण भेलैन जे परिवार बेकतीक समूह छी आ परिवारेक समूह ने टोलो-गाम छी। तँए सोलहन्नी परिवारे भेल।

परिवार सुनि सुचित भाय थकमकेला। थकमकेला ई जे परिवारमे दू-दिसिया मुहोँ आ मुड़ियो होइ छइ। एकटा होइ छै ऊपरसँ बाबा-परबाबा आ दोसर होइ छै पोता-परपोतासँ। केमहरसँ बाजी? एक दिस कलुसैत क्रममे चलि रहल अछि आ दोसर कलशैक क्रममे। मेड़ बनि परिवार मेड़ियाएल अछि। परिवारक भीतर भाव-अभाव तँ ऐछे, तखन..?

मुदा जहिना पेटक आँत मोड़ाएल रहै छै, तहिना मोड़ि बजला-

“परिवारमे भैयारीक बीच फटेदारी हिस्सा-बखराक रोग जोर पकैड़ लेलक, जइसँ जेना चलैक जाँघे-घुट्टीक जोड़ जकड़ा गेल, तहिना भऽ गेल अछि। केना आगू ससरत?”

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब आनक ओझरी बुझि पल्ला झाड़ैत, अपनाकेँ छिपबैत– छिपबैक कारण भेलैन डॉक्टर तँ अपने छी, अपनो परिवारेमे रहै छी, केना परिवारक ओझरीकेँ आन लग बाजब जे नै बुझै छी आकि नै बुझल अछि। बजला-

“देखू, हम देहक रोगक डॉक्टर छी तँए देहक दर्द बाजू, देहीक नहि।”

डॉक्टर साहैबक पल्ला झाड़ब सुचित भाय नै बुझि पेला, बातपर सोलहन्नी बिसवास करैत बजला-

“डॉक्टर साहैब, सदिकाल मन चिड़ै-टिकुली जकाँ उड़ैत रहैए!”

डॉक्टर साहैब–

“मन तँ ओहिना चञ्चल अछि। तहूमे जखन चुल्हिपर खापैड़मे पड़त, तखन जँ तीसी जकाँ नै चनचनाएत तहन ओकर रसे की भेल। ओहो तँ सिनेह सँ सनाएले अछि...।”

डॉक्टर साहैबकेँ भँसैत देखि सुचित भाय बिच्चेमे बजला-

“दोसर बात कहए चाहै छी डॉक्टर साहैब?”

सुचित भाइक बोनाएल बात-दे सुनि डॉक्टर साहैब कहलखिन-

“बाजू।”

सह पाबि सुचित भाय बजला-

“डॉक्टर साहैब, बजैक ठेकान नै रहैए। कखनो किछु बजै छी आ कखनो किछु बजा जाइए। एक्के बातकेँ भरि दिनमे गिरगिट जकाँ कहियौ आकि पेरिसक सड़क जकाँ, क्षणे-क्षण छिनछिनाइत क्षणेमे छीन-अछीन भऽ जाइए!”

बिनु भीड़-भाड़बला चौमैतपर जहिना गाड़ी-सवारीक ड्राइवर जल्दीवाजीमे निकलए चाहैए तहिना निकैल डॉक्टर साहैब कहलखिन–

“ठीक अछि, आगू बरहू।”

डॉक्टर साहैबक शतरंजक सह पबिते सुचित भाय बिनु देरी केने बजला–

“क्षणे-क्षण जहिना बोली बदलैए तहिना क्षणे-क्षण तामसो दिन-रातिक आँखि मिचौनी जकाँ उठैत-बैसैत रहैए!”

जहिना गड़ूरकेँ भुजंग छन्द-शास्त्र भुजियबए लगल आ गड़ूर आँखि मुनि अङ्गेजए लगल तहिना डॉक्टर साहैब, सुचित भाइक बातकेँ अङ्गेजैत बजला–

“ठीक बात, ठीक बात, आगू बरहू।”

मुस्की दैत सुचित भाय आगू बजला-

“डॉक्टर साहैब की कहब मनक मैल आ की कहब बोलीक बाइन, आकि कहब तमाएल प्रीत-रीत, सदिकाल जी भरछैत रहैए। बुझियै ने पबै छिऐ जे खटगर दही सानल चूड़ामे आमक अँचारक केहेन रस अबै छै!”

आमक अँचार सुनिते डॉक्टर साहैबकेँ रौतका खेलहा अँचार मोन पड़लैन। जीहसँ ठोर पोछैत बजला- “बड़ बेस, बड़ बेस। आगू बरहू।”

डॉक्टर साहैबक हाव-भाव देखि सुचित भाइक मन आरो गदगदेलैन। गदगदाइत बजला- “डॉक्टर साहैब, जहियासँ रोगक उपैत भेल, तहियासँ पेटमे

खौंत फेकैत रहैए!”

‘खौंत’ शब्दकेँ अनठिया बुझि डॉक्टर साहैब बिच्चेमे टोकलखिन–

“की खौंत?”

सुचित भाय– “जेना बुझि पड़ैए जे पेटमे लहास उठैए। सदिकाल होइए जे जेना आगि पजरले रहैए!”

आगि सुनि डॉक्टर साहैब पुछलखिन–

“तइसँ की सभ होइए?”

“डॉक्टर साहैब यएह तँ असल रोग छी, आँखि चोन्हियाइत रहैए, दुनियाँमे भाए-बहिन केतौ देखबे ने करै छी, सभठाम वेश्ये-भरूआ देखै छी। केना रोग बदलत?”

सुचित भाइक प्रश्न सुनि डॉक्टर साहैब अपन पाशा बदलैत बजला- “जखन हमहूँ कौलेजमे पढ़ैत रही तखन अहिना भऽ गेल रहए।”

“केना छूटल?”

“पहाड़पर पहाड़ी बाबा छैथ, हुनके लग गेलौं ओ कहलैन जे ‘अर्जुन रोग’ भऽ गेल अछि। अखन महाभारत उनटबैक समय नै अछि। वएह कृष्णोषधिक एकटा जड़ी देलैन। सात दिन पीसि-पीसि पीलौं। साते दिन महिना, साल बुझि पड़ल। नीक भऽ गेलौं। अहूँ ओत्तै चलि जाउ। मधुसूदन धरमशालामे जनारदन रहै छैथ। ओतइ रहि दवाइ पीब, साते दिनमे नीक भऽ कऽ घूमब।” ❑

भौक

जेठ मासक एगारह बजे दिनमे, सबेर-सकाल, खा-पीब गाछीक मचानपर सुतैक खियालसँ पड़ले रही कि दछिनवरिया रस्ता दिससँ एक गोरे फाँढ़ बन्हने, माथपर तौनी उड़ियाइत लफड़ल अबैत रहैथ।

बीच गाछीमे पूबे-पच्छिमे मचान-खोपड़ी देने छिऐ। अपन ओछाइन-बिछाइन स्थाइये रूपेँ भरि आम–जाबे तक आमक ओगरबाहि चलैए–गाछीमे रखिते छी।

पूब सिरहाने बामा करे पड़बे कएल रही कि हुनका अबैत देखने रहिऐन। जहिना अपन-अपन जीवनानुकूल अपन-अपन विचारो पलिते अछि तहिना अपनौं पालनहि छी।

हुनका अबैत जे देखलयैन तँ अपने मनमे फुरि गेल- ‘एकटा ओ वेचारे छैथ जे घरवालीक कारणे रौद तपै छैथ आ अपने छी जे पत्नी सबेर-सकाल खुआ-पीआ आराम करए गाछी पठा दइ छैथ.! ई दीगर भेल जे रंग-रंगक आम खाइक लोभे ओ हमरा ओगरवाह बना ओगरवाहिये करैले किए ने आमक गाछी अरियाइत कऽ पठा दैत होइथ।

गामक दच्छिनवरिया बाघमे जेते ऊँचरस जमीन अछि–माने जेकरा चौमास कहै छिऐ, चौमास भेल जे खेत चारू मौसममे फसलसँ लहलहा सकैए। भलेँ ओइ चौमास चासक सदगैत अछि आकि दुरगैत ई विचारणीय प्रश्न अछि। आमक गाछी लगल अछि। सालमे एक बेर आम फड़ैए, सेहो सभ साल सोल्होअना फरबे करत, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जँ फड़बो करैए तँ मात्र एक-सँ-डेढ़ मास लोक खाइए। भलेँ अमृते फल आम किए ने हुअए, मुदा ओ नसीव केतेक होइए, माने केते दिन तक खाइ छी, ईहो विचारणीय अछिए।

खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहउ...।

ओ जखन दस लग्गाक बीच करीब पहुँचला तखन चिन्हलयैन जे दीनबन्धु काका छैथ।

दीनबन्धु काकाकेँ देखिते अपने उठि कऽ बैसैत बजलौं-

“काका, एना हकासल-पियासल केतए-सँ अबै छी?”

एक तँ जेठुआ रौदक देह तबधल रहैन तैपर सँ पत्नीक आदेश पूर्ति नहि भेल छेलैन, तइसँ मनो तबधल रहबे करैन। संजोग भेल, दीनबन्धु काका मचानपर आबि बैसला।

ओना, ताड़बला पंखा अपनो रखबे करै छी, मुदा कनी-कनी जे पुरबा हवा लहकी दैत रहै तइसँ पंखा झेलब छोड़ि, ओइ लहकीक आनन्द लइक विचार मनमे छेलए। मुदा रौदाएल दीनबन्धु कक्काक हालत देखि हाँइ-हाँइ पंखाक हवा दिअ लगलयैन।

करीब दस मिनटक पछाइत दीनबन्धु कक्काक मन थीर भेलैन। मन थीर होइते बजला-

“बड़का आफतमे पड़ि गेल छी..!”

‘बड़का आफत’ सुनि मन चौंकल। की आफत भऽ गेल छैन..! मुदा अपनो मन बजैसँ रोकि रहल छल। किए तँ कोनो आफत सुनब एक भेल आ ओइ आफतक निमरजना करब दोसर भेल। ऐठाम तँ अपन आमक गाछीक मचानपर बैसल छी, मुदा तैयो जी जाँति बजैक साहस केलौं। ‘जी जाँति’क माने भेल जे जे अपन शक्तिसँ हएत ओ करब आ जे नहि हएत ओ कहि देबैन जे हमरा बुत्ते नहि हएत। पुछलयैन-

“की आफतमे पड़ल छी काका?”

छगाएल मन दीनबन्धु कक्काक रहबे करैन, तँए प्रश्नक उत्तर की हेबा चाही तैपर सँ मन घुसकल रहबे करैन। अनधुन बजला- “एतेक हरानसँ रौदी भगत ऐठाम गेबो केलौं आ भेँटो ने भेल!”

दीनबन्धु कक्काक बातक कोनो भाँजे ने पेलौं जे की बजला?

भाँजपर चढ़बैत बजलौं- "कोन एहेन उताहुल भऽ गेल?"

मनक व्यग्रता बुझि आकि समैयक, दीनबन्धु कक्काक मन जेना व्यग्र-सँ-व्यग्रतम स्थितिमे पहुँच गेलैन। मुदा केतबो व्यग्र किए ने होनि, जाबे सहिट विचार–समतल मनोवृत्ति–नहि बनतैन ताबे कोनो विचारकेँ समुचित ढंगसँ बुझि केना पएब? तहूमे गाछीक मचानपर छी, जैठाम ओछाइन कएल मचान आ एकटा सुराहीमे पानि आ ऊपरमे स्टीलिया लोटा मात्र अछि। आन कोनो वस्तु ने खाइ-पीबैबला अछि आ ने आने कोनो जरूरतक पूर्ति लेल किछु अछि। ऐठाम कइये की सकै छी। तैयो बजलौं-

"काका, पानि पीब? आन चीज तँ अछि नहि, तमाकुल खाइ छी चुनौटी संगमे अछि।"

हमर बात दीनबन्धु काका सुनलैन आकि नइ सुनलैन से ओ जानैथ, मुदा मन जे व्यग्र रहैन तइसँ अपना बुझि पड़ल जे नीक जकाँ हमरा बातपर कनबाहि नइ देलैन। बजला-

"अखन ने तमाकुल खाइक मन होइए आ ने पानियेँ पीबैक!"

विचारक क्रममे अपनो विचार क्रमगत भऽ गेल छल। बजलौं-

"तखन?"

'तखन'क माने दीनबन्धु काकाकेँ जे लगल होनि मुदा बजला-

"देखहक जे भोरे–जलखैये केलाक पछाइत–रौदी भगत ऐठाम काजे गेल छेलौं से भेँटे ने भेल।"

पुछलयैन- "किए ने भेँट भेल गाममे रौदी नहि अछि की?"

दीनबन्धु काका बजला- "हँ! गामेमे नइ अछि। राम-रहीम बाबाक संगबे सभ कामाख्या जाइ छल तेकरे संग ओहो धऽ लेलक।"

रंग-रंगक लोक धरतीपर जहिना अछि तहिना रंग-रंगक बुधियो-विवेक, चालियो-ढालि आ किरियो-करम तँ अछिए। ने केकरो गाम-घरक ठौर-ठेकान अछि आ ने जाति-सम्प्रदायिक। सभ अपने ताले बेताल अछिए। सबहक विचार यएह छै जे सभसँ नीक हमहीं छी। बाँकी जेते अछि से सभ अधले अछि। भलेँ

ओ अपन जिनगियो आ अपन किरियो-कलाप बुझैत हुअए वा नहि...।

ओना, मनमे बहुत रास विचार जागल मुदा विचारक विचार करबोक तँ अपन-अपन जगह होइते छइ। ऐठाम तँ कोनो तेहेन जगहो नहियेँ देखि रहल छी जे दोसर बात पुछितिऐन। बजलौं-

“केहेन काज रौदी भगतसँ अछि काका?”

‘केहेन काज’ सुनिते दीनबन्धु कक्काक विचारक रंगक संग चेहरोक रंग एकाएक बदैल गेलैन। चेहरो आ विचारोक रंग तँ बदललैन मुदा मात्र ऊपरी! माने जहिना कोनो सुतल आदमीक सपना अदहापर अबिते नीन टुटि गेने अधडरेरेपर सपनाक रूप लटैक जाइए तहिना दीनबन्धु कक्काक सेहो छेलैन। बजला-

“पत्नीक मोबाइल हेरा गेलैन आकि चोरा लेलकैन से फरिछा कऽ तँ नै कहली, कहली हेन एतबे जे मोबाइल कियो लऽ लेलक अछि। तेकरे भाँज लगबए रौदी भगत लग गेल छेलौं।”

पत्नीक मोबाइल कियो लऽ लेलकैन, से रौदी भगत केना बुझत जे के लेलकैन? ओ ओइठाम छल तँ नहि जे देखलकैन? जँ देखलकैन तँ तही समय किए ने कहबो केलकैन आ छीन कऽ दइयो देलकैन..? ओना, मनमे ईहो उठि रहल छल जे एक तँ पत्नीक पीड़ामे दीनबन्धु काका अपने पाण्डु रोगी जकाँ पीअर भेल जा रहल छैथ, तैपर सँ जँ हमहूँ पियरका रंग घोरि कपारपर उझैल दिऐन सेहो नीक नहियेँ बुझि पड़ल। तँए एना कऽ बजलौं-

“रौदी भगत भाँज लगा देत?”

जेना केकरो उड़ैत आबि मच्छर आकि डाँस काटि लइ छै आ ओ छिलमिला उठैए तहिना छिलमिलाइत दीनबन्धु काका बजला-

“अपना इलाकामे ऐसँ बेसी जगताजोर भगत दोसर थोड़े अछि! रौदी ओहन भगत अछि जे आँतमे जँ कियो कोनो चोरेलहा चीज राखत तेकरा ओ ऊपरे-ऊपरसँ निकालि दैत।”

मन मानि गेल जे दीनबन्धु काका अखन एकभग्गू विचारक भऽ गेल छैथ

तँए विचारकेँ ओत्तै रोकि बजलौं- “मोबाइल हेरेलैन केतए?”

असियाएल दीनबन्धु काकाकेँ हमर बात सुनिते आरो आस लगि गेलैन। बजला- “चारिम दिन पत्नी स्त्रीगणक संग देवरिया गेल छेली। ओत्तै मोबाइल हरेलैन।”

पुछलयैन- “देवरिया किए गेल छेली?”

हलसल-फुलसल मने दीनबन्धु काका बजला- “हालेमे, दस-बारह दिन पहिने, एकटा स्त्रीगणकेँ सपनौती भेलैन।”

बिच्चेमे बजा गेल- “की सपनौती भेलैन?”

दीनबन्धु काका जोर दैत बजला- “एकरा सोल्होअना सपनौतीए नहि बुझह। हजारक हजार जनि-जातियो आ पुरुखक संग धियो-पुताक सभ रोग– माने दैही-दैविक सभटा दुख–मेटा गेल, छुटि गेल।”

ओना, अपनो काने सैकड़ो मुँहक बात सुननहि छेलौं जे एकटा स्त्रीगण अपन गहबरक, ओना गहबर पहिने नहि छल, पीपरक गाछक निच्चाँमे आठ दिन पहिने बनल छल, एक चुटकी माटि जेकरा दइए ओकरा देहमे जे कोनो बर-बेमारी रहै छै, ओ निठाही छुटि जाइ छइ। मुदा अपन मन एहेन-एहेन अन्धबिसवासू हवा-बिहाड़ि केतेको देखि-सुनि चुकल अछि तँए बिसवास किए करब। कहियो मोहुक गाछमे सटलासँ रोग-वियाधि भागल, तँ कहियो एक चुटकी माटिसँ भगौले गेल अछि। केते रोग-वियाधि भागल आ केते लोककेँ भगौलक ई तँ सभ जानियेँ रहल छी...। तैयो दीनबन्धु काका ओहन विचारक नहि छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। पहिलुका विचारक (अन्धविश्वासक) जेते छैथ ओइमे सँ किछु धक्का-पंजा लगने समहरबो केलाह अछि मुदा सभ सम्हैरिये गेला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। साँप जहिना साले-साल सौन मासमे केचुआ छोड़ि विष परिमार्जन करैए तहिना समैयक संग समयकर्त्ता नहि करैए सेहो तँ करिते अछि। खाएर जेतए जे अछि मुदा ऐठाम तँ दीनबन्धु कक्काक प्रतिष्ठा पत्नीक दाउपर चढ़ल छैन...। बजलौं-

“जखन रौदी भगत नइ भेटल, किए तँ कामाख्ये गेल अछि तखन कोनो ठेकान छै जे कहिया औत। कहाँ-दन ओम्हर–कामाख्या दिस–पुरुखकेँ स्त्रीगण

सभ भेड़ा-भेड़ी, गदहा-गदही बना-बना बाधमे खुट्टा-खुट्टीमे ठोकि भरि दिन चरबैए आ साँझूपहरमे घरपर आनि पुरुख बनबैए।”

हमर बात सुनि दीनबन्धु काकाकेँ मनमे की भेलैन से तँ ओ जानैथ मुदा जहिना केकरो मिरचाइक कड़ूपनसँ सुरसुरी अबै छै तहिना सुसुआइत बजला- “बौआ, घरवालीक बातपर ओते धियान नहियोँ दइतौं, मुदा तोंहू तँ देखिते छहक जे गाम-समाज हौ आकि आने-आन समाज, केकरो-मे-केकरो मेदहा नइ अछि। तैसंग बेटो-पुतोहुक किरदानी देखिते छहक जे मिथिलांचलक महामंत्र– माता-पिताक सेवा–क लेल बिहार सरकारकेँ कानून बनबए पड़ि रहल छइ। तखन तोहीं कहह जे की नीक हएत?”

‘की नीक हएत’ सुनि मन वौआए लगल, एक दिस जहिना नव-नव तकनीक एने जिनगी सुलभ भेल अछि जइसँ परिवारक चिनमार तक नव तकनीक पहुँच गेल अछि तँ तहिना दोसर दिस अन्धबिसवास सेहो सौनक साँप जकाँ केचुआ छोड़ि-छोड़ि नव-नव रंग चढ़बैत विचारसँ लऽ कऽ बेवहार धरिमे आबि घरो-आँगना पहुँच गेल अछि..! बजलौं-

“काका की करबै, दुनियेँ जखन भौकमे पड़ि भकुआ गेल अछि तखन तँ अहीमे ने सभ छी।”

दीनबन्धु काका बजला-

“कोनो उपाय?”

बजलौं-

“हँ काका, उपाय किए ने रहत! ओना नइ भेटत मोबाइल, ओकर नम्बर लऽ कऽ आगू बढ़ू। भगता-भुगतीक विचार मनसँ हटाउ।”

“सएह!”

दीनबन्धु कक्काक मुँहक ‘सएह’ सुनि हमरो मुहसँ निकलल-

“हँ तँ सएह ने नीक।” ❑

सिरमा

बङ्गालक शान्ति निकेतनसँ तीन दिन पहिनहि आएल बारह बर्खक मुरारी बाबा-जगदम्बक संग तेना घुलि-मिलि गेल जेना बाँसक पोर मिलल रहै छइ। ओना, गाममे बाबा छोड़ि दोसर कियो नहि, कारण रहै बङ्गालमे रहने जहिना घेरामे पड़ल गाछ ओतबे दूर कुदै-फनैए, तहिना मुरारीकेँ अनभुआर समाजक बीच गामे अनभुआर भऽ गेल रहइ। सात बर्खक पछाइत मुरारी माए-बापक संग गाम आएल। बाबा लेल देहक वस्त्रक संग ओछाइन-बिछाइन सेहो अनलक अछि। सिरमाक संग चद्दैर, जाजीमक मोटरी नेने मुरारी जगदम्ब लग पहुँच बाजल-

"बाबा, पुरनाकेँ बदैल दियौ, सभ किछु नवका अनलौं अछि।"

'पुरनाकेँ बदैल दियौ नवका अनलौं अछि।' सुनि जगदम्बक मन ठमकलैन। की नवका अनलौं? रूइयाक मोटका सूत बदैल मेही-चिक्कन सूतक वस्त्र आकि पेट्रोलियमक? मुदा एक तँ गामक अपरिचित बच्चा, दोसर दायित्वो तँ बनिते अछि जे जे नै बुझै छै ओ बुझा दिऐ। मुदा बुझबैयोक तँ दू रस्ता छै, एकटा छै जे मुँह-मुँह मुख बनबैत मुखधारा जकाँ बोहि जाइए, आ दोसर अपन इतिहास तँ सभ अपना पेटमे रखने अछि। तहूमे सिर तरक सिरमा...।

जगदम्ब बजला- "बाउ मुरारि, अपना जनैत तँ नीके जानि अनने छह तँए बदलबे करब, मुदा..?"

कहि माथ तरक सिरमा उठा भुण्डी छिटका देलखिन...।

पाँच तह झोराक खोलमे एक-एकटा फाटल चद्दैर, धोती, लुङ्गी, गमछा। पुरान लुङ्गीक झोरा...।

शान्ति निकेतनक विद्यार्थी मुरारी। धोती, चद्दैर, लुङ्गीकेँ तँ परेख गेल मुदा गमछा बेर भोतिया गेल। भोतिया ई गेल जे बङ्गलिया ढाठी छी आकि छपरिया..?

तैबीच मुरारीक मनमे उठि गेलै जे कनी गलती भेल। पहिने पुछि नै लेलिऐन। खाएर जे भेल मुदा सिरमा बदैल सिरमा लितैथ आकि खोलि कऽ आगूमे पसारि देलैन। जखन पसारि देलैन तँ बाल-बोधकेँ बोधबो ने करता। तँए चुप। पाँचो तह लुङ्गीक खोल खोलैत जगदम्ब बजला-

"बौआ, जे लुङ्गी फटि जाइए ओकर सिरमो खोल बना लइ छी आ रूमालो बना लइ छी, तँए पाँच तह अछि। सालमे एकबेर जुड़शीतल दिन खीचि कऽ खोलो सुखा लइ छी आ पेटमे जे देने छी तेकरो रौद लगा लइ छी।"

कोनो नव जगहपर सभ एके रंग नव थोड़े रहैए, जे पहिनेसँ जड़ि खोदिया नेने रहल ओ 'गुलियाएल नव' भेल आ जे नै खोदने रहल ओ 'छेहा नव' भेल। तीन दिनमे मुरारी जगदम्बक बीच केतेको रंगक सबाल-जवाब भऽ गेल छल, सिरमा खोलकेँ एकठाम सैंत चद्दैर उठबैत जगदम्ब बजला- "बौआ, जइ दिन ई चद्दैर कीनिलौं, ओही दिन एकटा केसमे सजा भऽ गेल, दुनूक बीच पहिल भेँट जहलेमे भेल। अखनो मोन अछि जे निरदोस चद्दैर संगे जहल कटलक, केना बिसैर जेबइ.!"

सिनेह भरल जगदम्बक ममत्व-प्रेम देखि मुरारी चौंकन हुअ लगल। हुअ ऐ दुआरे लगल जे फाटल-पुरानक संग जखन एहेन प्रेम छैन, तँ किए ने पुछिये लिऐन।

बाजल-

"बाबा, प्रेम कहलिऐ?"

उत्साहित होइत बाबा कहलखिन-

"हँ-हँ, जे सालमे गाहीक गाही कपड़ा कीनत ओ केकरासँ प्रेम करत, प्रेम तँ ओ भेल जे जिनगी भरि प्रेमसँ संगे रहल। जीबैतमे जे रहल से तँ रहबे कएल जे मुइला पछाइतो सिरमेमे रखने छी।"

मुरारीक पिता विश्वभारतीमे चतुर्थ श्रेणीक पदपर काज करै छैथ जइसँ मुरारीकेँ शिक्षा भेट रहल छइ। आन ठाम जकाँ नै जे शिक्षकक बेटा आ किरानी-चपरासीक बेटाक संस्कारपर चोट पड़ैत, किछु छी तँ आखिर विश्वभारती छी। दोसमुक्त संस्कार मुरारीक। बाजल-

“बाबा, जखन चद्दैरक इतिहास-बात कहिए देलिऐ तखन बँकियोहोक कहिये दियौ?”

मुरारीक सिनेह भरल शब्द सुनि जगदम्बक मन मोम जकाँ पिघलए लगलैन। हाथसँ धोती उठा पहिने फाट सबहक सीऐन गनलैन। सीऐन गनि बजला-

“बौआ, जहियेसँ धोती पहिरैमे नीक लागए लगल तहियेसँ फाटब शुरू भेल। मुदा बात दोसर दिस बहैक जाएत।”

बात ‘बहकब’ सुनि मुरारी बिच्चेमे बाजल-

“ईहो कीनने छिऐ?”

‘कीनब’ सुनिते जगदम्बकेँ मोन पड़लैन जहल, बजला-

“नहि, ई धोती जहलेमे देने रहए।”

‘जहलमे देने रहए’ सुनि मुरारीक मन भरैम गेल। भरैम ई गेल जे जहलोमे धोती दइ छइ! बाजल किछु ने। मुदा जगदम्ब बुझि गेला जे भरिसक जहलक बातमे भोतिया गेल।

बजला-

“बौआ, जिला भरिक लोक कोसी नहैर आ पैनबिजली-डैमक संग मैथिली भाषाक मांग करैत जहल गेलौं। पनरह दिन रखलक। सोल्हम दिन एक-एकटा धोती दऽ विदा केलक, वएह धोती छी।”

जगदम्बक पछुलका इतिहास मुरारीक मनकेँ झिकझोड़ि रहल छल। शिष्टाचारक लगाम ऐ तरहेँ कसि रहल छेलै जे किछु बाजि नै पाबि रहल छल। मुदा बिनु मुँह खोलनौं तँ अपन मनक फल नहियेँ खा सकै छी, तइले मुँह खोलि अपन विचारक बात बाजहि पड़त...।

ततमताइत मुरारी बाजल-

“बाबा, जखन चद्दैर-धोतीक बात कहिए देलिऐ तखन लुङ्गियोँ-गमछाक कहि दियौ।”

मुरारीक बात सुनि जगदम्बक मन आरो-पतालक पानि जकाँ शीतल-स्वच्छ-सुअदगर बनि गेलैन। लुङ्गी-गमछाकेँ संगे उठबैत बजला-

“बौआ, ईहो जहलेक छी। अपन कीनल लुङ्गीक सिरमाक खोल छी आ जहलक लुङ्गीकेँ पेटभर देने छिऐ।”

सिरमा खोलसँ लऽ कऽ पेटभर धरिक सिनेह सिक्त इतिहास सुनि मुरारी थकथकाइत बाजल-

“बाबा, नवका सिरमा नै लेबै?”

पोताक टुटल आस देखि जगदम्ब बजला- “हँ हौ, किए ने लेब! मुदा चारूक एक-एकटा कोण काटि नवकाक पेटमे भरि दहक, जाबे जीबैत रहब ताबे माथ टेकने रहब।” ❑

बुलन्दी

जहिना दिन-राति संग मिलि बारहो घन्टा संग रहि चौबीसो घन्टाक बारहो मौसमक बीच बसन्त गीत गबैत अछि तहिना अस्सी बर्खक रूपचन काका रूपौली गाममे, जे मध्य मिथिलाक बीचक गाम छी दिन-रातिक समय बितबै छैथ। बाढ़ि-रौदी, सुखार-दुखार आइये नहि, सभ दिनसँ अजन्मा सन आने गाम जकाँ रूपौलीमे सेहो रहबे कएल अछि। भुमकम, ठनका ई तँ कहियोकाल होइए, तँए बिसरबो नीक नहियेँ हएत मुदा अनिवार्य रूपमे नहियोँ मानल जा सकैए। 1934 इस्वीक जनवरी मासक तिलासकराँइतसँ एक दिन पूर्व, ओइ समयमे तँ भुमकमक नाप-नूप नहि छल, मुदा नोकसानक पैमाना तँ कएले जा सकैए। नेपालक काठमाण्डू, जे पहाड़क ऊपर बसल शहर छी, तेकरो छाती हिलेबे नइ तोड़बो केलक। तैसंग नेपालक तराईसँ लऽ कऽ बिहारक मुंगेर जिला तकक धरतीकेँ सेहो तेना हिलेलक जे घर-दुआर, गाछ-बिरीछ, जीव-जन्तु सभक अवघात भेल। ओहिना दोसर बेर भुमकम भेल 1988 इस्वीमे। ताधैर भुमकमक नाप-जोख आबि गेल छल। मुदा जहिना चौंतीस इस्वीक भुमकम तहिना अट्ठासी इस्वीक भुमकम जँ मानि लइ छी तँ औसतन पचास बर्खपर ओहन भुमकम हएब मानि लिअ। से मानि लिअ बितलाहा, माने भेलहामे, ऐगलाक कोनो गारंटी बेपारीक खलिया डिब्बा जकाँ नहियेँ देल जा सकैए। ई तँ भेल एक नम्बर भुमकक, तइसँ निच्चाँ नअ नम्बरक संख्या अछि। एक नम्बरसँ दोसर नम्बरक आक्रमण तीस हजार गुनाक अछि। खाएर, ओना ई भेल अपना ऐठामक भुमकमक घटना। एहेन-एहेन आफद-आसमानीकेँ मैथिल आ मैथिलानी मोजर कहिया देलैन जे अखनो देता कि देती।

अपना गतिये जहिना प्रकृति चलैए तहिना रूपौली गामो चलैए आ

रूपौली गामक रूपचन काका सेहो चलिते छैथ। बाढ़िक इलाका छीहे। कहब जे धारे-धार बाढ़ि अबैए आ चलि जाइए से नहि, मिथिलांचलकेँ पहियाकऽ उत्तरसँ शुरू करैए आ दच्छिनमे गंगामे जा ठेका दइए। वएह गंगा ने जीवनक वैतरणी सेहो पार करै छैथ। बुझले बात अछि जे सतासीक बाढ़िमे गंगासँ उत्तर झंझारपुर तकक पानिक एक लेभेल भऽ गेल रहइ। माने एकरंग जलो-दीप छल। ई तँ भेल बाढ़िक गति, मुदा तैसंग झाँट-बिहाड़ि सेहो अछिए। मौसमक हिसाबसँ भरि गरमी माने मार्चसँ नवम्बर तक दू रूपमे झाँट-बिहाड़ि अबैए। सुखारक समयमे सेहो आ बरसातक समयमे सेहो अबिते अछि। अप्पन रूपक ठेकान एकरो ने अछि, माने केते विराट रूपमे औत आकि साधारण रूपमे।

तँए कहब जे मैथिल ऐ सभसँ डेरा जेता से बात नहि अछि। मिथिला-भूमि अखनो वएह भूमि अछि जे परिवार नियोजन सन सरकारक योजनाकेँ कोनो मोजरे ने दइए, आ अप्पन जनसंख्याक बढ़वारिकेँ बे-लगाम घोड़ा जकाँ छोड़ि देने अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे मिथिलांचल मनुक्खेक उपजा टाक भूमि छी। मिथिलाक भूमि जीवनक विचारक संग जीवन-निर्माणक भूमि सेहो छीहे। बुझल बात अछिए जे जेते मन बढ़त तेते ओझरी जिनगीमे सेहो बढ़बे करत।

खाएर जे अछि, अपना ऐठाम झाँट-बिहाड़ि मात्र समुद्रेटा सँ नहि, धरतीसँ सेहो पैदा लइए। चैत-बैशाखक सूर्जक तापसँ तपित भऽ धरती बिर्ड़ो-बिहाड़िक सृजन सेहो करैए। जेकर फलाफल मिथिलांचलकेँ ई भेटैत रहल जे गामक-गाम चैत-बैशाख आ जेठक आगिमे स्वाहा भऽ जाइ छल आ लोक गाछ-बिरीछक संग-रौद-तापमे मासो-मास जीवन-यापन करै छला। तहिना वरसातक समयमे सेहो झाँट-बिहाड़िक प्रकोप होइए, तइले सभकेँ बुझले अछि जे हथियाक झाँट केहेन होइत आबि रहल अछि, गाम-गामक घर-दुआर खसि पड़ै छल आ लोक झाँट-बिहाड़िमे खुलल असमानक बीच मासो-मास दिन गुदस करै छला, अखनो करै छैथ। यएह छी मिथिलाक साधना भूमि जे दुनियाँमे केतौ ने अछि। ने मिथिलांचल जकाँ उपजाऊ भूमि अछि आ ने मौसम। अन्नसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक जे बढ़वारि मिथिलांचलमे अछि ओ आनठाम नइ अछि। अपना ऐठाम जहिना अन्नक खेती बारहो मास होइए,

तहिना तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक सेहो अछि। बरहमसिया जहिना फल अछि तहिना फूल सेहो अछिए।

प्रकृति जहिना रंग-रंगक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ चर-अचर निरमबैए तहिना मनुक्ख बुधिसँ लऽ कऽ बेवहार सेहो निरमैबते अछि। अही प्रक्रियाक बीच रूपौली गामक रूपचन काका छैथ। कौलेज छोड़ला पछाइत रूपचन कक्काक मन विचारसँ एते भरि गेलैन जे गामक बीच एकलव्य जकाँ अपन साधना भूमि निर्धारित केलैन। ओना, कौलेज तक रूपचन कक्काक जीवनमे कोनो नबपन नइ आएल छेलैन मुदा कौलेज-जीवनक पछाइत अपना जीवनकेँ तीन दिशामे विभाजित केलैन। पहिल अपन बेकतीगत जीवन केना पारिवारिक बनत आ पारिवारिक जीवन केना सामाजिक जीवन बनि पथ-प्रदर्शन करत।

मध्यम श्रेणीक किसान परिवारमे रूपचन कक्काक जन्म भेल छैन। शुरूमे पिताक बेवहार माने रूपचन कक्काक पिताक, ओते नीक नहि छेलैन, जेतेकक जरूरत परिवार-समाजमे अछि। मुदा बेटाकेँ माने रूपचन काकाकेँ, जखन कौलेजमे नाम लिखा देलखिन तखन विचारक संग बेवहारोमे बदलाव अनलैन। बदलाव अनैक परिस्थिति ई बनलैन जे बेटाकेँ घरसँ बाहर पढ़ैले पठाएब, एक समाजसँ दोसर समाजमे जाएत, केना मेल-मिलानसँ रहत इत्यादि। ओना, तैबीच जे संघर्ष रूपचन काकाकेँ भेलैन ओ नीक जकाँ एकपीढ़ीए-लोक बुझलकैन। जेना, मध्यवर्गीय किसान परिवारमे कौलेजक शिक्षा केतेक भारी छल, ओ पछिले पीढ़ीक लोक ने देख-बुझिकऽ वा भोगनिहारे ने नीक जकाँ जानि रहला अछि।

रूपचन काका अप्पन जीवनक शुरूआत किसानी कार्यसँ कए किसानक रूपमे जीवन स्थापित केलैन। दुनियाँ दिस ताकब छोड़ि अपना दिस नजैर निखारलैन। ओना, कौलेजक जीवनमे रूपचन काका एते सुनिकऽ सीख नेने छला जे भूत-सँ-भविष्य धरि केना मन दौड़ैए। मुदा अनुकूल स्थान नहि भेटने विचारकेँ विचारेक पौतीमे सैंतिकऽ रखने रहला।

जहिना कोनो घटना स्थलपर देखल घटना, महिनो-सालो बाद धक-दे मोन पड़ि जाइए तहिना रूपचन काकाकेँ अपन जीवनक दिशा धक-दे मोन

पड़लैन। किसानियोँक तँ विराट रूप अछिए। तइमे अपने बसि ब्रजवासी जकाँ केना जीब, यएह मूल प्रश्न छी।

हथिया नक्षत्र चलि रहल अछि। उत्तरवारि टोल कोबी बिआ आनए गेल रही। टोपर बान्हि मेघ लटकल छल, मुदा गामेक काज तँए किए परहेज करितौं। मेघे छी, बरैसियो सकैए आ नहियोँ बरैस सकैए। मुदा से भेल नहि, रूपचन कक्काक घर लग जखन गेलौं कि बरसाक बून तेज भेल। दौड़कऽ रूपचन कक्काक दरबज्जापर पहुँचलौं। ..रूपचन काका दरबज्जापर बैसल एकटा बाल्टीन आगूमे रखने रहैथ। जइ बाल्टीनमे दरबज्जाक चुबाठ-पानि टप-टप छतसँ खसैत रहइ। दरबज्जापर पहुँचते रूपचन काका बजला- “तूँ सभ ते नबका लोक भेलह। देहपर गमछा रखिते ने छह।”

कहि, रूपचन काका एकटा गमछा देह पोछेले, माने पानि जे पड़ल रहए तेकरा पोछैले, देलैन।

देह पोछि, गमछा राखि रूपचन काकाकेँ हियासए लगलौं। दू ढंगसँ हिसास करए लगलौं। पहिल जे रूपचन कक्काक प्रति अपन विचार केहेन अछि आ दोसर, गीता वा आध्यात्म सोच जकाँ आध्यात्म आ जीवनक सम्बन्ध रूपचन कक्काक केहेन छैन। तइ बीचमे रूपचन काका बजला- “चाह पीबह?”

ओना, अपना मनमे भेल जे कहि दिऐन ‘नइ पीब’, मुदा अपने मन रोकैत विचार देलक जे जँ कहीं रूपचन काका अपनो चाह नइ पीने होथि आ हमरा देखि अपनो चाहक आग्रह भेल होइन। तँए, समाजेक लोक जकाँ अपनो विचार भेल जे सभसँ भला चुपे रहब नीक। चुप तँ भऽ गेलौं मुदा मन दू-बटियामे फँसि गेल। एक दिस देखी जे रूपचन काका अपन जुआनीक तावमे बाजि रहला अछि, जुआनीक ताव भेल नित्य सृजनमान शक्ति जागब। आ दोसर दिस देखै छी जे अखन तक अपना रहैले दरबज्जो ने भेलैन अछि.! देखिते छी जे बाल्टीन आगूमे रखने छैथ, जइमे छप्परक पानि चुबि रहल छैन। कबीर बाबाक दू पाटनक बीच जकाँ अपनो मन फँसि गेल। तइ बिच्चेमे रूपचन काका बजला- “ऐ बेर हथिया नक्षत्र बीतला चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत।”

अपने यएह बुझै छी जे हथिया आ आसीनक दूर्गापूजा संगे-संग चलैए। तइ बीचमे रूपचन काका की बाजि देलैन। अबाक् भेल बैसल रहलौं। रूपचन

कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। हथिया नक्षत्रक चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत, तेकर खगता अखन कोन अछि। अखन तँ खगता अछि जे बरसाक पानि जे दरबज्जाक बीचमे चुबि रहल अछि तेकर निराकरणक। मन नइ मानलक। बजलौं- "काका, आब तँ अन्तिम समयमे पहुँच गेलौं। अखनो तक दरबज्जाक यएह गति अछि।"

हमर बात सुनि रूपचन काका मिसियो भरि मर्माहत नहि भेला। जखन मर्माहत नइ भेला तखन घबड़ाइक जरूरते की। जेना जीवन-पद्धतिक अनुकूल अपनाकेँ पेब रहल छला। गाम-समाजक रीते अछि जे एक-दोसर लग कानियोँ-कानि आ हँसियो-हँसि बजबे-भुकबे करैए। ऐठाम ई नइ बुझब जे महिलाटा कैँ कहै छिऐन आ पुरुखकेँ नहि कहै छिऐन। मौगमेहरा पुरुखोक संख्या कि कम अछि। तिनका जरूर कहै छिऐन। रूपचन काका बजला-

"बौआ, की कहबह। जिनगीक मूले जेना लोककेँ छुटल अछि, जइसँ जीवन सेहो दुरुह भइये गेल अछि। तखन तँ..?"

मने-मन विचारए लगलौं जे जिनगीक मूल की भेल? बजलौं- "से की काका?"

बुलन्दीसँ रूपचन काका बजला- "बौआ, जीवनक मूल आवश्यकतामे भोजन अछि। तोंही कहह जे केतेक लोककेँ उचित भोजन भेटैए। हम ई नइ कहै छिअ जे केतेकेँ उचितोसँ बेसी भेटैए। तैठाम जँ घरक छत नहियेँ बनल अछि तँ की हेतइ। जएह अछि तेहीसँ ने जिनगीक निमरजना करब।"

रूपचन कक्काक विचार तीर जकाँ हृदयकेँ बेध देलक। अनायास मुहसँ निकैल गेल- "हँ, से तँ अछिए।"

हँसैत रूपचन काका बजला- "बौआ, जहिना अपने बुलन्दीसँ जिनगी पार केलौं तहिना तोंहूँ बुलन्दीसँ जिनगी पार करह, यएह हमर शुभकामना छह।" ❑

अन्तिम आशा

छठि पाबनिक प्रात, बुझल बात अछिए जे सभ पाबैनमे टटका-टटकी प्रसाद वितरण होइए आ छठि पाबैनमे परात भने। एकर माने ई नइ बुझब जे किसानी जीवनमे पहिने श्रम आ धनक क्षय होइए पछाइत फल भेटैए। कृत्यानन्द काका असगरे दरबज्जापर बैसल मने-मन सुमैर रहल छला जे चौथाइ जीवनक आशापर पानि फेरा गेल।

एक बीघा जमीनबला किसान कृत्यानन्द काका छैथ। आब तँ जीवनक अन्तिम चरणमे पहुँच गेल छैथ, मुदा अपन जीवनक खुशहालीसँ अखनो खुश छथिए। हाइ स्कूलसँ आगाँ स्कुली शिक्षा नहि पाबि सकला। किसान परिवारमे जन्म भेलैन तँए किसानी जिनगीक अतिरिक्त ने कोनो जिनगीक प्रभाव मनमे पहुँचल छेलैन आ ने कोनो दोसर जीवन-धारणक धारणा उपकल छेलैन।

भिनसुरका आठ बजेक समय, जेठ मासक आठ बजे भिनसरो तीख वा तीखर लगए लगैए मुदा कातिक मास तँ से नहि छी। तहूमे शरद ॠतुक अन्तिम अवस्था सेहो छीहे, तँए समयमे ओहन मादक शक्तिक सृजन भइये रहल छल जे समयकेँ महमहौने अछिए।

पढ़ाइ छोड़ला पछाइत कृत्यानन्द काका अपन विचार व्यक्त करैत पिताकेँ कहलखिन-

“बाबू, अहाँ सभक जे किसानी जीवनक जे ढर्ड़ा छल ओ पुरान पड़ि गेल। देखिते छी जे अल्हुआ-सुथनी खा-खा दाइ-माइ सभ पाबनिक फलहार करै छेली से आब मिसरीक बच्चा खा-खा फलहार करै छैथ।”

मिसरीक बच्चाक माने जागेसर बाबा नीक जकाँ बुझि गेला जे ठोस तँ भेल मुदा छोट-छोट टुकड़ीमे, बुझि-सुझिकऽ बजला- “बौआ! खिस्सा-पिहानी

जीवन नइ छी, मुदा छीहो, जखन जीवन खिस्सा बनि पिहानी बनैए तखन जीवन आ जीवन गाथा भेल, नइ तँ जुअनकी फूसि नहि, बुढ़िया फूसि भेल.! जे मनमे छह ओ खोलि कऽ बाजह।”

पिताक विचारकेँ आदेश मानि कृत्यानन्द काका बजला-

“बाबू, आब हम जवान भेलौं तँए कोदारि पाड़ि खेतीक भार हमर रहल आ अहाँ ऐसँ हल्लुक काज गाय पोसब अछि, ओकर भार अपना जिम्मामे लिअ। जहिना राजा दिलीप गाइये पोसि दिलीप भेला, गाइयेक राजा खिरहरि भेला आ तहिना गाइये चरा कऽ कृष्णो भेला, अहूँ सएह करू।”

एक तँ समाजमे अदौसँ गाए- पोसाइत आबिये रहल अछि, तहूमे गाए एहेन पशुधन छीहे जे दूध सन अमृत फल पैदा करैए, तैसंग समाजक कोनो जाति वा सम्प्रदाय नहि छैथ, जिनका गाए पोसैक स्वतंत्रता नहि छैन। ई दीगर भेल जे एहनो लोक समाजमे छथिए जे भूमि छेदनकेँ प्रतवाए बुझै छैथ। ऐठाम ई नइ बुझब जे अपने हाथे जे पानियोँ कलपर सँ आनि नहि पीबै छैथ ओ केना गाए सम्हारि पौता। एहेन धारणा तँ दुनू बापूत माने जागेसर बाबा आ कृत्यानन्द कक्काक बनले छेलैन जे परिवार आगू बढ़ि खुशहाल हुअए। बिनु पढ़ल-लिखल रहितो जागेसर बाबाक मनमे ई उठबे केलैन जे खेतीक काज सम्हारैसँ गाइक सेवा धरि नमहर काज भइये जाइए जइसँ काजमे छिगरी-तान हएत। नव उत्साहसँ कृत्यानन्द कक्काक मन भरल रहैन, माने भेल जे जहिना देशक आजादीक दौड़मे राजनीतिक चेतनाक बाढ़ि आएल छल तहिना लाल बहादुर शास्त्रीजीक बहादुरीक आवाज किसानी जीवनपर पड़बे कएल। ओना, नमहर देश भारत अछिए। कहब जे दुनियाँक सभ देशसँ भारत देश नमहर अछि? नहि, भारतसँ नमहर-नमहर आरो सातटा देश अछि। मुदा भारतो ओहन देश अछिए जेकर आँट-पेट माने क्षेत्रफलो आ जनसंख्योक हिसाबे, पचासो देशक बरबैर सेहो अछिए। खाएर जे अछि ओ भौगोलिक बात भेल। ऐठाम कृत्यानन्द काका आ जागेसर बाबाक बीचक बात छी। अखन धरि जे परिवारक बीच विचारधारा अबैत रहल अछि ओ एहेन रहले अछि जे जहिना कोनो धार अपन उद्गम स्थानसँ निकैल आगू मुहेँ प्रवाहित होइत समाज रूपी समुद्रमे पहुँचैए

तहिना प्रवाहित होइते आबि रहल अछि।

एक तँ सोलह बर्खक नवयुवक कृत्यानन्द काका छला, तैपर हाइ स्कूलसँ मैट्रिक तकक शिक्षा सेहो पेब नेने रहैथ आ तइ ऊपर प्रधानमंत्री शास्त्रीजीक किसानक प्रति अगुआएल आवाज लाउडस्पीकरोसँ बेसी तेज ध्वनिमे, खेतक सर्वांगीण विकासक कार्यक्रम आगूक पाँतीमे ठाढ़ भेल। मुदा हजारो बर्खक गुलामीक मारल देशो आ किसानो तँ अछिए। ई नइ कहै छी जे जहिना जनकजी त्रेता युगमे अढ़ाइ बीतक लोहाक फाड़ लागल लकड़ीक हर जोतै छला तहिना एकैसमी शताब्दीमे सेहो वएह हर-हरखाराक बेवहार चलि रहल अछि।

बीघा भरि जमीनमे कृत्यानन्द कक्काक सात गोरेक परिवार अखन धरि हँसैत-खेलैत चलैत आबि रहल छैन। काल्हि तकि माने जाबत काल कृत्यानन्द काका बैंकक सहायतासँ बोरिंग नइ करौने छला, ताबत काल परिवारोमे अन्नक अभाव छेलैन, मुदा बोरिंग गड़ौला पछाइत एकाएक तीन-गुणा, चारि-गुणा अन्नक उपजमे बढ़ौतरी भेलैन। समयक संग कृत्यानन्द काका अन्नकेँ तीन रूपमे, माने खैहन, दलहन आ तेलहनकेँ, अपन परिवारक खर्चक हिसाबसँ कार्यक्रम बना काज अगुऔलैन। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, किछु तेलहन, सोल्होअना तेलहने छी आ किछु तेलहनक संग खैहन सेहो छी। अपना ऐठाम तीसीक तेलो बनैए आ तिसियौरी सेहो बनौल जाइए। तहिना सेरसों-तोड़ीक तेलक संग चटनी आ अँचारमे प्रयोग होइते अछि।

बीघा भरि जमीनमे कृत्यानन्द काकाकेँ बारह कट्ठा धनहर छैन, छअ कट्ठा चौमास आ दू कट्ठा घराड़ी। हाथमे पानि ऐने फसल-चक्रक अनुकूल समयकेँ पकैड़ कृत्यानन्द काका अपन किसानी परिवारक जीवन व्यतीत करैत आबि रहल छैथ। छअ कट्ठा चौमाससँ कृत्यानन्द काका जीवनक सभ आवश्यकता, भोजन छोड़ि, पूर्ति करै छैथ। विकासक दौड़मे गाम सेहो संग भेलैन, मुदा दूरगामी दृष्टिसँ अपनाकेँ नहि जोड़ि, अनधुन काज विकासक भेल। दू दर्जनसँ बेसी नदी खाली मधुबनीए जिलामे अछि, बाँकी मोतिहारीसँ किसनगंज तकक तँ बात छोड़ू। धारक बहाव, माने गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानी

इलाकाक ढलान उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ अछि, सुविधो अछिए जे धारक पथार लागल अछि, जइसँ बहाव भऽ सकैए, तैठाम आइ मिथिलांचलक मुख्य समस्या जल-जमाव भइये गेल अछि।

पता लागल, पता कि लागत उड़न्ती सुनलौं जे कृत्यानन्द काका नव किस्मक दमाइनसँ छठि पाबैनमे हाथ उठौलैन। नव किस्मक दमाइनिक नाम सुनि मन चटपटा गेल। बहुत दिनसँ उसनल दमाइन खेनौं ने छेलौं। तहूमे कृत्यानन्द कक्काक दमाइन भरल डालीक हाथ उठैक चर्च सुनने छेलौं। कोनो खुशामद-पैरवीक प्रश्ने नहि बुझि पड़ल। जहिना पोखैर खुनौनिहार, पोखरिक बीचमे जाइठ गाड़ि हाथ उठा मंत्र पढ़ै छैथ जे 'भाय लोकैन बीचमे सीमा गाड़ि सभकेँ अधिकार दइ छी जे धोबि-घट्टासँ असनान-घाट तक सभ अपन बुझि उपयोग करब.!' तहिना विचारक संग सम्बन्धो तहिना अछिए। विदा भेलौं।

दरबज्जापर असगरे बैसल कृत्यानन्द काका मने-मन जेना किछु सोचि रहल छला तहिना हुनकर चेहराक रंग बदलल-बदलल बुझि पड़ल। बजलौं-

"काकाजी, छठिक शुभकामनाक संग प्रणाम करै छी।"

जहिना अपने बजलौं तहिना कृत्यानन्द काका सेहो उत्तर दैत बजला-

"छठिक शुभकामना तोँरेटा छिअ कि हमरो छी, हमहूँ दइ छिअ।"

कृत्यानन्द कक्काक विचार सुनि मनमे उठल जे दमाइनिक चर्च उठा दिऐ। जखने चर्च उठाएब तखने काका दमाइन उसनैक आदेश परिवारमे दऽ देथिन। जाबे गप-सप्प करब ताबे ओहो तैयार भऽ जाएत, माने दमानियोँ अपन रूप बदैल अभोज्यसँ भोज्य बनि जाएत। मुदा लगले ईहो विश्वास मनमे जगि गेल जे अनेरे दमाइनिक चर्च हम नइ करब। ओ अपने एहेन पारखी छैथ जे परेखि बजता। सएह भेल, कृत्यानन्दे काका बजला-

"बौआ हराशंख, अपना सभ समुद्रक हराशंख जकाँ छी, छी तँ ओहने रंग-रूप बनौने मुदा पेटक गुद्दे पार भऽ गेल अछि।"

कृत्यानन्द कक्काक विचारक संग अपनो नजैर दौड़ल। नजैर दौड़ते बुझि पड़ल जे जहिना फोकला मखान वा शंख-सितुआ होइए जे पानिक ऊपरेमे

अलगल रहैए, जे बीछबोमे आसान तँ होइते अछि मुदा खेबाकाल ने बुझि पड़ैए जे बिनु गुद्देक फल अछि, तहिना अपनो सभ छी।..कृत्यानन्द कक्काक प्रवाहमे बजा गेल-

“हँ से तँ छीहे।”

एकाएक अपन पाशा बदैल कृत्यानन्द काका कहलैन-

“हराशंख, फोकलो मखानसँ बदतर अपना सभक पेटक गुद्दा भऽ गेल अछि.!”

मनमे भेल जे जँ कृत्यानन्द कक्काक विचारमे बोहिया जाएब तँ अपन मनक विचार मरि जाएत। तँए मोन पतियबैक खियालसँ बजलौं-

“काकाजी, पता चलल जे अपने नव रूप-रंगक दमाइन उपजौलौं हेन?”

अपना जनैत काकाकेँ इशारा देलिऐन मुदा ओ तँ अपने धुनिमे रहैथ। बजला-

“बौआ हरा, एहेन दिन कहिया औत जहिया पुतोहुक मुहेँ गारि सुनब।”

मनमे भेल जे एना किए कृत्यानन्द काका बजला, फेर मनमे भेल जे एहनो तँ सम्भव अछिए जे आजुक बेटाक गति-विधि देखि बाजल होइथ। किए तँ देखिते छी जे पिता बजै छैथ जे तूँ बेटा नइ छिऐँ, तँ बेटो ओही अलंकारमे कहिते छैन जे अहूँ बाप नइ छी। ..बजलौं-

“काकाजी, हरी अनन्त हरी कथा अनन्ता अछिए।”

विचारकेँ रोकैत कृत्यानन्द काका जेना ज्वारिक प्रवाहमे आबि गेला, तहिना बजला-

“हराशंख! अपना सभक अड़ुआ दमाइनिक कोनो गिनती रहल जे नवाचार हएत। दमाइन उपजल हेन। अपनेटा प्रसाद कि पेबह। पाँचटा दइये दइ छिअ नेने जा, सभ परिवार मिलि खैइहह।”

मन तिरपित भऽ गेल। तिरपित चेहरा देखि कृत्यानन्द काका बजला-

“बौआ, दू-तिहाइ जीवनक आशा टुटि गेल.!”

जिगेसा करैत पुछलयैन-

“से की काकाजी?”

अपन जीवन गाथा सुनबैत कृत्यानन्द काका बजला-

“बौआ, शरदक फसिल लगबैक सीमापर छठि पाबैन अछि। जैठाम चारू दिसक बाट खुजैए। आगूमे देखिते छहक जे जइ चौमासक बलेँ चालिसो बर्खसँ परिवार चलैत आबि रहल छल, आइ ओकर दू-तिहाइ पैदावार समाप्त भऽ गेल। माने तीन मौसमक जगह मात्र एक मौसमक खेती जोकर रहि गेल।”

ओना, अपना जनैत कृत्यानन्द काका सोझराएले शब्दमे बजला, मुदा अपने बुझैमे ओझरा गेलौं। कान्ही पटैक बजलौं- “जाए दियौ काका। दुनियाँ हरीफ अछि कि शरीफ से दुनियाँ जानए।”

❑❑❑
❑❑
❑

Notes



नाम : उमेश मण्डल, जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), माता-पिता : श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पत्नी : श्रीमती पुनम मण्डल, सन्तान : पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध-पीएच.डी.-'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर', 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ। प्रकाशित कृति : (1) निश्तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) 'मिथिलाक जीव-जन्तु', (4) 'मिथिलाक वनस्पति' आ (5) 'मिथिलाक जिनगी' (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रवन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि (2021), (19) समस्या सँ समाधान धरि (2022), (20) निर्विकल्प (2022), (21) अभ्यन्तर (2022), (22) जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (2022) तथा (23) कियो करए आप-ले माए-ले ने बाप-ले (2023)- विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन। (24) जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022), (25) अन्तर्ध्वनि (कथा संचयन, 2023)। संस्थापक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), योगदान : प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी। सम्मान/पुरस्कार : (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास-हैदराबादसँ) तथा (3) लोकचिन्तन विशिष्ठ सेवा सम्मान- 2022।

स्थायी पता: ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार। सम्प्रति : तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452, मो.न.: +91 9931654742, (2) +91 6200635563, ई-पत्र: *umeshberma@gmail.com*



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

मूल्य- 230/-

ISBN: 978-93-93135-37-7

